स्वतंत्रता दिवस विशेषांक
स्वराज के सोपान
#विभाजन की विभीषिका
खून के आंसू
बात भारत की
पाञ्चजन्य
₹50.00
21 अगस्त, 2022
भाद्रपद कृष्ण 10, वि.सं. 2079 युगाब्द 5124
प्रखर पत्रकारिता के 75 वर्ष
www.panchjanya.com
@epanchjanya
@epanchjanya

Incredible !ndia

You can't lose your way when there are no wrong turns. That was the feeling I got in Saputara. Here, every turn offered me new things. Like the meandering Ambika river. Each step brought me closer to nature. In the dense jungles of Dangs, I felt as if all the trees and shrubs were my old friends. The local tribesmen, their art, culture and traditions made me experience a harmony we city dwellers miss. Saputara gave me the solitude I always craved for, with just clouds and fine weather for company. How can one even think about leaving a place like this?

76वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

T.T.

bazaar
Family Fashion Store

ऑनलाईन खरीदे :
www.ttbazaar.com

Follow us on

INNER WEARS | CASUAL WEARS | SPORTS WEAR - MEN, WOMEN & KIDS

For Inquiries T.T. BRANDS LTD. : 878A, Master Prithvi Nath Marg, Karol Bagh, New Delhi - 110005
Tel. : +91 11 45060708, 1800 1035 681 (Toll Free Number) | E-mail : ttbrandglobal@gmail.com
Indian Brand 650 new styles for Selling in 65+ Countries Since 1964 & Registered Trade Mark owned by T.T. Industries, New Delhi-110005

भारतीय लोकतन्त्र सर्वकल्याणकारी बने।

बात भारत की

पाञ्चजन्य

वर्ष 74, अंक 11 भाद्रपद कृष्ण 10, वि.सं.- 2079
(युगाब्द 5124) 21 अगस्त, 2022
आईएसएसएन : 2349-2392

संपादक : हितेश शंकर
सहयोगी संपादक : संदीप त्रिपाठी
सहयोगी संपादक : आलोक गोस्वामी
समाचार संपादक : अरुण कुमार सिंह
मुख्य उपसंपादक : नागार्जुन
विशेष संवाददाता : अश्वनी मिश्र
आर्ट डायरेक्टर : शशि मोहन रावत
सीनियर ग्राफिक डिजाइनर : मुक्ता सूरमा कटारिया
कला संयोजन : मंगल सिंह नेगी
राजपाल सिंह रावत
जनार्दन सिन्हा

E-mail: editor.panchjanya@gmail.com
Website: www.panchjanya.com
सम्पादकीय विभाग दूरभाष: 8860874360

भारत प्रकाशन (दिल्ली) लिमिटेड

प्रबंध निदेशक : भारत भूषण अरोड़ा
मुख्य महाप्रबंधक : आशीष कुमार खरे (cgm@bpdl.in)
महाप्रबंधक : शोनाल गुप्ता (shonal.gupta@bpdl.in)
निदेशक एवं प्रकाशक : बिहारीलाल सिंघल

विज्ञापन विभाग
मोबाइल : 708-9696-708 ईमेल : advt@bpdl.in

प्रसार विभाग
एकल ग्राहक, सदस्यता अभियान
शिकायत और अन्य सहायता के लिए
मोबाइल : 814-3232-814 ईमेल : support@bpdl.in
एजेंसी, बुक स्टॉल्स, संस्थागत
मोबाइल : 972-7979-972
संपर्क समय : सोमवार से शनिवार
प्रातः 9 बजे से सायं 6 बजे

पंजीकृत कार्यालय
द एड्रेस, प्लाट नं.4 बी, डिस्ट्रिक सेंटर
मयूर विहार, फेस-1 एक्सटेंशन, दिल्ली-110091

गुजरात कार्यालय
बी-1, परव अपार्टमेंट, एल.जी. अस्पताल के पीछे, मुक्ति मैदान
मणिनगर, अमदाबाद-380008, गुजरात
संपर्क : 9426170862

लखनऊ
ब्यूरो चीफ : सुनील राय
कार्यालय: विश्व संवाद केन्द्र,भूतल, डॉ. एम.सी. पंत मार्ग
लोहिया पथ, जियामऊ, लखनऊ-226001

उत्तराखंड
ब्यूरो चीफ : दिनेश मानसेरा
कार्यालय: 163, पाल्म सिटी, रामपुर रोड
हल्द्वानी, उत्तराखंड-263139

गुवाहाटी
ब्यूरो चीफ :दिव्य कमल बारदोलई
कार्यालय: 1-ई, ब्लॉक-2, ग्रीनलैंड अपार्टमेंट, रुकमणीगांव
गुवाहाटी, असम-781002

बेंगलुरु ब्यूरो
कार्यालय:विक्रमा प्रकाशन,न.106, 5 मेन रोड
पोस्ट बाक्स न.1804, चामराज पेट,बेंगलुरु-560018

संवाददाता: केरल-तिरुअनंतपुरम-**प्रदीप कृष्णन**, दूरभाष-0471-2732476, बिहार-पटना-**संजीव कुमार**-दूरभाष-9430002248 झारखंड-रामगढ़-**रितेश कश्यप**-दूरभाष-9818256726

मुद्रक एवं प्रकाशक बिहारीलाल सिंघल द्वारा भारत प्रकाशन (दिल्ली) लिमिटेड के लिए द एड्रेस, प्लाट न.4बी, डिस्ट्रिक सेंटर, मयूर विहार, फेस-1 एक्सटेंशन, दिल्ली-110091 से प्रकाशित तथा एचटी मीडिया लिमिटेड, प्लाट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) 201306 से मुद्रित। संपादक : **हितेश शंकर**

इस अंक में

10 | आवरण कथा

आहट ▪ आह ▪ आंसू और अट्टहास

अंग्रेजी हुकूमत की कथित शह पर कांग्रेस के नेताओं द्वारा देश को बहकावे में रखा गया और अंततः अनगिनत लाशों पर भारत का बंटवारा हुआ। संघ के स्वयंसेवकों नेआहत हिन्दू समाज की हर प्रकार से सहायता की

06 | अपनी बात
हितेश शंकर

26 | विभाजन

खून के आंसू

स्वराज और स्वतंत्रता की लड़ाई 1857 से बहुत पहले शुरू हुई थी। अलग-अलग कालखंडों में देश के विभिन्न हिस्सों में ये संघर्ष औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध थे।

82 |

पाञ्चजन्य के सुधि पाठकों एवं विज्ञापनदाताओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

.in

अपनी डिजिटल पहचान बनाओ .IN के साथ

30 लाख से ज़्यादा लोगों का विश्वास

पाओ अंतर्राष्ट्रीय पहुँच .IN के साथ

डोमेन बुक करने
के लिए स्कैन करें

nixi.in | nixi@nixi.in

NIXI Empowering Netizens | .भारत

1947 : टीस और सीख

■ हितेश शंकर

भारत के विभाजन का पुनरावलोकन करें, तो कुछ ऐसे तथ्य सामने आते हैं, जिन्हें-

- कभी सामने नहीं आने दिया गया,
- सामने आए, तो दबा-छिपा दिया गया और
- फिर भी बात नहीं बनी, तो सिरे से खारिज ही कर दिया गया। यह तथ्य भारत भूमि के साथ, यहां की संस्कृति और यहां के धरतीपुत्र हिन्दुओं के साथ सदियों से होते आ रहे ऐसे अन्याय और अत्याचारों से संबंधित हैं, जिनकी चीख तक को उठने अवसर नहीं दिया गया।

अफगानिस्तान, पाकिस्तान और पहले पूर्वी पाकिस्तान और अब बांग्लादेश के इतिहास को देखें। सब भारत से ही अलग हुए हैं, और एक ही बहाने से अलग हुए हैं।

प्रथम दृष्टि में ही स्पष्ट हो जाता है कि भारत से विभाजन की मांग या उसकी मुहिम का सार केवल यह था कि इन्हें ऐसा निजाम चाहिए था, जिसमें हिंदुओं और हिंदू अतीत के नरसंहार को किसी समाज, व्यक्ति या कानून के प्रतिरोध का सामना न करना पड़े।

'सीधी कार्रवाई' का और क्या अर्थ था? अलग पाकिस्तान की मांग का मुख्य वैचारिक आधार क्या था?

भारतीय स्वतंत्रता की कहानी और अंततः मातृभूमि का विभाजन यानी हिन्दू नर संहार का वह सबसे बड़ा मुकदमा जिसकी सुनवाई तो छोड़िए, जिसे इतिहास में ठीक से दर्ज भी नहीं किया गया। पाञ्चजन्य का यह विशेषांक केवल वर्तमान की घटनाओं से प्रेरित नहीं है। यह 1947 में हुए विभाजन की विभीषिका में झांकने का अवसर देने वाली दरार है, जो न केवल अतीत का स्पष्ट झलक देती है, बल्कि इस निरंतर प्रक्रिया के बारे में चेतावनी भी देती है।

पाकिस्तान और बांग्लादेश वे देश हैं जिन्हें इस्लाम के नाम पर भारत से अलग किया गया है। और जो बात ऊपर कही गई है, उसे वह वहां पूरा कर चुके हैं। वहां हिंदू अल्पसंख्यकों और अन्य अल्पसंख्यकों के लिए शून्य अधिकार हैं; जीवन की, आत्मसम्मान की सुरक्षा शून्य है, और कट्टरपंथी इस्लाम के सतत दबाव में उनकी कोई सुनवाई तक नहीं है। उसे 'सामान्य' मानकर पेश किया जाता है।

पाञ्चजन्य का यह विशेषांक केवल वर्तमान की घटनाओं से प्रेरित नहीं है। यह 1947 में हुए विभाजन की विभीषिका में झांकने का अवसर देने वाली दरार है, जो न केवल अतीत की स्पष्ट झलक देती है, बल्कि इस निरंतर प्रक्रिया के बारे में चेतावनी भी देती है।

हाल की घटनाओं में से एक उदाहरण विभाजन के इस यथार्थ को समझने के लिए काफी है। भारत सरकार ने पड़ोसी देशों के लगभग 4300 उत्पीड़ित और वंचित हिंदुओं-सिखों को नागरिकता प्रदान करने का प्रावधान किया। वहां यह सारे लोग अमानवीय स्थितियों का सामना कर रहे हैं। पाकिस्तान में, उनके घरों और पूरी कॉलोनियों को जला दिया जाता है, उनकी महिलाओं और लड़कियों का सरे आम अपहरण और बलात्कार किया जाता है, सार्वजनिक रूप से अन्य अत्याचार किए जाते हैं, सरकार और जनता न केवल मूक-मुखर समर्थ देती है, बल्कि मुसलमानों को इन क्रूर कृत्यों के लिए अधिकृत कर देती है। पूर्व की दिशा में उनकी संपत्तियां छीन ली जाती हैं, उनकी दुकानें और व्यापारिक स्थान जला दिए जाते हैं, मंदिरों का विध्वंस और हत्या-बलात्कार तो पुनः सामान्य बात ही होती है। अफगानिस्तान में हिंदुओं और सिखों को संसद में एक भी सीट देने की आवश्यकता भी महसूस नहीं की जाती है। बाकी जो है, वह सभी के सामने है।

विडंबना का एक अन्य पहलू अंग्रेजों की, साम्राज्यवादियों की और उनके औरस-अनौरस उत्तराधिकारियों की भूमिका का है। आज भले ही पूरा भारतीय उपमहाद्वीप मुस्लिम आतंकवाद का सामना कर रहा हो, भले ही उसका असर पूरे विश्व को भोगना पड़ रहा हो, लेकिन इन साम्राज्यवादियों की करतूतों के कारण खुद इस उपमहाद्वीप की पीड़ा विश्व के चिंतन पटल से गायब नजर आती है। उल्टा उसे संरक्षण देने के लिए पश्चिम में हिन्दुओं के प्रति अनर्गल प्रलाप किया जाता है। आप देखें कि कश्मीर और रोहिंग्या जैसे तथाकथित और गैर-मुद्दे तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मुद्दे बन जाते हैं, लेकिन पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में हिंदुओं और सिखों के दुर्भाग्य को सिरे से दरकिनार कर दिया जाता है।

तीसरी विडंबना यह कि भारत के विभाजन की कथा किसी मानचित्र में परिवर्तन कर देने की कहानी नहीं है। यह भारत माता को चीरने की कहानी है। भारत माता की कल्पना करें, और फिर विचार करें कि किसने रची यह साजिश? इसमें कौन-कौन शामिल था? चीरने की इस प्रक्रिया में किसका रक्त बहा? किसने रक्त दिया? किसने घाव दिए? किसने दवा और सांत्वना दी? बहुत लंबी कहानी है।

और एक प्रश्न- अब कहां है वे लोग? घाव देने वाले भी और घाव झेलने वाले भी।

वास्तव में भारत का स्वाधीनता संग्राम अपने आपमें विश्व इतिहास का एक अप्रतिम युग है। इतने बलिदानों, इतने संघर्षों और इतने कुचक्रों की गाथा विश्व इतिहास में कहीं और नहीं मिलती। इस अप्रतिमता को लिपिबद्ध कर सकना, या किसी एक अंक अथवा पुस्तक में समेट सकना शायद संभव ही न हो। भारत को पुण्य भूमि यूं ही नहीं कहा जाता है। यहां का कण-कण उन बलिदानियों के रक्त से पुष्ट हुआ है, जो इस धरती को अपनी माता मानकर जिए और मरे। इस पुण्य भूमि को, उसमें निहित पुण्य को सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

यह पुस्तक इस आभास के पास ले जाने का एक बहुत संक्षिप्त प्रयास है। संक्षिप्त इसलिए, क्योंकि स्वतंत्रता की गाथा बहुत-बहुत विशाल है।

इसी कारण, यह इतिहास नहीं है। लेकिन इतिहास पर दृष्टिपात करने वाला विशेषांक है। इतिहास अपने

पाकिस्तान से हजारों लुटे-पिटे हिन्दू-सिख शरणार्थियों को लेकर आती थीं रेल गाड़िया। सैकड़ों रास्ते में ही कत्ल कर दिए जाते थे। (फाइल फोटो)

को दोहराता है, लेकिन सिर्फ उस स्थिति में, जब उसे देखा, समझा, पढ़ा और बताया न जाए।

1947 में हुए विभाजन की विभीषिका से लेकर 'विखंडनकारी ताकतों'(Breaking India Forces) का सामना करते हुए, भारत को जिस चुनौती का सामना करना पड़ता आ रहा है, ऐसा लगता है कि वह आज भी उसी तरह है, जैसे अतीत में थी। इस पुस्तक में इस पक्ष को काफी खोजबीन कर प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

आजादी के अमृत महोत्सव के इस दौर में भी जब हम 'विखंडनकारी शक्तियों' का सामना करते हैं, तो जाहिर है, हमसे इतिहास पढ़ने में, समझने में जरूर कोई चूक हुई होगी। हमें इतिहास से सीख लेने की भी आवश्यकता है, लेकिन इतिहास तो हम में से कई लोगों ने पढ़ा है, और कई पढ़ भी रहे हैं, लेकिन जब हम इस पढ़े और पढ़ाए गए इतिहास पर दृष्टि डालते हैं, तो वह एक किसी मसालेदार कहानी की तरह प्रतीत होता है, जिसका आदि-अंत सब बहुत कुछ पूर्वानुमानित होता है। ऐसे में इससे क्या सीख लें?

इतिहास तथ्यों पर होना चाहिए, कथानकों पर नहीं।

भारत विरोधियों की एक सबसे बड़ी शक्ति है- कथानकों को इतिहास बनाकर पेश करना। और भारत के स्वाधीनता आंदोलन के अति व्यापक इतिहास को अगर इसी प्रकार कथानकों के तौर पर पढ़ा-समझा जाता रहा, तो इससे उन्हीं का वही कार्य सिद्ध होता जाएगा, जो संभवतः 100 वर्षों से भी अधिक समय से चलता आ रहा है।

इसलिए हमने निर्णय लिया है कि इतिहास के उन पक्षों को, साक्ष्यों-प्रमाणों सहित सामने रखा जाए, जिन्हें आज तक दबाया जाता रहा है।

कार्य श्रम-साध्य है, लेकिन विभाजन की विभीषिका को समग्रता में समझने और पाठकों के सामने लाने के लिए आवश्यक है। यह अन्वेषण न तो पहली बार हो रहा है, न अंतिम बार। यह एक सतत प्रक्रिया है।

चैरेवति-चैरेवति.. यह विशेषांक इसी दिशा में एक कदम है

@hiteshshankar

TATA MOTORS
Connecting Aspirations

TATA

मनाएं आज़ादी का जश्न माइलेज चैंपियंस के संग

अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी टाटा मोटर्स डीलरशिप से संपर्क करें।

TATA MOTORS ILCV
MILEAGE
CHAMPION

TATA MOTORS
ILCV
INTERMEDIATE & LIGHT COMMERCIAL VEHICLE

विभाजन
आहट ▪ आह ▪ आंसू
और अट्टहास

दांव पर था क्या कुछ और कैसी थी विभाजन की बिसात?
निष्ठुरता से मुस्कुराते ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल के मन में क्या पल रहा था?
कैसे अंग्रेजी हुकूमत की कथित शह पर कांग्रेस के नेताओं द्वारा देश को बहकावे में रखा गया और अंततः अनगिनत लाशों पर भारत का बंटवारा हुआ।
किस प्रकार संघ के स्वयंसेवकों ने आहत हिन्दू समाज की हर प्रकार से सहायता की।

... पाञ्चजन्य का विशेष आयोजन

भारत का विभाजन... एक ऐसा घाव जो आज तक नहीं भरा है...उसे कभी भरने का प्रयास भी नहीं किया गया। उलटा इसे छिपाया और दबाया जाता रहा। लाखों लोगों के विस्थापन, हत्याओं और बलात्कारों की कहानियां गायब कर दी गईं।

विश्व में मानवीय त्रासदी की कई घटनाएं हुई हैं, लेकिन उन देशों ने अपने इतिहास को हमेशा याद रखा, उन टीस देती यादों को संग्रहालयों में सहेज कर रखा ताकि आने वाली पीढ़ियां उनसे सबक लें।

दूसरी ओर, हमारा देश है जहां इतिहास के इस सबसे भयावह घटनाक्रम को 'गंगा-जमुनी तहजीब' और 'भाईचारे' की सुहानी बातों में दबाने और भुलाने के प्रयास किए गए। कभी इस बात पर चर्चा नहीं हुई कि सहस्त्रों वर्ष पुरानी भारतीय सभ्यता की धरती के टुकड़े

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संकटकाल में हिंदू समाज की सेवा की, इसमें कोई संदेह नहीं है। ऐसे क्षेत्रों में जहां उनकी सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता थी। संघ के नवयुवकों ने स्त्रियों तथा बच्चों की रक्षा की।''

–पूज्य गुरुजी
द्वितीय सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

क्यों हुए? उस धरती के जहां पर कभी हमारे ऋषियों ने वेदों की ऋचाएं लिखी थीं, वहां पर सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति के चिन्ह तक क्यों मिटा दिए गए?

केंद्र की भाजपानीत सरकार ने बंटवारे के दिन अर्थात् 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाना आरंभ किया है। यह एक अवसर है कि हम मानवता और सभ्यता पर हुए इस अत्याचार को याद करें। इसके दोषियों की पहचान करें, आने वाली पीढ़ियों को उनके बारे में बताएं ताकि भारतीय इतिहास का वह भयावह कालखंड हमें दोबारा कभी देखना न पड़े।

13 मई, 1940 को ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल के भाषण की एक महत्वपूर्ण उक्ति थी-'ब्लड, टॉइल, टियर्स एंड स्वेट'। अर्थात् रक्त, कड़ा परिश्रम, अश्रु और स्वेद।

चर्चिल की उस बात का संदर्भ भले ही भिन्न रहा हो, किंतु सात वर्ष बाद यह सब लागू हुआ...भारत की धरती पर, पाकिस्तान के रूप में।

-भारत के विभाजन की पृष्ठभूमि किसने तैयार की?

-भारत के टुकड़े करके पाकिस्तान पैदा करने के लिए कौन उत्तरदायी था?

-मजहब के नाम पर एक ऐसा देश क्यों बनाया गया, जो जिहाद और आतंकवाद से ऊपर कभी उठ ही नहीं पाया, जिसका अस्तित्व ही भारत और भारतवासियों से घृणा पर आधारित है?

वैसे तो पाकिस्तान की बात आते ही सबसे पहले दो नाम ध्यान में आते हैं- मोहम्मद अली जिन्ना और ऑल इंडिया मुस्लिम लीग। लेकिन दोषियों की यह सूची इससे बहुत लंबी है। इनके बाद स्थान आता है विंस्टन चर्चिल का। यह व्यक्ति 1940 से 1945 तक ब्रिटेन का प्रधानमंत्री रहा। भारत के विभाजन की गहरी योजना बनाने वालों में विंस्टन चर्चिल सबसे महत्वपूर्ण था, इसमें कोई संदेह नहीं। शेष सारे चेहरे उसकी बिछाई शतरंज के मोहरे मात्र थे।

वर्ष 1943. भारत की स्वतंत्रता और विभाजन से मात्र चार वर्ष पहले... जून से सितंबर के बीच बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा था। इस अकाल में 30 लाख से अधिक लोगों के मारे जाने का अनुमान व्यक्त किया जाता है। ये लाखों लोग अन्न की कमी के कारण नहीं... बल्कि चर्चिल की नीतियों के कारण मारे गए थे...और इस

1943 में जून से सितम्बर के बीच, चर्चिल की नीतियों की वजह से बंगाल में पड़ा था जबरदस्त अकाल, मारे गए थे 30 लाख से ज्यादा लोग

बंटवारे के दौरान भारत की सीमा की ओर बढ़ता हिन्दुओं का एक जत्था फाइल फोटो

पर खुद चर्चिल का कहना था-

'अकाल हो या न हो, भारतीय लोग खरगोशों की तरह बच्चे पैदा करते हैं। यदि इतनी ही भुखमरी है तो महात्मा गांधी अभी तक जीवित कैसे हैं? अकाल में भारतीयों के लिए राहत भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है'। यह वक्तव्य उस समय के ब्रिटिश शासकों की घृणित नस्लभेदी मानसिकता की एक झलक मात्र है। मधुश्री मुखर्जी ने अपनी पुस्तक-'चर्चिल्स सीक्रेट वॉरः द ब्रिटिश एम्पायर एंड द रैवेजिंग ऑफ इंडिया ड्यूरिंग सेकिंड वर्ल्ड वॉर' में उक्त वक्तव्य को उद्घृत किया गया है।

एक बड़ी चाल की शुरुआत

द्वितीय विश्व युद्ध में, 5 मई, 1945 को जर्मनी ने आत्मसमर्पण कर दिया था। इसके तत्काल बाद विंस्टन चर्चिल ने 'भारत और हिंद महासागर में ब्रिटिश साम्राज्य के रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए दीर्घकालिक नीति' के मूल्यांकन का आदेश दिया। दो सप्ताह बाद चर्चिल को वह गुप्त रिपोर्ट पेश की गई, जिसमें अन्य प्रस्तावों के अतिरिक्त भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों में ब्रिटिश उपस्थिति की रणनीतिक आवश्यकता का उल्लेख किया गया था ताकि ब्रिटिश वायु सेना सोवियत संघ के सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बना सके। मध्य पूर्व के देशों पर भी दबदबा बनाए रखने के लिए ब्रिटेन को इसी क्षेत्र में अपने सैनिक अड्डे की आवश्यकता अनुभव हो रही थी। यह संयोग मात्र नहीं कि ठीक उसी भूभाग को तोड़कर अलग इस्लामी देश पाकिस्तान बनाया गया।

मुस्लिम लीग और उसके नेता जिन्ना को अंग्रेजों के इस प्रस्ताव

Ministry of Health
Government of India

स्वास्थ्य एवं
परिवार कल्याण मंत्रालय
MINISTRY OF
HEALTH AND
FAMILY WELFARE

BOOSTING HEALTHCARE IN GOA

"Every Indian deserves accessible, affordable and high quality healthcare. We have worked to ensure this through multi-dimensional intervention"

- Prime Minister, Narendra Modi

Prime Minister Narendra Modi
has ensured a transformation in healthcare

Ayushman Bharat PMJAY & Ayushman Bharat Health & Wellness Centers
brought scale while
AYUSMAN BHARAT – DIGITAL MISSION
brings technology to healthcare

YOUR HEALTH IS OUR MISSION!

STEMI GOA PROJECT

Achieving the objectives of **Ayushman Bharat**, the **'Hub-and-spoke'** model of **ST Elevation Myocardial Infarction (STEMI) – Goa project** was launched in 2018. Since then over **1.5 lakh** patients in Goa have been screened with over **4000 STEMI cases** detected and treated using the **Tricog STEMI care solution. STEMI Goa, first-of-its-kind in India**, has helped reduced premature mortality from non-communicable diseases by one-third with adopting advanced health practices and modern technology in the state.

'SWASTH MAHILA, SWASTH GOA'

20,000 + women screened

International cricketing icon **Yuvraj Singh's 'YouWeCan' Foundation** launched the **'Swasth Mahila, Swasth Goa'**, in partnership with **SBI foundation, Government of Goa.** Under this initiative **free breast cancer screening** for **1 lakh women** in the state, thereby ensuring that **50 per cent of the age-eligible female population** in the state is screened.

The screening is conducted at **35 Health Centres** across Goa along with **multiple outreach camps.** The main aim of the **'Swasth Mahila, Swasth Goa'** initiative is to provide a screening platform to the **entire female population** of Goa for **early detection of breast cancer** and **timely treatment.**

CHANGING DIABETES BAROMETER PROJECT

Goa became the **first Indian state** to have a **Diabetes Registry,** with the launch of **Changing Diabetes Barometer (CDB) programme** in association with the **Embassy of Denmark** and **Novo Nordisk Education Foundation** to curb diabetes in the state. Since its launch, this programme has been providing Goans **Insulin free of charge** and intensive **counselling on diabetes care** along a comprehensive range of therapies through health centres throughout the state.

The Government also launched **Mobile Diabetes Vans** and **Diabetes Foot Care Clinics** at both Districts hospitals, North and South and **GMC, Bambolim. 600 doctors and nurses** and over **1200 Anganwadi workers** were trained on diabetes under this programme.

‘अकाल हो या न हो, भारतीय लोग खरगोशों की तरह बच्चे पैदा करते हैं। यदि इतनी ही भुखमरी है तो महात्मा गांधी अभी तक जीवित कैसे हैं? अकाल में भारतीयों के लिए राहत भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है’।

– विंस्टन चर्चिल

(1943 में बंगाल के भीषण ‘अकाल’ को लेकर ब्रिटिश प्रधानमंत्री का कथन)

1945 में 5 मई को जर्मनी ने किया था आत्मसमर्पण। इसके फौरन बाद चर्चिल ने दिया था ‘भारत और हिंद महासागर में ब्रिटिश साम्राज्य के रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए दीर्घकालिक नीति’ के मूल्यांकन का आदेश

वेलबे वैलेस हूपर द्वार खींचा गया बंगाल के अकाल का एक चित्र।

साभार : विकीमीडिया, कॉमन्सवेलकम लाइब्रेरी

पर कोई आपत्ति नहीं थी, उन्हें इस साम्राज्यवादी योजना में अपना हित दिखाई दे रहा था। ब्रिटेन को भी पाकिस्तान चाहिए था, जो भारत का चिर शत्रु बना रहे और भारत सदियों तक उसके साथ ही उलझा रहे। यह तथ्य भारतीय धर्म और संस्कृति के विरुद्ध एक अंतरराष्ट्रीय गठजोड़ की ओर भी संकेत करता है।

भारत विखंडन की चर्चिल की उसी योजना के कार्यान्वयन के लिए लॉर्ड वेवेल को वायसरॉय बनाकर भेजा गया। फिर सब कुछ वैसे-वैसे हुआ जैसी-जैसी योजना चर्चिल ने तैयार की थी। मुस्लिम लीग पाकिस्तान के लिए अड़ी रही और कांग्रेस ने दबाव के आगे घुटने टेक दिए। यदि कहीं से थोड़ा-बहुत प्रतिरोध हुआ तो वे सुभाषचंद्र बोस थे। वेवेल ने स्वयं स्वीकार किया है कि 'नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज के कारण ब्रिटेन अब भारत में अपने भरोसेमंद लोगों पर भी विश्वास नहीं कर पा रहा है।'

भारत की स्वतंत्रता से ठीक पहले ब्रिटेन में हुए चुनाव में विंस्टन चर्चिल की हार हुई। लेकिन तब तक सहस्रों वर्ष प्राचीन भारतीय सभ्यता की पवित्र भूमि पर एक कृत्रिम रेखा खींची जा चुकी थी। जून 1947 को लंदन में भारत का एक हिस्सा अलग करने की घोषणा की गई, जिसे इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान कहा गया। वह 1956 तक वह सिर्फ डोमिनियन स्टेट था और अमेरिका ने वहां अपना सैनिक अड्डा बनाया। आज हम पाकिस्तान की जो भूमिका देखते हैं वह वही है जो ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने तभी तय कर दी थी।

ब्रिटेन की रणनीति

पाकिस्तान निर्माण अर्थात् भारत विभाजन ब्रिटेन की सबसे महत्वपूर्ण रणनीति का अंग था। औपनिवेशिक राज्य के हाथ से निकलने के बाद ब्रिटेन को लूट के नए तरीके चाहिए थे। ब्रिटेन के सैन्य योजनाकारों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि उन्हें उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत और बलूचिस्तान में एक सैनिक अड्डे की आवश्यकता है। इससे उन्हें ईरान पर नियंत्रण बनाए रखने में सहायता मिलनी थी, जहां के तेल भंडारों पर ब्रिटिश पेट्रोलियम की पूर्ववर्ती, एंग्लो-परशियन ऑयल कंपनी का स्वामित्व था।

इराक में भी ब्रिटिश कठपुतली राजशाही थी, जिसने इराकी पेट्रोलियम कंपनी को ब्रिटिश नियंत्रण में दे दिया था। यही स्थिति कुवैत, बहरीन और कतर और ट्रुशियल स्टेट्स की थी। ट्रुशियल स्टेट्स को ही आज संयुक्त अरब अमीरात या यूएई कहा जाता है।

हिन्दू-सिख शरणार्थी जत्थों को चुन-चुनकर निशाना बना रहे थे मुसलमान। रेलवे पटरी पर जहां-तहां बिखरे थे शव, जिन्हें कुत्ते नोंच रहे थे

चर्चिल को पेश की गई एक गुप्त रिपोर्ट में भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों में ब्रिटिश उपस्थिति की रणनीतिक आवश्यकता का उल्लेख था। मध्य पूर्व के देशों पर भी दबदबा बनाए रखने के लिए ब्रिटेन को इसी क्षेत्र में अपने सैनिक अड्डे की आवश्यकता थी। यह संयोग नहीं कि ठीक उसी भूभाग को काटकर पाकिस्तान बनाया गया।

इन देशों में तेल के भंडार मिलने की संभावना थी इसलिए उन पर ब्रिटेन की गिद्धदृष्टि थी। यह भी एक रहस्य है कि इस्लाम के नाम पर बन रहे पाकिस्तान के नेताओं को इस बात पर कोई आपत्ति नहीं थी कि उनकी धरती का प्रयोग मध्य-पूर्व के अन्य इस्लामी देशों के विरुद्ध किया जाए।

ब्रिटेन के लिए समस्या यह थी कि उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत और बलूचिस्तान भारत में रहना चाहते थे। उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत ने वर्ष 1937 और 1946, दोनों चुनावों में कांग्रेस की सरकारें चुनी थीं। दिसंबर 1946 में उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत के प्रतिनिधिमंडल ने भारत की संविधान सभा में प्रवेश किया था, जबकि मुस्लिम लीग ने इसका बहिष्कार किया था।

उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत के भारत प्रेम का कांटा निकालने के लिए अंग्रेजों ने नई चाल चली। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू से सहायता मांगी और उनके माध्यम से वे उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत में जनमत संग्रह के लिए सहमति बनवा ली। विभाजन का विरोध करने वाले हमारे नेता न केवल उसके लिए तैयार हो गए, बल्कि एक तरह से उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत क्षेत्र को पाकिस्तान के हवाले करने पर भी सहमत थे। सीमांत गांधी गफ्फार खान के खुदाई खिदमतगारों ने इसका कड़ा विरोध किया था। लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हुई। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच खींची गई डूरंड रेखा के दोनों तरफ के पठान आज भी विभाजन की विभीषिका झेल रहे हैं।

एक ओर औपनिवेशिक शक्तियों के दांवपेंच, उनकी

1946 में दिसम्बर में उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत के प्रतिनिधिमंडल ने प्रवेश किया था भारत की संविधान सभा में, जबकि मुस्लिम लीग ने किया था इसका बहिष्कार

भारत की ओर बढ़ते हुए राह में मिले एक गुरुद्वारे में भोजन करते शरणार्थी

कठपुतली बने नेता और दूसरी ओर वह मानवीय त्रासदी जिसका दूसरा कोई उदाहरण हाल के इतिहास में नहीं मिलता।

विशेष रूप से वर्ष 1946 से 1947 के अंत तक भारत का इतिहास अभूतपूर्व विस्थापन और क्रूरतम नरसंहार का गवाह है। यह मुस्लिम लीग द्वारा उभारे गए जिहादी उन्माद और उसके आगे हमारे राजनीतिक नेतृत्व के समर्पण का इतिहास है।

विभाजन का निर्णय इतना अचानक और अप्रत्याशित था कि किसी को भी सोचने-समझने का अवसर नहीं मिला। अंतिम समय तक कांग्रेस के नेता, आश्वासन देते रहे कि मुस्लिम लीग की मांग किसी कीमत पर स्वीकार नहीं की जाएगी। गांधी जी भी जनता को आश्वासन दे रहे थे कि 'देश का विभाजन मेरी लाश पर होगा'। परंतु एकाएक 3 जून, 1947 को विभाजन की घोषणा कर दी गई। उस पर हमारे नेताओं ने अपनी स्वीकृति की मुहर भी लगा दी। मात्र 72 दिन बाद 15 अगस्त को इस निर्णय के क्रियान्वयन के लिए भी वे सहमत हो गए। देश की बहुसंख्यक आबादी की सहमति-असहमति की कोई चिंता नहीं की गई।

विभाजन का निर्णय इतना अचानक हुआ कि इतने कम समय में विभाजन के विरोध में कोई जनांदोलन छेड़ना भी संभव नहीं था। लोगों को तो अपनी जान बचाने की पड़ी थी। कोई भी विभाजन के विरुद्ध खड़े होने की स्थिति में नहीं था। मानवता के इतिहास के इस अभूतपूर्व सर्वनाश और विस्थापन का शिकार बन रहे लोगों से प्रतिरोध की अपेक्षा भी व्यर्थ ही थी।

हजारों लोगों ने जान बचाने की अफरातफरी में लाहौर आदि स्थानों से भारत जाने के लिए जो गाड़ी मिली, वही पकड़ ली

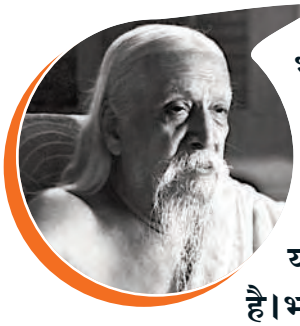

देर चाहे कितनी भी हो, पाकिस्तान का विघटन और भारत में विलय एक दिन तय है। यही ईश्वर की इच्छा है। भारत फिर से अखंड होगा और मैं उसे स्पष्ट रूप से देख रहा हूं।''

– महर्षि अरविंद

...और निकल पड़े काफिले

15 अगस्त, 1947 के दिन जब दिल्ली समेत पूरा देश स्वतंत्रता का उत्सव मना रहा था, ठीक उसी समय हजारों काफिले लाहौर, मुल्तान, लायलपुर और स्यालकोट जैसे शहरों से भारत की ओर बढ़ रहे थे। उनके लिए इस उत्सव का कोई अर्थ नहीं था। उनके लिए तो पग-पग पर मौत का साया मंडरा रहा था। रास्ते में क्या हो जाए, कोई कुछ नहीं जानता था। मोहल्ले के मोहल्ले धू-धू कर जल रहे थे। जिधर देखो-शव ही शव। अनगिनत महिलाओं का अपहरण हुआ, सामूहिक बलात्कार हुए, उन्हें लूट के माल की तरह नीलाम किया गया। सधवाएं विधवा हो रही थीं, बच्चे अनाथ हो रहे थे।

रेलगाड़ियों से चलना भी सुरक्षित नहीं था। उन्हें कहीं भी रास्ते में रोककर हथियारबंद जिहादी जत्थे नरसंहार शुरू कर देते थे। यात्रियों की जगह वे लाशों से भरी रेलगाड़ियां इधर भेज रहे थे।

1947 में 15 अगस्त को जब पूरा भारत मना रहा था स्वतंत्रता का उत्सव, ठीक उसी समय हजारों काफिले भारत की ओर बढ़ रहे थे लाहौर, मुल्तान, लायलपुर और स्यालकोट से

ICS
ISO 9001 : 2015 Certified
Coaching Centre
सरकारी नौकरी

Educating Youth Empowering India

Parimal Kumar
(Director ICS)

शिक्षा के दम पर ही कोई राष्ट्र तरक्की करता है,
कोई समाज आगे बढ़ता है,
कोई व्यक्ति उन्नति के स्तर को छूता है।
इसलिए पढ़ो और हर किसी को पढ़ाओ।

पुरुखों की जमीन छोड़ने का दर्द बहुत था किंतु इसमें बड़ा था जीवन पर मंडराता खतरा

अधिकांश स्थानों पर हमलावर कोई बाहरी नहीं, बल्कि अपने ही परिचित नगरवासी और मित्र थे। ये वे लोग थे जो मानवता और दोस्ती की कसमें खाते थे। लेकिन अवसर पाते ही उन्होंने पीठ में छुरा घोंपा।

हिंदू और सिख बड़ी संख्या में इस विभीषिका का शिकार बने। लाखों लोगों को अपने पुरखों और देवताओं की पुण्यभूमि को छोड़ उस बाकी बचे भूभाग की ओर चल देना पड़ा जिसे 'स्वतंत्र भारत' कहा जा रहा था। लोगों के पास भागने के अतिरिक्त कोई चारा भी नहीं था। लेकिन जहां तक संभव हुआ, लोगों ने अपने स्तर पर प्रतिरोध किया। हमारे राजनेताओं ने भले ही अत्याचारों के आगे हथियार डाल दिए थे, पर जनता ने उनका अनुकरण नहीं किया।

अकाली नेता मास्टर तारा सिंह ने लाहौर में असेंबली भवन पर लहराए लीगी झंडे को फाड़ दिया और म्यान से तलवार निकालकर प्रण किया कि वे पाकिस्तान कभी नहीं बनने देंगे। इससे पूरा सिख समुदाय, विशेष रूप से जिहादियों का कोपभाजन बना। तब लीगी नेताओं ने हिंदुओं और सिखों में दरार डालने के लिए कई चालें चलीं लेकिन वे सफल नहीं हो सके। उन दिनों प्रायः सभी गुरुद्वारे समाज की रक्षा के दुर्ग बन गए थे, जहां पर पूरा एकजुट हिंदू समाज हत्यारी भीड़ से अपनी और अपने परिवारों की रक्षा करता था।

भारत के बंटवारे पर मुहर लगाकर कांग्रेस के बड़े नेता दिल्ली की राजनीति में व्यस्त हो गए। उन्होंने हजारों-लाखों लोगों को उस भूमि पर लाचार छोड़ दिया, जिसे पाकिस्तान का नाम दे दिया गया था। वहां उनकी सहायता करने वाला कोई नहीं था।

मदद को आगे आए संघ स्वयंसेवक

हरियाणा सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ पर आओ मिलकर गर्व से फहराएं

हर घर तिरंगा

नज़दीक के हर राशन डिपो पर झण्डा खरीद हेतु उपलब्ध है

आइये, इस महत्वपूर्ण अवसर को यादगार बनाने के लिए राष्ट्रीय ध्वज के साथ अपनी सेल्फी शेयर करें

सेल्फी शेयर करने के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

www.prharyana.gov.in | Follow us on @diprharyana

ऐसे कठिन समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने युवकों को एकजुट करके बड़ी संख्या में लोगों को लीगी गुंडों से बचाया। और हजारों लोगों को मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। यहां तक कि कांग्रेस के पदाधिकारी भी अपनी जान बचाने के लिए संघ के स्वयंसेवकों पर ही आश्रित थे।

पाकिस्तान से बचकर आए लोग मानते हैं कि यदि संघ न होता तो मारे गए लोगों की संख्या बहुत अधिक होती। संभवतः बहुत कम लोग ही बचकर भारत तक आने में सफल हुए होते।

पंजाब विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे अ. ठ. बाली की पुस्तक 'नाओ इट कैन बी टोल्ड' के अनुसार, 'कांग्रेस के बड़े नेताओं ने लोगों को अहिंसा के मार्ग पर चलने का परामर्श दिया था। उनसे भगवान पर भरोसा करने को कहा गया। किंतु संकट में फंसे लोग यह समझ चुके थे कि ऐसी एक आदर्श स्थितियों की बात है जो किसी सुरक्षित दुर्ग में ही लागू होती है। ऐसी कठिन घड़ी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने लोगों की रक्षा का बीड़ा उठाया। उन्होंने हर नगर, हर मोहल्ले में हिंदू-सिख महिलाओं और बच्चों को निकाला। उनके खाने-पीने, चिकित्सा और कपड़ों का प्रबंध किया। साथ ही वे हथियारबंद होकर उनकी सुरक्षा भी करते थे।'

प्रोफेसर बाली लिखते हैं, 'पश्चिमी पाकिस्तान से आए शरणार्थी आज भारत में चाहे जहां भी रह रहे हों, एक स्वर में यही कहेंगे कि जब सबने उनका साथ छोड़ दिया था, ऐसे समय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ही उनका साथ दिया।'

देश के प्रथम गृह मंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने तत्कालीन सरसंघचालक पूज्य श्रीगुरुजी द्वारा 11 अगस्त, 1948 को भेजे पत्र के उत्तर में लिखा था, 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संकटकाल में हिंदू समाज की सेवा की, इसमें कोई संदेह नहीं है। ऐसे क्षेत्रों में जहां उनकी सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता थी। संघ के नवयुवकों ने स्त्रियों तथा बच्चों की रक्षा की।'

गृह मंत्री बल्लभभाई पटेल का संघ कार्यों के प्रति यह सद्भाव अकारण नहीं था। वे जानते थे कि विभाजन के दौरान भारतीय सेना की टुकड़ियों और संघ के स्वयंसेवकों ने कितने तालमेल के साथ लोगों को निकाला था। विभाजन की विभीषिका के बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका का संकलन 'ज्योति जला निज प्राण की' नामक पुस्तक में किया गया है। इसके लेखक माणिकचंद वाजपेयी और श्रीधर पराड़कर हैं।

हिंदुस्तान टाइम्स में 27 मार्च, 1947 को छपी एक रिपोर्ट विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अखबार के संवाददाता ने रावलपिंडी के कुटी नाम के कस्बे का दौरा करके वहां हुई बर्बरता का वर्णन किया था। 'कट्टरपंथियों ने अफवाह उड़ा दी कि जामा मस्जिद पर हमला हुआ है। इसके बाद सुबह-सुबह 5000 से अधिक हथियारबंद लोगों ने कस्बे में रहने वाले हिंदुओं की दुकानों और मकानों में आग लगा दी। एक भी हिंदू पुरुष जिंदा नहीं बचा। महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया गया और अधिकांश को मार दिया गया। पूरा क्षेत्र मलबे का पहाड़ बन चुका है। ऐसा लगता है, मानो यहां विमान से बमबारी की गई हो।'

15 अप्रैल, 1947 को स्टेट्समैन अखबार ने रावलपिंडी के एक गांव का समाचार छापा था, 'थोहा खालसा नाम के इस गांव पर 3000 से अधिक कट्टरपंथियों की भीड़ ने हमला कर दिया था। गांव के पुरुषों ने कई दिन तक संघर्ष किया, लेकिन जब वे हारने लगे तो महिलाओं ने सम्मान की रक्षा के लिए आत्मबलिदान का निर्णय लिया। 90 बहू-बेटियों ने गांव के इकलौते कुएं में छलांग लगाई। कुआं इतना भर गया कि अंतिम तीन महिलाएं डूब नहीं पाईं।'

यह इकलौती घटना नहीं थी। विभाजन के उस काल में ऐसे जौहर गांव-गांव में हुए। अधिकांश लोगों ने इस्लाम कबूलने के बजाय अपने धर्म और सम्मान की रक्षा के लिए मृत्यु को चुना।

मीरपुर में रक्तपात

विभाजन की सबसे दर्दनाक विभीषिका जम्मू से लगे मीरपुर के लोगों ने झेली। पाकिस्तानी सेना और कबाइलियों के विरुद्ध 25 हजार से अधिक मीरपुरवासियों ने पूरे 20 दिन तक मोर्चा लिया।

14 अगस्त

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा लालकिले की प्राचीर से की तो, और भी अधिक विस्तृत रूप में हमारा ध्यान आजादी के उन गुमनाम योद्धाओं पर भी गया, जिन्होंने अपना सब कुछ लुटाकर आजादी की कीमत चुकाई। आजादी के बदले किया गया उनका यह त्याग हिमालय सा विराट है और उनके इस बलिदान की भरपाई किसी भी प्रकार के सम्मान से नहीं की जा सकती है। बंटवारे के दंश को झेलने वालों में लाखों ऐसे लोग हैं जिनके दर्द का कभी कहीं उल्लेख नहीं किया गया और बीते 75 वष से ये लोग उस दर्द को अपने सीने में दबाए बैठे हैं।

- आजाद भारत के इतिहास में पहली बार आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इनके दर्द को अपना दर्द माना और 14 अगस्त के दिन को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाए जाने का निर्णय लेकर, राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए विभाजन का विष पीने को मजबूर हुए लाखों लोगों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है।
- इतिहास में उल्लेख मिलता है कि 1947 में जब विभाजन हुआ तो बारह लाख से ज्यादा हिंदुओं की हत्या या मृत्यु हुई, लाखों हिंदू परिवारों को अपनी बेशकीमती संपत्ति छोड़ पलायन करना पड़ा, अपनी जान को संकट में डाल हिंदुस्तान आना पड़ा। विपरीत हालातों में भारत पहुंचे इन लोगों ने शून्य से शुरुआत की और विषम परिस्थितियों में अपने परिवार का भरण-पोषण किया।
- आज यह समाज भारत की गतिशीलता का प्रमुख कारक है और मैं व्यक्तिगत रूप से हिंदू पंजाबी समाज को उनकी राष्ट्र सेवा के लिए आदर पूर्वक नमन करता हूं। साथ ही मैं आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने हमारे हिंदू पंजाबी समाज के पुरुषार्थ का उचित सम्मान किया है।
- हम और हमारी सरकार, आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के अमृत महोत्सव में ऐसे लोगों का सम्मान कर रहे हैं, जिन्होंने अविभाजित भारत में जन्म लिया था और विभाजन के कोप को झेला था।
- हमने इनसे वो सच्ची और दर्दनाक घटनाएं सुनी हैं जो बंटवारे के दौरान घटित हुई और जिन्हें आज भी याद करके सिरहन पैदा हो जाती है... डर हमारे मस्तिष्क पर हावी हो जाता है।
- हम, उस वेदना के साक्षी रहे अपने सभी बुजुर्गों और उनके संघर्ष के ऋणी हैं। आज हमारे द्वारा दिया जा रहा ये सम्मान आपके बलिदान के सम्मुख कुछ नहीं है। आप में से ही किसी के पिता, किसी के भाई, किसी की बहन, किसी की मां, किसी के अबोध बच्चों के साथ जो कुछ भी घटित हुआ, उसे ना तो भुला जा सकता है और ना ही उसकी किसी भी रूप में कोई भरपाई की जा सकती है।
- मैं उत्तराखंड में बसे उन पंजाबी परिवारों का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने तराई की धरती को अपनी मेहनत से सींचा और कारोबारियों ,उद्योगपतियों पर गर्व महसूस करता हूं जिन्होंने उत्तराखंड के विकास में अपना तन मन धन से सेवा की।
- हम विभाजन के दौरान अपनी शहादत देने वाले अपने सभी हिंदू पंजाबी जनों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं... आप सभी के बलिदान को हमारा कोटि-कोटि नमन।

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

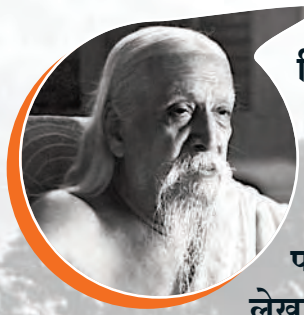

भारत विभाजन के गुनहगार' में लिखा है कि 'विभाजन के परिणामों का लेखा-जोखा ले सकने की अयोग्यता के कारण भारत का नेतृत्व न तो क्षमा, न ही सहानुभूति का पात्र है। जो लोग घटनाचक्र के केंद्र में थे, उन्हें हिंदू-मुस्लिम दंगों की उतनी आशंका नहीं थी कि उसके कारण विभाजन स्वीकार कर लें। विभाजन के कारण तो और भी बड़े पैमाने पर हिंसा हुई। विभाजन के पाप-कर्म से जिन लोगों की आत्मा भस्म हो जानी चाहिए थी, वे अपनी अपकीर्ति की गंदगी में कीटाणुओं की तरह मजा ले रहे थे।''

– डॉक्टर राममनोहर लोहिया
प्रख्यात समाजवादी नेता

इनमें बड़ी संख्या में संघ के स्वयंसेवक भी थे। उन्हें आशा थी कि भारत सरकार उनकी सहायता को सेना भेजेगी, लेकिन पास में ही भारतीय चौकी होने के बावजूद सेना नहीं पहुंची। हजारों की संख्या में लोगों ने अपना बलिदान दिया। जिहादी हमलावरों ने सैकड़ों बच्चों को भालों और तलवारों की नोक पर उछालकर मारा। महिलाओं और बच्चियों के साथ क्या किया गया होगा, इसकी हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं। कहते हैं कि मात्र हजार पांच सौ लोग ही किसी तरह बचते-बचाते जम्मू पहुंच पाए थे। मीरपुर के उस हत्याकांड की स्मृति में दिल्ली के लाजपतनगर में मीरपुर भवन बना हुआ है। मीरपुर से आए विस्थापित यहां हर वर्ष कार्यक्रम करते हैं और अपनी नई पीढ़ियों को बताते हैं कि देश के बंटवारे ने कैसे उनका सबकुछ छीन लिया था।

मीरपुर ही नहीं, पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर, गिलगित और बाल्टिस्तान के क्षेत्र आज केवल मानचित्र में भारत का हिस्सा हैं। विभाजन के तत्काल बाद इन सभी क्षेत्रों में रहने वाले हिंदू, सिख और बौद्ध जनसंख्या को पूरी तरह से साफ कर दिया गया। यहां हुए नरसंहारों का तो कोई प्रत्यक्षदर्शी भी नहीं बचा।

पंजाब और कश्मीर ही नहीं, राजस्थान और दिल्ली से लेकर बंगाल तक, बड़ी संख्या में लोग मजहबी दानवता का शिकार बने। कलकत्ता में डायरेक्ट एक्शन डे हो या नोआखली में हिंदुओं का नरसंहार, हर घटना में एक समानता थी, लोगों को असहाय छोड़ दिया गया। देश का राजनीतिक नेतृत्व एक तरह से पंगु स्थिति में था। लेकिन जब इन घटनाओं की प्रतिक्रिया बिहार में हुई तो उससे पूरी सख़्ती से निपटा गया। इसके पीछे की जो मानसिकता है, उसका विश्लेषण बहुत आवश्यक है।

पूज्य गुरुजी का आह्वान

7 मार्च, 1950 को संघ के तत्कालीन सरसंघचालक पूज्य गुरुजी ने वक्तव्य जारी किया था कि, 'मैं पूर्वी बंगाल से लौटा हूं। वहां के हिंदुओं को भारतवासियों से तत्काल सहायता की आवश्यकता है। उनकी दयनीय स्थिति वर्णनातीत है। नित्य प्रति हत्याएं, लूटमार, अग्निकांड, बलात्कार और बलात् कन्वर्जन की घटनाएं हो रही हैं।' बांग्लादेश के हिंदू लगभग सात-आठ दशक बाद भी विभाजन की पीड़ा सहने को अभिशप्त हैं।

जिस मानसिकता ने भारत को तोड़कर अलग इस्लामी देश को जन्म दिया वह आज भी सिर उठाती रहती है। आज जब हम कहीं राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत के विरोध के समाचार सुनते हैं तो उसके पीछे भी यही मानसिकता काम कर रही होती है।

प्रख्यात समाजवादी नेता डॉक्टर राममनोहर लोहिया ने अपनी पुस्तक 'भारत विभाजन के गुनहगार' में लिखा है कि 'विभाजन के परिणामों का लेखा-जोखा ले सकने की अयोग्यता के कारण भारत का नेतृत्व न तो क्षमा, न ही सहानुभूति का पात्र है। जो लोग घटनाचक्र के केंद्र में थे, उन्हें हिंदू-मुस्लिम दंगों की उतनी आशंका नहीं थी कि उसके कारण विभाजन स्वीकार कर लें। विभाजन के कारण तो और भी बड़े पैमाने पर हिंसा हुई। विभाजन के पाप-कर्म से जिन लोगों की आत्मा भस्म हो जानी चाहिए थी, वे अपनी अपकीर्ति की गंदगी में कीटाणुओं की तरह मजा ले रहे थे।'

स्वतंत्रता के बाद एक सुनियोजित प्रचार द्वारा समाज में यह धारणा बनाई गई कि देश के विभाजन को जनता ने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया था और उस दौरान हिंदू समाज पर जो दानवी अत्याचार हुए, वे तो नए राष्ट्र के जन्म की 'प्रसव पीड़ा' मात्र थे। जबकि लाखों-करोड़ों विस्थापितों की गवाहियां इस झूठ की पोल खोलती हैं।

हजारों वर्ष पुरानी भारतीय सभ्यता की पुण्य भूमि के बंटवारे को सैद्धांतिक रूप से कभी स्वीकार नहीं किया जा सकता। 5 अगस्त, 1947 के दिन कराची में संघ की जनसभा में पूज्य गुरुजी ने कहा था-'हमारी मातृभूमि पर विपदा आ गई है। भारत का विभाजन एक पाप है और जो उसके उत्तरदायी हैं, उन्हें भावी पीढ़ियां कभी क्षमा नहीं करेंगी। यह विभाजन अप्राकृतिक है। इसे एक न एक दिन निरस्त करना होगा।'

कुछ ऐसी ही भावना महान क्रांतिकारी महर्षि अरविंद ने 1957 में व्यक्त की थी। 'देर चाहे कितनी भी हो, पाकिस्तान का विघटन और भारत में विलय एक दिन तय है। यही ईश्वर की इच्छा है। भारत फिर से अखंड होगा और मैं उसे स्पष्ट रूप से देख रहा हूं।' महापुरुषों की ये भविष्यवाणियां एक आशा का संचार करती हैं। करोड़ों भारतवासी इस कामना को अपने हृदय में बिठाएंगे तो यह और भी बलवती होगी। जिस दिन यह सत्य सिद्ध होगी वह दिन विभाजन की विभीषिका झेलने वाले करोड़ों निर्दोषों को सच्ची श्रद्धाञ्जलि का दिन होगा। ■

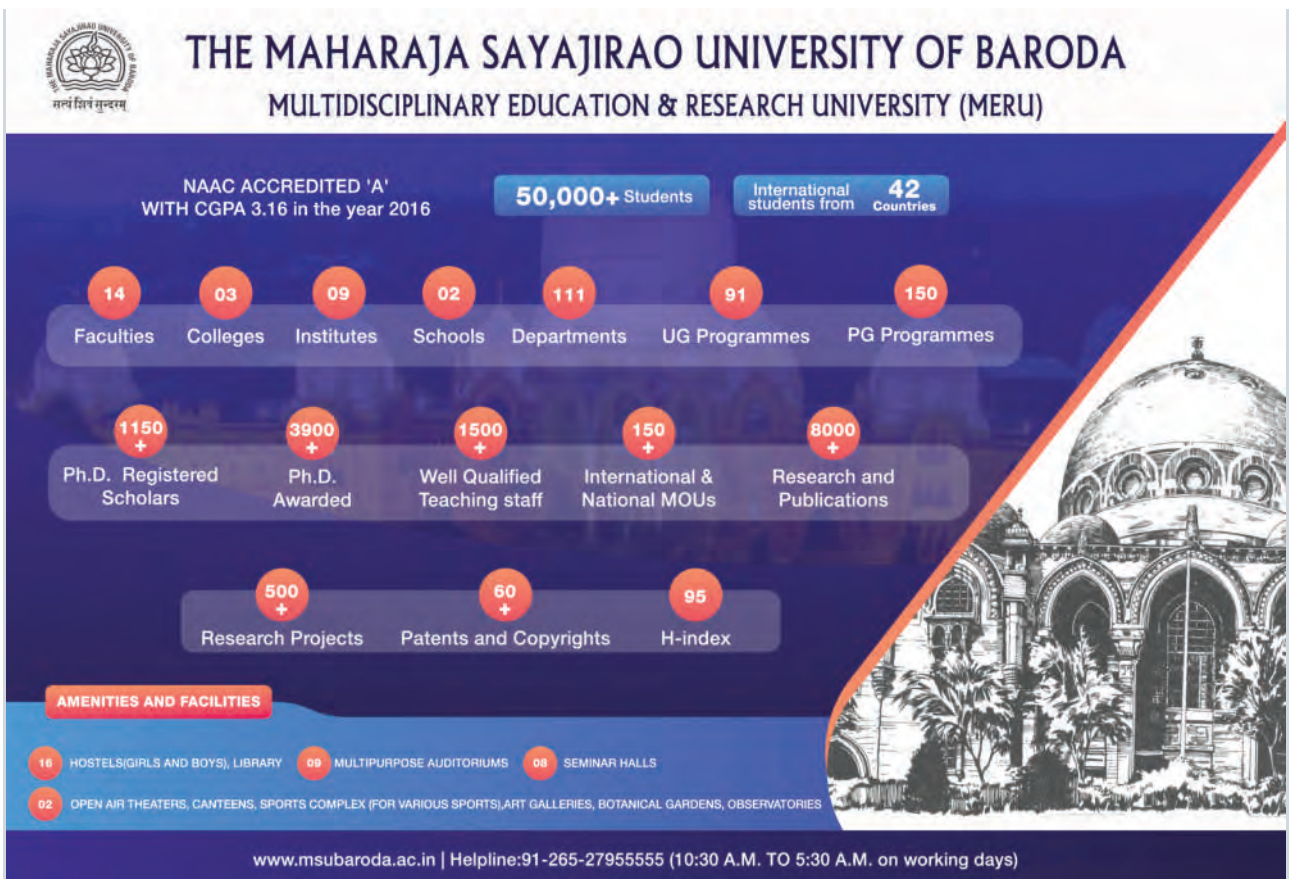

खून के आंसू

विभाजन काल की परिस्थिति, साम्राज्यवादी शक्तियों के हित और राजनीतिक हसरतों की कहानी एक तरफ.. मगर उन लोगों से बात करना जिन पर यह आफत गुजरी, दिल दहलाने वाला है। झुर्रियों से अटे चेहरे, धुंधलाती आखें और उस घटनाक्रम को याद कर रुंध जाने वाले गले... बुजुर्गों का अचानक फफककर रो पड़ना दबाए गए इतिहास का बांध टूट जाने जैसा है।

यह हिंदू नरसंहार का वह भीषण मामला है जिसकी दुनिया में कभी चर्चा तक नहीं होती। पाञ्चजन्य ने इसी पीड़ा को समाज के सामने लाने की ठानी है। हमारे संवाददाता दिल्ली सहित देश के विभिन्न शहरों, गांवों में महीनों से भटक रहे हैं, गलियों की खाक छान रहे हैं, तब जाकर उन लोगों तक पहुंच पा रहे हैं, जो विभाजन के दौरान पाकिस्तान से भारत आए। बचपन में बंटवारे को अपनी आंखों से देखने वालों के बयान थर्राहट से भर देने वाले हैं। इनकी आपबीती किसी को भी रुला देती है। आज ये सभी 75-100 वर्ष के हैं, लेकिन इतने दिन बाद भी उनके मन में अपनी मिट्टी छोड़ने की कसक है। मुस्लिम गुंडागर्दी के सामने बेबस रह जाने की फांस है। अपनी मां,बहन बेटियों के साथ बलात्कारों को देखने, उनके कुंओं में छलांगें लगाने या जिहादियों द्वारा झपट लिए जाने की पहाड़ जैसी पीड़ा है।

ये दर्दनाक कहानियां लंबी और त्रासद हैं, जिन्हें हमने अपने यूट्यूब चैनल @panchjanya पर अपलोड किया है। इस विशेषांक में ऐसे ही लोगों के दर्द और संघर्ष की कहानियों को बहुत संक्षेप में उड़ेला गया है। यदि आपके आसपास भी विभाजन से पीड़ित लोग हों, तो हमें उनका वीडियो बनाकर vkv.panchjanya@gmail.com पर भेज सकते हैं। 3

इस अंक के लिए अरुण कुमार सिंह, अश्वनी मिश्र, दिनेश मानसेरा,राजेश प्रभु सालगांवकर और राज चावला ने भुक्तभोगियों से बातचीत की, तो शशिमोहन रावत, मंगल सिंह नेगी, जनार्दन सिन्हा और राजपाल रावत ने कंपोजिंग और साज-सज्जा में सहयोग दिया। शरतचंद्र बारीक वीडियोग्राफी में मदद कर रहे हैं।

पुरुषोत्तम लाल मेहता / सौवाल, झेलम, पाकिस्तान

लाशों के बीच छिपकर बचाई जान

दरअसल भारत विभाजन का घाव इतना गहरा है कि आज भी दर्द महसूस होता है। उस समय मेरे परिवार में कुल 14 सदस्य थे और 11 को मुसलमानों ने मार दिया। मैं, तीन साल की मेरी चचेरी बहन और मेरे पिताजी ही बचे थे। मैं साढ़े 10 साल का था। भारत विभाजन के बाद हम लोगों को इतना प्रताड़ित किया गया कि वहां से पलायन करना पड़ा। हम सभी पिंड दादनखान में 23 सितंबर, 1947 को एक मालगाड़ी में बैठे। शाम को हमारी गाड़ी कामुकी मंडी पहुंची। यह मंडी लाहौर और गुजरांवाला के बीच है। कुछ देर में पुलिस आई और कहने लगी, ''जिनके पास भी हथियार हैं, वे जमा करा दें, क्योंकि उन्हें भारत नहीं ले जा सकते।'' यह उनकी चाल थी। यह सब जानते हुए भी हिंदुओं ने अपने हथियार उन्हें दे दिए। इसके बाद 24 सितंबर की तड़के सैकड़ों मुसलमान आए और कहने लगे, महंगे सामान और पैसे जमा कर दो, नहीं तो सभी मारे जाओगे। फिर उन लोगों ने जवान लड़कियों और महिलाओं को उतार लिया। इन सबके बाद मुसलमान हर डिब्बे में तलवारों के साथ घुस गए और एक तरफ से हिंदुओं को काटना शुरू कर दिया। गाड़ी में 40 डिब्बे थे और हर डिब्बा खचाखच भरा हुआ था। अनुमान है कि गाड़ी में 6,000 हिंदू थे। इनमें लगभग 500 हिंदू ही बचे, लेकिन सभी घायल। मेरी आंखों के सामने ही मेरी मां, चाचा और अन्य संबंधियों को मार दिया गया। जब एक मुसलमान ने मेरे चाचा पर हमला किया तो उन्होंने मुझे अपने नीचे दबा लिया। उन्हें तलवार से काट दिया गया। वे 45 साल के थे। चाचा पर हमले के दौरान मेरी गर्दन और अंगुलियों पर तलवार की नोक लगी। उसके निशान आज भी हैं। मैं डर के मारे शवों के साथ दुबक गया।

यह मारकाट देर तक चली। इसी दौरान हिंदू सेना, जो पाकिस्तान से भारत लौट रही थी, की नजर हमारी गाड़ी पर पड़ी। उन्होंने हमलावरों को भगाया और घायलों को गुजरांवाला के एक अस्पताल में भर्ती कराया। अस्पताल में सभी डॉक्टर मुसलमान थे। हिंदू सेना ने चिकित्सकों को धमकाते हुए कहा कि यदि कोई घायल मरा तो तुम लोग भी नहीं बचोगे। इसके बाद उन्होंने घायलों का ठीक से इलाज किया। गुजरांवाला में हम लोग करीब 15 दिन रहे। उस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने हम लोगों की बड़ी मदद की। उन्होंने खाने और ठहरने की व्यवस्था की और उन्हीं की देखरेख में हम भारत आने के लिए दोबारा गाड़ी में बैठे। ■

सुरेंद्र कुमार सचदेवा
दोचक, सरगोधा, पाकिस्तान

देखा तलवार का इस्लाम से रिश्ता

सरगोधा जिले के दोचक गांव, तहसील फुल्लरवन में लगभग 100 घर मुसलमानों के और केवल तीन घर हिंदुओं के थे। उनमें एक घर मेरा भी था। पिताजी गांव में ही परचून की दुकान चलाते थे। 1947 में गांव के मुसलमान ऐसे उन्मादी हो गए कि दो हिंदू परिवार रातोंरात भाग गए। कुछ कारणों से मेरा परिवार नहीं निकल सका। जैसे ही मुसलमानों को पता चला कि दो हिंदू परिवार भाग गए हैं, तो वे लोग हमारे घर आ धमके। कहने लगे कि अब तुम लोगों को मुसलमान बनना पड़ेगा, तभी जिंदा रह पाओगे। इसके बाद वे लोग मेरी मां को छोड़कर परिवार के सभी पुरुषों को मस्जिद में ले गए। वहां हमें मुसलमान बनाया गया। इसके बाद हम लोगों को एक मुसलमान के घर ही रखा गया। वहीं मेरी मां को भी बुला लिया गया। पिताजी मुसलमानों को चकमा देकर गांव लौट आए। वहां वे गोरखा सैनिकों के पास पहुंचे और उन्हें सारी बात बताई। इसके बाद पिताजी के साथ कुछ सैनिक मेरे गांव पहुंचे। 10 मिनट के अंदर उस ट्रक पर बैठकर हम लोग निकल गए।

फुल्लरवन में एक बड़ा गुरुद्वारा था। उसके पास ही हम शरणार्थियों के लिए शिविर बना था। हमें वहीं ले जाया गया। हम वहां करीब एक महीना रहे। शिविर की सुरक्षा में दो दिन गोरखा सैनिक आते थे, तो दो दिन मुस्लिम सैनिक आते थे। मुस्लिम सैनिक शिविर में रह रहे लोगों को बेवजह मारते रहते थे। आपस में बात करने पर भी पिटाई करते थे। वे बच्चों और महिलाओं को भी नहीं छोड़ते थे। बाद में मास्टर तारा सिंह ने हम लोगों को वहां से निकालकर भारत तक पहुंचाया। ■

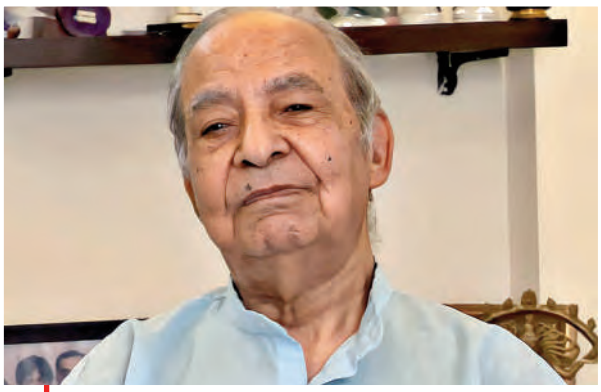

रविंद्र पाल वोहरा
मुजफ्फराबाद

नमाज के लिए हुए मजबूर

भारत विभाजन के कुछ ही समय बाद कबाइलियों ने मुजफ्फराबाद पर हमला कर दिया। कबाइलियों को आज के आतंकवादी कह सकते हैं। ये लोग हिंदू पुरुषों को देखते ही गोली मार देते थे, जबकि हिंदू महिलाओं को उठाकर ले जाते। जाने से पहले ये हमलावर हिंदुओं के घरों को लूटते और अंत में आग लगा देते थे। जब स्थिति बहुत ही खराब हो गई तो हिंदू महिलाएं मुजफ्फराबाद से बाहर भागने लगीं। उन्हें यह भी नहीं पता था कि कहां जाएं। कबाइलियों से बचने के लिए महिलाओं ने आत्महत्या करना शुरू किया। शहर के बाहर एक नदी पर पुल बना था। हिंदू महिलाएं उस पुल से नदी में छलांग लगाकर जान देने लगीं।

उस वक्त मैं 14 साल का था। जब कभी कहीं जाना होता था तो हम लोग झुंड में जाते थे, अकेले कोई नहीं जाता था। उस वक्त मुजफ्फराबाद में कोई कानून नहीं रह गया था। पूरी तरह कबाइली राज चल रहा था। वे जिसे चाहते थे, मार देते थे। हमारे जिले में हिंदू और सिखों की आबादी करीब 40,000 थी। उनमें से लगभग 3,000 ही बचकर भारत आ पाए थे।

मुसलमानों के बीच रहने और अपनी जान बचाने के लिए हमारे पास एक ही रास्ता था—मुसलमान बन जाना। हर शुक्रवार को जबरदस्ती हम लोगों को नमाज पढ़ने के लिए कहा जाता था। जान बचाने के लिए हिंदुओं ने यह सब किया। जब तक हम लोग मुजफ्फराबाद में रहे तब तक मस्जिद जाते रहे, नमाज पढ़ते रहे। लेकिन शरीर में तो हिंदू रक्त बह रहा था। इसलिए एक दिन अवसर मिलते ही मुजफ्फराबाद से निकल भागे और भारत आ गए। साथ में केवल पहने हुए कपड़े थे। यहां आकर फिर से हिंदू हो गए। एक-एक दाने के लिए महीनों भटकते रहे। ■

गोपाल दास खुराना
चूनेवन, मुल्तान

मौत का तांडव

भक्त प्रह्लाद की नगरी मुल्तान में मेरा जन्म हुआ। ऐसी नगरी में जन्म लेना सौभाग्य की बात थी, लेकिन वह सौभाग्य जल्दी ही दुर्भाग्य में बदल गया। 1946 के मध्य से ही मुलतान में हिंदुओं के घरों में आगजनी होने लगी थी। हमारा मकान तीन मंजिला था। मकान की छत से आगजनी का मंजर देखते थे। छोटी-सी बात पर हिंदुओं के घरों में आग लगा दी जाती। मुझे खूब याद है, एक बार हिंदुओं ने धार्मिक जुलूस निकाला। जैसे ही वह जुलूस मुस्लिम इलाके में गया, मुसलमान अपने घरों की छत की दीवार को तोड़-तोड़कर उन पर ईंट बरसाने लगे। यानी वे लोग हिंदुओं को मारने के लिए कुछ भी करते थे। 1947 के जुलाई-अगस्त में मुल्तान में ऐसा लगता था कि चारों ओर मौत मंडरा रही है। इन हालात में हम लोगों ने घर का सारा कीमती सामान एक कमरे में रखा और उसके दरवाजे पर भी प्लास्टर करवा दिया और इस आस के साथ निकल गए कि जब लौटेंगे तो सामान सुरक्षित मिल जाएगा, क्योंकि हमें यह नहीं पता था कि हम दुबारा वापस नहीं आएंगे।

घर से निकल कर हम लोग मुहल्ले के पास ही बने एक शिविर में चले गए। वहां बहुत भीड़ थी। सबकी अपनी-अपनी कहानी थी। वहीं कुछ दिन रहे, फिर हमें पुलिस के पहरे में मुलतान रेलवे स्टेशन ले जाया गया। हमारी गाड़ी भारत आने वाली आखिरी गाड़ी थी। वह मालगाड़ी थी यानी उस पर छत नहीं थी। गाड़ी दिन में चली। रात में तो एक स्टेशन पर मुसलमानों की पूरी भीड़ थी। उन्होंने हम पर हमला कर दिया। दूसरे दिन हम लोग फाजिल्का पहुंचे। फाजिल्का से भिवानी, गुड़गांव और फिर दिल्ली आए। यहां आकर मैंने एक चाय दुकान में बर्तन धोने का काम किया और मेरे भाई खारी बावली से खोया लेकर पेड़े तैयार करते और रेलवे स्टेशन पर बेचा करते। इस तरह से हमने जिंदगी शुरू की। ■

BHAKTA KAVI NARSINH MEHTA UNIVERSITY

Govt. Polytechnic Campus, Bhakta Kavi Narsinh Mehta University Road, Khadiya, Junagadh-362263, Gujarat (India) • Ph: 0285-2681400 • Website: bknmu.edu.in

Prof. (Dr.) Chetan Trivedi
Vice Chancellor

The **Bhakta Kavi Narsinh Mehta University** is established by the Government of Gujarat vide Gujarat Universities Act No. 23 of 2015. It is UGC approved University and started functioning from 2016 covering four **Districts viz. Junagadh, Gir Somnath, Porbandar, Dev Bhumi Dwarka having 162 Colleges with 71 Post Graduate centres and 19 P.G. Diploma centres having more than 1,10,000 students.** The University Campus is situated and spread over 234 acres of land allotted by the Government and its new buildings construction work is in progress.The University is imparting education both at UG as well as PG levels with full fledged qualified staff. **Admissions are given in different Faculties viz. Arts, Science, Commerce, Law, Architecture, Education, Medicine at U.G. and P.G. level.**

Faculty	6
University PG Departments	5
Post Graduate Centers	71
Ph.D Supervisor	146
Ph.D Research Scholars	456
Under Graduate Colleges	62
Medical College	1
Pera Medical Colleges	8
Diploma Centres	10
Skill Based Add on Courses	29

Sr.	Name of the Departments	Subject
1.	Department of Languages	English
2.	Department of Social Sciences and Social Works	Sociology
		History
3.	Department of Life Sciences	Botany
		Zoology
		Microbiology
		Environmental Science
4.	Department of Chemistry & Forensic Science	Chemistry
		Forensic Science (HPP)
5.	Department of Commerce & Management	Commerce

This University is headed under the able leadership and guidance of very young, dynamic and energetic **Vice Chancellor, Prof. (Dr.) Chetan Trivedi**, who with his team has developed the University in a very short span keeping in view the "New Educational Policy" and to cope up with the global scenario and present day's demand of digitalization by introducing **29 skilled based short term diploma and certificate courses including Post Graduate diploma.**

THE FACILITIES AT THE UNIVERSITY DEPARTMENTS

Central Library, Computer Labs, Innovative Teaching-Learning Methodology, Kiosk for students support service, Secured campus with CCTV cameras, Virtual Class rooms, Wi-fi Campus, SSIP-Innovational Centre.

भगवन्ती देवी
खानपुर, मुलतान, पाकिस्तान

'मां ने बहन को नहर में फेंका'

विभाजन के समय बहुत भारी मुसीबत आयी। हाथ पकड़-पकड़ कर मुसलमानों ने घर से बाहर निकाला। जो नहीं निकलना चाहता था, उसे मार दिया गया। मुझे अभी भी याद है, एक दिन अचानक मजहबी नारों के साथ एक भीड़ आई और हमारे गांव पर हमला कर दिया। उस समय हम सभी भाई-बहन एक साथ ही बैठे थे। हमारे पड़ोस में अधिकतर मुसलमान रहते थे। हम उन पर बहुत विश्वास करते थे। उनमें से कुछ मुसलमानों ने कहा, ''तुम्हें मारने वाले आए हुए हैं इसलिए सब छोड़-छाड़कर यहां से भाग जाओ। हम तुम्हारे घरों में ताले लगा देंगे और बाद में तुम्हें वापस लाएंगे।'' उनकी बातों पर विश्वास करके हम लोग निकल गए। हम लोग डरे-सहमे भागे जा रहे थे, लेकिन जाना कहां है, यह नहीं पता था। रास्ते में देखा कि लाशें जल रही हैं। उस वक्त मेरी माताजी की गोद में डेढ़ साल की मेरी बहन थी। मुसलमान उस बच्ची को छीनना चाहते थे, इसलिए मेरी मां ने उसे नहर में फेंक दिया। बाद में एक व्यक्ति ने उसे नहर से निकाल कर मां को दे दिया। रास्ता संकरा और नहर का किनारा था। इस कारण कई बच्चे अपनी मां की गोद से नहर में गिर गए और तेज बहाव के कारण बह गए।

कई घंटे बाद हम एक स्टेशन पर पहुंचे। वहां किसी ने हम लोगों को एक रेलगाड़ी में बैठा दिया और कहा कि अब यहां से भारत चले जाओ, देश का बंटवारा हो गया है। स्टेशन पर भी हमारे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया गया। जिसको गाड़ी पर चढ़ाना था चढ़ा दिया, जिसको मारना था मार दिया। वहां महिलाओं की इज्जत लूटी जा रही थी। कई पुरुषों ने घर की महिलाओं को रास्ते में ही मार दिया था। जैसे-तैसे गाड़ी भारत पहुंची। ■

फकीर चंद भाटिया
गांव सदा, सरगोधा, पाकिस्तान

'और लड़कियां कुएं में कूद गईं'

पाकिस्तान बनने की भनक लगते ही हमारा सारा परिवार बिखर गया। परिवार में हम दो भाई, दो बहनें और पिताजी थे। माताजी का निधन हो गया था। मैं भाई-बहनों में सबसे बड़ा और केवल 10 साल का था। हम सबका पालन-पोषण बुआ करती थीं। दो मंजिला घर था और उसके नीचे पिताजी परचून की दुकान चलाते थे। जब हमें पता चला कि अब हमें यहां से सब कुछ छोड़कर जाना है तो बहुत दुख हुआ। वह दुख तब और बढ़ गया जब साथ रहने वाले मुसलमान ही हमारे साथ मार-पीट करने लगे। उन्होंने हमारी नौजवान बच्चियों के साथ दुर्व्यवहार किया। इज्जत बचाने के लिए हमारे गांव की कई लड़कियों ने कुएं में छलांग लगाकर अपनी जान दे दी। जब कोई लड़की कुंए में कूदती, तो हम सिर्फ रोते-चिल्लाते रह जाते। जून,1947 में हम लोगों को जबरन घर से निकाला गया और उन पर मुसलमानों ने कब्जा कर लिया। हम लोग रोते हुए गांव से निकल गए। उस समय हमारी जवान लड़कियों को उन्होंने अपने पास रख लिया। हम लोग पैदल ही सरगोधा पहुंचे। वहां डॉ. लहना सिंह थे, उनकी मदद से हम लोग एक मालगाड़ी में बैठ गए। उसी समय स्टेशन पर बड़ी संख्या में मुसलमान गाड़ी के आगे खड़े हो गए। पर सैनिकों ने आकर गाड़ी चलवाई। रास्ते में जगह-जगह लाशें पड़ी हुई थीं। इसी दर्द के साथ हम लाहौर पहुंचे। वहां से हम लोग अटारी पहुंचे। प्लेटफार्म पर संघ के स्वयंसेवकों ने हमें भुने हुए चने दिए। ये स्वयंसेवक हमें अमृतसर ले गए जहां दो महीने रहे। फिर अंबाला आ गए। कुछ समय बाद दिल्ली आए और एक झोंपड़ी बनाकर रहने लगे। मेरी पढ़ाई चलती रही और जीतोड़ मेहनत के बाद फिर से जीवन पटरी पर आया। ■

ज्ञानधारा

बढ़िया वाला पशु आहार

उपलब्धता व जानकारी हेतु संपर्क करें:
8081208001, 0522-3511231
www.gyandhara.com

सच में बढ़िया

वेदव्यास महाजन
सियालकोट, पाकिस्तान

'सारा कुंआ लाशों से पट गया'

जब बंटवारा हुआ तो मैं छह बरस का था। मेरा गांव बिल्कुल सीमा पर था। उन दिनों जब ज्यादा हालात खराब हुए तो हमारे गांव से भी पलायन होने लगा। 500 से ज्यादा सिखों का एक जत्था पाकिस्तान से हिन्दुस्थान आने के लिए तैयार हो गया। लेकिन तब तक कुछ बहुरूपिये मुसलमान गांव आ गए। मुसलमानों ने जत्थे के लोगों से कहा कि जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह की रियासत में हथियार लेकर आना मना है तो जिनके पास जो भी अस्त्र-शस्त्र हों, वे दे दें। जत्थे में जवान और बुजुर्ग दोनों थे। पर जवानों ने हथियार देने से साफ मना कर दिया। तो मुसलमानों ने उन्हें समझाया कि हम सभी आपको आसानी से सीमापार करा देंगे, हम आप से जैसा कहते हैं, वैसा करिए। लेकिन जैसे ही जत्थे के सभी लोगों ने अपने हथियार मुसलमानों को सौंपे, मुसलमानों ने उन्हें मारना-काटना शुरू कर दिया। लड़कियों की इज्जत को तार- तार किया जाने लगा। जिसने भी इसका विरोध किया, उसे वहीं काट दिया और पास के कुएं में फेंक दिया। कुछ औरतें और लड़कियां अपनी इज्जत बचाने के लिए स्वयं कुएं में कूद गईं। सारा कुआं लाशों से पट गया। जिहादियों ने जत्थे के सभी लोगों को काट डाला था। इस खबर को सुनकर पूरा गांव सन्न था और सभी सहमे हुए थे। इसके बाद धीरे-धीरे सभी हिंदुओं ने गांव से पलायन करना शुरू कर दिया। अगले दिन वहां का मुस्लिम जैलदार जो 40 गांवों का मुखिया था, हमारे घर आ धमका और हमारी ताई से कहा कि आपके पास जो जेवर हैं, उन्हें हमें दे दो और यहां से जान बचा के भाग जाओ। लेकिन ऐसा न करने पर उन्होंने परिवार को बंधक बना लिया। ■

मनोहर लाल बुद्धिराजा
मांगनी, सरगोधा, पाकिस्तान

'खून से लाल हुई नदी'

सरगोधा जिले का मांगनी गांव एक नहर के किनारे बसा हुआ है। वही मेरी जन्मभूमि है। मैं लगभग 10 साल का था, तभी गांव में उन्माद की गंध महसूस होने लगी। एक दिन मेरे घर वाले गांव से निकले और सरगोधा में बने शिविर में चले गए। कुछ दिन बाद ही हमें एक रेलगाड़ी में जानवरों की तरह ठूंस-ठूंस कर चढ़ाया गया। लाहौर रेलवे स्टेशन पर गाड़ी खड़ी हुई तो वहां पास में ही बह रही नदी को देखकर लोग पानी लेने के लिए उतरने लगे। मैं भी एक बर्तन लेकर गया। वहां देखा कि पानी बिल्कुल लाल है। पता चला कि लाहौर में जितने हिंदू मारे जा रहे हैं, उन्हें इसी नदी में फेंका जा रहा है और उनके खून से पानी लाल हो गया है। गाड़ी को उन्मादी मुसलमानों ने घेर रखा था, उनको हटाने के बाद गाड़ी चली। इसके बाद हम लोग अटारी पहुंचे। वहां लोग लस्सी लेकर खड़े थे। वहीं हम लोग तीन दिन सड़क पर पड़े रहे। फिर हम लोगों को कपूरथला भेज दिया गया। हमारी माताएं, बहनें और हम सभी मात्र तीन कपड़ों में भारत आए। किसी के पास चप्पल-जूते भी नहीं थे। फिर हमें जालंधर और कुछ दिन बाद दिल्ली भेज दिया गया। यहां मालवीय नगर में रहने की जगह मिली। वहां कोई काम नहीं मिला तो मोतीनगर में 5 रुपए प्रतिमाह पर एक कमरा किराए पर लिया। उसी में माता-पिता के साथ रहे। घर का खर्च चलाने के लिए सिनेमा हॉल के बाहर पापड़ बेचे। इन सबके बीच मैं पढ़ाई भी करता रहा और 1954 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। फिर डीसीएम कंपनी में 55 रु प्रतिमाह पर नौकरी करने लगा। जब आर्थिक स्थिति कुछ ठीक हुई तो अपना ही कारोबार शुरू किया और आज उसी से गुजारा हो रहा है। ■

चेलाराम पुपरेजा
मरदान, पाकिस्तान

'बसों में सवार सभी हिंदुओं को मार दिया'

भारत विभाजन के समय मेरा परिवार मरदान जिले के रेदा में रहता था। मेरा विवाह हो चुका था। उन दिनों मेरी मैट्रिक की परीक्षा चल रही थी। मरदान के खालसा स्कूल में परीक्षा केंद्र पड़ा था। एक दिन जब हम लोग परीक्षा दे रहे थे, तब स्कूल के बाहर मुसलमानों का एक जुलूस आया। उसमें लोग 'पाकिस्तान जिन्दाबाद', 'अल्लाह-हू-अकबर' के नारे लगा रहे थे। इससे भीतर परीक्षा केंद्र में हिंदू विद्यार्थी डर गए। परीक्षा समाप्त होने के बाद सभी हिंदू छात्र एक कमरे में बैठे। जब वहां से मुसलमानों की भीड़ चली गई तब हम लोग बाहर निकले और घर पहुंचे। तब वहां हिंदू-मुसलमानों की पोशाकें एक-सी होती थीं। सभी सलवार पहनते थे, लेकिन चेहरे से पहचान में आ जाते थे। बिगड़े माहौल के दिनों में मैं एक दिन किसी जरूरी काम से बाजार गया। कुछ मुसलमान मेरे पीछे पड़ गए। मैं तेजी से भागकर एक मुस्लिम की दुकान में घुस गया। उन्हें लगा कि मैं भी मुसलमान हूं और वे वहां से चले गए, तब मैं घर लौटा।

एक दिन गांव के सारे मुसलमान हिंदुओं के पीछे पड़ गए। उन लोगों ने मार-काट शुरू कर दी। इसके बाद हम लोगों ने गांव छोड़ने का निर्णय लिया। हमारा परिवार मरदान स्थित शिविर में पहुंचा। वहां से हम रावलपिंडी पहुंचे। यहां संघ के स्वयंसेवकों ने जगह-जगह पानी, खाने की व्यवस्था कर रखी थी। वहां से भारत सरकार द्वारा भेजी गई एक विशेष रेलागाड़ी से हम लोग भारत आए। आज भी एक घटना याद है। मेरी ससुराल के गांव के कुछ लोग छह बसों में बैठकर जा रहे थे। उसमें मेरा साला भी था। रास्ते में बसों पर मुसलमानों ने हमला कर दिया। इसमें मेरे साले को छोड़कर सभी हिंदू मारे गए। मेरा साला एक सीट के नीचे छिपने से बच गया था। ■

प्रेमनाथ रावल
चक हाफसाबाद, मुल्तान, पाकिस्तान

'मौसेरी बहनों ने चुनी मौत'

आज 75 वर्ष बाद भी मैं उस घटना को नहीं भूल पाता, जिसमें मेरी तीन मौसेरी बहनों ने कुएं में कूद कर जान दे दी। जब मुसलमानों ने हमारी मौसी के घर हमला किया तो उन लोगों ने उनकी तीनों बेटियों के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया। जब मुसलमान चले गए तो तीनों बहनों ने अपने माता-पिता से कहा कि तलवार उठाएं और हमें मार दें।

माता-पिता ने तीनों को समझाने का प्रयास किया। पर उन तीनों ने सबकी नजरों से बचते हुए घर के पास ही एक कुएं में छलांग लगा दी। जब यह घटना घटी, उस समय मैं अपने माता-पिता के साथ मुल्तान के शिविर में था। उस समय मैं साढ़े आठ साल का था। पता चला कि भारतीय सेना जगह-जगह फंसे हिंदुओं को निकालकर भारत ले जा रही है। कुछ मराठा सैनिक गाड़ी लेकर हमारे गांव आ गए। उन्होंने हमें मुल्तान के शिविर में छोड़ा था।

मुल्तान से हम लोगों ने लाहौर जाने वाली गाड़ी पकड़ ली। रास्ते में बेवजह अनेक स्थानों पर गाड़ी रुकने लगी तो पता चला कि चालक मुसलमान है। इससे गाड़ी में बैठे सभी लोग डर गए। इसी डर के बीच आगे कुछ मुसलमानों ने गाड़ी को रोक लिया। वह घंटों खड़ी रही और हम लोग अंदर दुबके रहे। फौजी कार्रवाई के बाद गाड़ी चली और हम लोग पहले लाहौर और उसके बाद अटारी पहुंचे।

बाद में भारत में पिताजी की नौकरी लगी और हम लोगों की पढ़ाई हुई। मैं सेना के इंजीनियरिंग विभाग में कई साल तक अधिकारी रहा। अब समय काटने के लिए कुछ समाज सेवा कर लेता हूं। ■

त्रिलोक चंद्र अरोड़ा
अलुदे अली, मुजफ्फरगढ़, पाकिस्तान

'दाने-दाने के लिए तरस गए'

भारत विभाजन की खबर फैलते ही पाकिस्तान के हिस्से में खून की नदियां बहने लगीं। हिंदुओं को खोज-खोज कर मारा जाने लगा। हमारा परिवार सौभाग्यशाली था कि भारी मार-काट के बीच भी बच गया। उस समय मेरी उम्र केवल पांच साल थी। तब गांव में हमले होने लगे। जो भी हिंदू मिलता था, उसे मार दिया जाता था। जान बचाने के लिए दो ही रास्ते थे-मुसलमान बन जाना या पलायन करना। हमारे बड़ों ने पलायन स्वीकार किया। विभाजन ने हमें दाने-दाने के लिए तरसा दिया। हम महीनों सड़क के किनारे या तंबू में रहे। हमारे परिवार के लोग गांव के अन्य लोगों के साथ निकल पड़े और पैदल ही रूना अली पहुंचे। यहां रेलगाड़ी में बैठे और मुजफ्फरगढ़ आए। रास्ते में भयंकर मारकाट हो रही थी। शव ही शव दिख रहे थे। महिलाओं के साथ बहुत ही बुरा हो रहा था। मुजफ्फरगढ़ से हम लोग तीन दिन में करनाल पहुंचे। ये तीन दिन कैसे कटे, उसे शब्दों में नहीं बताया जा सकता। खाने-पीने के लिए कुछ नहीं था। करनाल में स्वयंसेवकों ने खाना खिलाया। बाद में मेरे पिताजी तांगा चलाने लगे। कुछ दिनों तक मजदूरी की। इसी बीच करनाल के पास एक गांव में बदले में कुछ जमीन भी मिली, लेकिन उससे गुजारा नहीं हो पा रहा था। अंत में जमीन बेचकर हम लोग महरौली (दिल्ली) आ गए और कपड़े का काम करने लगे। अब मेरा पूरा परिवार यहीं रहता है। गांव में हवेली थी, जमींदारी थी और आज 100 गज जमीन में रहने को विवश हैं और छोटे-मोटे काम कर गुजारा कर रहे हैं।

अभी भी गांव की याद आती है, पर वहां जाने का मन नहीं करता। ■

Ranked 3rd School of Tourism & Hospitality in Uttar Pradesh by INDIA TODAY

Ranked 7th in India with Highest number of Patent application — INTELLECTUAL PROPERTY INDIA

COURSES OFFERED

Engineering • Polytechnic • Management & Commerce
Tourism & Hospitality • Fashion • Law & Legal Studies
Humanities & Social Science • Education • Rehabilitation
Yoga & Naturopathy • Basic & Applied Sciences • Agriculture
Pharmacy • Nursing • Medical & Allied Sciences • BAMS
BNYS • Journalism & Mass Communication

200 BEDED AYURVEDIC HOSPITAL (KERALEEYA TREATMENT)

WELLNESS CENTRE (KERALEEYA PANCHKARM)

U.P. GOVT APPROVED INCUBATION CENTRE

13 STARTUPS RUNNING

PLACEMENT RECORDS

91% Students Placed | **54 Lakhs** Highest Package

AIS • Paytm • wipro • BAJAJ MOTORS • Coca-Cola • accenture • NHAI • LARSEN & TOUBRO

Campus: 28 K. M. Stone, Mathura – Delhi Highway, Chhata, Mathura, Uttar Pradesh (INDIA)
9690899944 enquiry@sanskriti.edu.in 9358512345
Toll Free Number: 1800 120 2880

Scan QR code to visit website

भोलानाथ मल्होत्रा
लाहौर, पाकिस्तान

'तांगे वाले ने बचाई जान'

बात होगी 1947 की जनवरी-फरवरी की। उन दिनों मैं लाहौर में सातवीं कक्षा का छात्र था। एक दिन हम लोग स्कूल में थे। उसी समय हेडमास्टर साहब आए और बोले कि हमें पता चला है कि यहां पर कुछ मुसलमान इकट्ठे हुए हैं और वे लोग लड़ाई करने वाले हैं। इसलिए स्कूल का गेट बंद किया जा रहा है। सभी बच्चे अपनी-अपनी जगह पर ही रहेंगे। कोई बाहर नहीं जाएगा। जिसके घर से कोई लेने आएगा, वही जा सकता है। उनकी इस बात से सारे बच्चे घबरा गए। सोचने लगे कि अब क्या होगा, हम लोग घर कैसे जाएंगे। मेरे घर से स्कूल आने में कई मुस्लिम मुहल्ले पड़ते थे। इसलिए मैं ज्यादा ही परेशान हुआ, लेकिन कुछ घंटे बाद मेरे पिताजी एक तांगा लेकर मुझे लेने आ गए। उन्होंने मुझे समझाया कि रास्ते में कुछ नहीं बोलना है और चुपचाप घर जाना है। जब हमारा तांगा लाहौर के मुस्लिम मुहल्ले से निकल रहा था तब कुछ मुसलमान एक दूसरे तांगे पर बैठकर हमारा पीछा करने लगे। वे हमें रुकने के लिए कह रहे थे। पिताजी ने तांगे वाले से कहा कि चाहे जो हो जाए, रुकना नहीं है और तेज भागना है। इससे मैं घबरा गया। इसके आगे भी और एक मुस्लिम मुहल्ला था। पर तांगे वाले ने बहुत ही साहस से काम लिया और हम दोनों को घर पहुंचा दिया। फिर लाहौर में ऐसा माहौल बना कि कभी स्कूल नहीं जा पाया। माहौल ऐसा बिगड़ा कि वहां हिंदुओं का रहना संभव नहीं रहा। उस वक्त हमारे एक रिश्तेदार हरिद्वार में रहते थे। इसलिए हमारे परिवार के सभी लोग लाहौर से हरिद्वार के लिए निकल गए। बाद में समाचार मिला था कि लाहौर में श्यामली दरवाजे की ज्वलेरी की दुकानें और मकान लूट लिए गए हैं। ■

जगदीश भसीन
मंडी बहावली, गुजरात, पाकिस्तान

'शवों के बीच सुबकते लोग'

1947 में मैं 11 साल का था और पांचवीं में पढ़ रहा था। मेरे घर के पास ही संघ की शाखा लगती थी। मैं सायं शाखा में जाता था। 14 अगस्त, 1947 से ही कत्लेआम शुरू हो गया। नरसंहार होने लगा। मुसलमानों ने हमारे कुओं में जहर डालना शुरू कर दिया। यही नहीं, फसलों में भी जहर डाल दिया। 'अल्लाह-हू-अकबर' के नारे के साथ हिंदुओं के घरों को लूटा जाने लगा। हमारे परिवार के लोग सेना में थे। उन्होंने हमारे लिए बस भेजी, ताकि हम लोग उस पर सामान रखकर निकल सकें। हम लोग रेलवे स्टेशन पहुंचे और रेलगाड़ी से गुजरांवाला गए।

देर रात गाड़ी पर हमला हुआ। जो मिला उसी को मार दिया गया। हम लोग दुबके रहे। डर से कुछ बोला भी नहीं जा रहा था। इसी बीच कुछ सुरक्षाकर्मी आए और उन्होंने हमारी जान बचाई। रातभर गाड़ी वहीं खड़ी रही। लोग शवों के साथ और खून से लथपथ होकर अंदर बैठे रहे और बाहर सेना के जवान खड़े थे। दूसरे दिन सुबह 10 बजे 20 सैनिकों की सुरक्षा में हमारी गाड़ी चली और लाहौर पहुंची। लाहौर में भी वही स्थिति थी, लेकिन सैनिकों के कारण मुसलमान हमला नहीं कर सके। गाड़ी लाहौर से शाम को 4 बजे चली और हम करतारपुर पहुंचे। करतारपुर में जीटी रोड के किनारे एक स्कूल था, उसी में हम लोगों को ठहराया गया। दूसरे दिन हम लोगों को अंबाला भेज दिया गया।

हमारे बड़े भाई बैंक में प्रबंधक थे। भारत आने पर उनकी नौकरी लग गई। उनको प्रतिदिन 3 रुपए मिलते थे। फिर पिताजी भी कुछ काम करने लगे। धीरे-धीरे परिस्थितियों से तालमेल बैठा और परिवार संभला। ■

राजकुमारी
सरगोधा, पाकिस्तान

'सब्जियों में जहर'

वह बहुत ही भयावह दौर था। लोग अपने घरों में बंद हो गए थे। 1947 में मैं पांचवीं में पढ़ रही थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक दिन हमारे घर मेरे मामाजी आए और कहने लगे कि हालात ठीक नहीं हैं। यहां से चलो और वे हम लोगों को अपने घर ले गए। कुछ दिन वहीं रहे। माहौल ठीक होने के बाद वापस आए, लेकिन 10 दिन के अंदर ही स्थिति ऐसी बनी कि हम लोगों को सरगोधा में ही बने एक शिविर में ले जाया गया। इसके बाद हम लोग कभी अपने घर नहीं लौट सके।

शिविर में बहुत ही बुरा हाल था। लोग डर के मारे सोते तक नहीं थे। इसी बीच एक दिन वहां के लोगों ने कहा कि कोई सब्जी मत खाना, क्योंकि उसमें जहर का टीका लगाया गया है। बताया गया कि कुछ मुसलमान शिविर पर हमला करने आए थे। इसमें वे सफल नहीं हुए तो उन्होंने सब्जियों में जहर का टीका लगवा दिया और उसे शिविर में भेज दिया। यह तो अच्छा हुआ कि इसकी जानकारी हिंदुओं को हो गई और हम लोग बच गए। डर के माहौल में शिविर में कुछ दिनों तक रहे। फिर एक दिन कहा गया कि आज हिंदुस्थान के लिए गाड़ी चलने वाली है, सभी लोग फटाफट यहां से निकलें। लोग निकलकर स्टेशन पहुंचे। कुछ देर बाद गाड़ी भी चल पड़ी, लेकिन लाहौर में हमारी गाड़ी कई घंटे तक खड़ी रही। इसी बीच जोर-जोर से हल्ला हुआ कि सभी लोगों को मार दो। डर के मारे हम लोगों ने खिड़कियां भी बंद कर लीं। खैर हमारी गाड़ी चली और अटारी पहुंची। वहां कुछ दिनों तक तंबू में रहे। फिर अंबाला आ गए। यहां पिताजी ने मजदूरी करके हम लोगों को पाला। कुछ समय बाद दिल्ली आ गए। पिताजी की स्थिति देखी नहीं जाती थी। पाकिस्तान में पिताजी ईंटों का भट्ठा चलाते थे। मेरी माताजी सोने के गहने पहना करती थीं। लेकिन बंटवारे से पूरा परिवार हर चीज का मोहताज हो गया। ऐसा और किसी के साथ न हो। ■

बद्रीनाथ शर्मा
लच्छीपुर, गुजरांवाला, पाकिस्तान

'शवों के बीच से सफर'

मैं केवल 15 वर्ष का था, जब हमारे परिवार को अपनी जन्मभूमि छोड़कर रातोरात भागना पड़ा। जुलाई, 1947 में माहौल बिगड़ गया था। हम पर कई बार हमले हुए। अगस्त, 1947 के प्रारंभ में तो स्थिति और भी खराब हो गई। इसके बाद गांव के सभी हिंदुओं ने पलायन करना ही ठीक समझा। 8 अगस्त, 1947 को हम लोगों ने गांव छोड़ दिया। पैदल ही निकल पड़े। रास्ते में लाशें ही लाशें नजर आ रही थीं। हम लोग शवों के बीच से ही सफर कर रहे थे। सोच रहे थे कि जल्दी से गुजरांवाला पहुंच जाएं। वहां से लाहौर जाने वाली रेलगाड़ी में चढ़े। रास्ते में हमले होते थे तो पूरी गाड़ी में चीख-पुकार मच जाती थी। दूसरे दिन लाहौर पहुंचे। पूरे दिन और पूरी रात लाहौर स्टेशन पर हमारी गाड़ी खड़ी रही। बार-बार मुसलमान आते और गाड़ी पर हमला करते। रात को तो लगा कि अब शायद जिंदा नहीं बचेंगे, लेकिन कहते हैं कि मारने वाले से ज्यादा ताकतवर बचाने वाला होता है।

भगवान की ऐसी कृपा हुई कि सुबह चार बजे तेज वर्षा होने लगी। भीड़ तितर-बितर हो गई और मौका देखकर चालक ने गाड़ी चला दी। सुबह छह बजे हम लोग अटारी पहुंच गए। वहां से लोग अलग-अलग स्थानों के लिए निकल गए। कोई कहीं चला गया, तो कोई कहीं। हमारा परिवार जालंधर पहुंच गया। इसके बाद दिल्ली आ गया। पास में पहने हुए कपड़ों के अलावा और कुछ नहीं। राहत शिविर में खाना मिल जाता था। हमारे परिवार में सात लोग थे। बाद में हम लोगों ने कुछ काम करना शुरू किया। बरसों बाद ठीक से खाना और कपड़े मिले थे। जब उन दिनों को याद करते हैं, तो आंखें डबडबा जाती हैं और गला रुंध जाता है। ■

गणपतराय सतीजा
नौतक, मियांवाली नगर, पाकिस्तान

'चाचा को रेत में जिंदा दफना दिया'

बहुत ही भयानक दौर था वह। मैं सरकारी स्कूल में चौथी कक्षा में पढ़ता था। पाकिस्तान बना तब मुसलमान हिंदुओं को लूटने और मारने लगे। उस समय मेरे चाचाजी 30 साल के थे। मुसलमानों ने उनको एक दिन दोपहर के समय पकड़ लिया और बोला कि मुसलमान बन जाओ तो तुम्हें छोड़ देंगे। चाचाजी ने कहा कि मैं मुसलमान नहीं बनूंगा। इसके बाद उन्हें तपती रेत के अंदर जिंदा दबाकर मार दिया गया। एक दिन कुछ मुस्लिम हमलावर आए और उन्होंने सैकड़ों हिंदुओं को काट दिया। मेरे परिवार के लोग ऐसी जगह छिपे थे कि वे हमें देख नहीं पाए। इसलिए हम बच गए। हमलावरों ने पीर की हवेली के दरवाजे भी खुलवाए और ज्यादातर हिंदू महिलाओं को अपने साथ ले गए। उस दिन बहुत हिंदू मारे गए। जो बचे, वे नंगे पांव और खुले बदन तहसील बक्खर पहुंचे। वहां संघ के स्वयंसेवकों ने हमारी बड़ी मदद की। बक्खर में एक महीना रहे। फिर मियांवाली नगर लाए गए। यहां भी हम पर हमले हुए।

अंत में भारत आने के लिए एक दिन रेलगाड़ी में बैठे। रास्ते में गाड़ी में भी काट-मार की गई। हम लोगों के आगे जो गाड़ी भारत जा रही थी उसमें कोई भी जिंदा नहीं बचा था। हमारी गाड़ी में केवल एक चौथाई लोग जिंदा बचे थे। दो दिन बाद किसी तरह जब अटारी पहुंचे तब जान में जान आई। दो दिन के भूखे-प्यासों को अटारी में खाना मिला। यहां से जालंधर कैंप में आए। फिर कुरुक्षेत्र शिविर भेज दिया गया। मेरे पास उस समय एक पैसा नहीं था। कई साल तक कंगाली की हालत रही। बाद में अपनी मेहनत से घर-द्वार बनवाया और बच्चों को भी पढ़ाया। आज बच्चे अमेरिका में हैं। ■

अमूल दूध पीता है इंडिया

32g
प्रोटीन

₹59* / 1 L

अमूल गोल्ड

500mL: ₹ 30* | 16g प्रोटीन

*एमआरपी (सभी टैक्स शामिल), ट्रांसपोर्टेशन और कूलिंग चार्जेस शामिल. शर्तें लागू.
पूछताछ/उपलब्धता के लिए कृपया संपर्क करें: दिल्ली: 011 - 28524336/ 37;
गाज़ियाबाद: 0120-2673093, 7827255377; गुड़गांव: 9313125999, हरियाणा
अप-कंट्री: 9099652120

Amul
The Taste of India

जीवन प्रकाश कालरा
हस्सूबेलाल, झंग, पाकिस्तान

'कई दिन भूखे रहे'

बंटवारे के वक्त मैं 11 साल का था और हस्सूबेलाल मदरसे (स्कूल को मदरसा ही कहा जाता था) में कक्षा 5 में पढ़ता था। मुझे याद है वह 1947 का सितम्बर महीना था। जबरदस्त खौफ का माहौल था। मैं भूला नहीं हूं कि कैसे हजारों महिलाएं, पुरुष, बुजुर्ग अपने बच्चों को कंधे पर बैठाए और हाथों में पोटलियां थामे तपती दोपहरी में पैदल 6 मील चले थे। मिलिट्री के संरक्षण में वहां से निकालकर बिना छत वाली मालगाड़ियों में बैठाया गया। गाड़ी अटारी पहुंचकर खड़ी हो गई। वहां संघ के स्वयंसेवकों ने समाज सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। लोगों की हर तरह से मदद की। 2-3 दिन गाड़ी वहीं खड़ी रही। न खाने को कुछ था, न पीने को पानी। छोटे बच्चे प्यास से बिलख उठते थे। भारत आकर हम लोग टैंटों वाले कैंप में रहे, कई महीने। मुझे याद है गुजारे के लिए मेरे बड़े भाई आटे का हलवा बनाकर उसे परात में रखकर सड़क पर बेचने जाते थे। जिला मरदान, तहसील खानेवाल से आए हमारे चाचाजी के बेटे धरमजी दास वहां दुकान चलाते थे। कुछ महीने बाद हम लोग कुरुक्षेत्र आ गए। वहां भी बहुत बड़ा कैंप लगा हुआ था। वहां हम करीब 6 महीने रहे। वहीं राशन मिलता था। दाल, चावल, आटा। दो दो, तीन तीन परिवार एक टैंट में रहते थे, सब लकड़ी के चूल्हों पर खाना बनाते थे। हमारे एक पहचान वालों ने कुरुक्षेत्र के एक स्कूल में हम भाई-बहन का दाखिला करा दिया। झंग में तो मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता था, लेकिन यहां मेरा चौथी कक्षा में दाखिला कराया गया। कुरुक्षेत्र से 6 महीने बाद हम कैथल आ गए, जहां हमें सरकार की तरफ से रहने को एक मकान दिया गया था। दसवीं तक वहीं पढ़ने के बाद, मैंने बढ़ईगीरी की। ■

स्वर्णजीत सिंह
गुजरांवाला, पाकिस्तान

'गांव पर हुआ उन्मादी हमला'

बंटवारा होने के बाद, सितम्बर 1947 की बात है। मैं करीब 8 साल का था। हम गुजरांवाला में रहा करते थे, हमारे घर के पास मुसलमानों के भी घर थे। हमारा करीब 200 गज का पक्का घर था, पास में 300 गज की जगह पर हमारी दुकानें थीं और उससे कुछ दूर, करीब 500 गज के प्लाट में हमारी आरा मशीन चलती थी। बंटवारे के दिनों में गुजरांवाला के हमारे गांव में रहने वाले हमारे परिचित एक सूबेदार ने लाहौर में अपने बेटे कर्नल जसंवत सिंह को फोन करके बताया कि हमारे यहां हालात खराब हो चले हैं, आसपास के गांव के हिन्दू–सिख हमसे रक्षा की उम्मीद में काफिले बनाकर हमारे गांव में डेरे जमा रहे हैं। मुसलमानों के हमलों का खतरा बढ़ता जा रहा है। अगले दिन कर्नल जसवंत ने हवाई जहाज से हमारे गांव के उपर दो चक्कर काटे और बम गिराकर हमारे गांव के बाहर नहर पर बना पुल उड़ा दिया, क्योंकि उसी से होकर दंगाई मुसलमान हमारे यहां आकर फसाद करते थे। अगले दिन कर्नल साहब सेना के 8-10 ट्रक लेकर हमारे गांव आए और हम सब तहसील पहुंचे। कुछ दिन ऐसे दसका के कैंप में कटे, फिर सभी को स्टेशन ले जाया गया। हमारी गाड़ी के मुसलमान ड्राइवर ने रावी पुल से पहले गाड़ी रोक दी। अंधेरा हो चुका था। खतरा बढ़ने के डर से सब लोग पटरियों के सहारे पैदल आगे बढ़ने लगे। हमारे पैरों के नीचे कटी लाशें पड़ी थीं। हम जैसे तैसे डेरा बाबा नानक पहुंचे। अगले दिन अमृतसर से सईदोपुरा पहुंच गए। आगे हम वहां से हिसार आ गए। उसके बाद हमारा परिवार कुछ महीने जीवननगर में रहा। फिर 1952 में हम लोग दिल्ली आ गए। यहां आरामबाग में टैंट लगाकर रहे। बहुत–बहुत मुश्किलों से गुजरे हम। ■

सादा सिंह
महार, सियालकोट, पाकिस्तान

'बच्चे भूख से तड़प उठे'

भारत का विभाजन हो चुका था। बदली हुई परिस्थिति में क्या करना है, इसके लिए 22 अगस्त, 1947 को कस्बे के लोग बैठक कर रहे थे। उसी समय अचानक मुसलमानों ने हमला कर दिया। मुसलमान पुरुषों को बुरी तरह पीट रहे थे, कुछ महिलाओं को पकड़ रहे थे और कुछ लूटपाट कर रहे थे। मुसलमान अनेक महिलाओं को अपने साथ ले गए। वे महिलाएं फिर कभी नहीं लौटीं। उसी दिन हम सभी घर छोड़कर भारत की ओर पैदल ही बढ़े। हमारा कस्बा भारत की सीमा से सिर्फ छह मील दूर था, लेकिन सीमा तक पहुंचने में दो दिन लग गए। रास्ते में भी हमले हुए। बच्चे भूख से तड़प रहे थे। दो दिन तक किसी को खाना नहीं मिला। अनुमान लगा सकते हैं कि किन कठिनाइयों को पार करके हमारा काफिला अमृतसर पहुंचा होगा। 15-20 दिन वहां रहे। इसके बाद राजपुरा और भठिंडा में रहे। 1948 के अंत में हमारा परिवार दिल्ली आ गया।

मेरी पांच बहनें थीं। तीन की शादी पाकिस्तान में ही हो गई थी। मेरी दो बहनें, मैं और मेरे माता-पिता साथ आए थे। मेरी तीनों बहनें भी ससुराल वालों के साथ भारत के लिए चली थीं। दो तो आ गईं, लेकिन सबसे बड़ी बहन नहीं आ सकीं। वह अपने घर वालों के साथ जम्मू के लिए निकली थीं, लेकिन रास्ते में मुसलमानों ने घेरकर मार दिया। पिताजी लकड़ी का कारोबार करते थे। हमारा परिवार बहुत सुखी था, बड़ा घर था, लेकिन मजहबी उन्माद ने सब कुछ खत्म कर दिया। उन दिनों मैं नौंवी में पढ़ता था। मुसलमानों के साथ दोस्ती भी थी, लेकिन जब भारत का बंटवारा हो गया तो वे लोग बिल्कुल बदल गए। वाहे गुरु से यही अरदास है कि फिर ऐसी स्थिति पैदा न हो। ■

चंद्रकला कपूर
हजारा, पेशावर

सब कुछ लूट लिया

एक शाम की बात है। मुझे छोड़कर घर के सभी लोग गुरुद्वारे गए हुए थे। अचानक मोहल्ले में धुआं उठने लगा और शोर मचा कि दुकानों में आग लगाई गई है। इसी बीच हमारे परिवार के सभी लोग गुरुद्वारे से घर आ गए। कहने लगे कि सामान बांधो। सुबह यहां से निकलना ही पड़ेगा। यहां रहना खतरे से खाली नहीं है। सब सामान बांध ही रहे थे कि मुसलमानों का झुंड आया और लूटपाट करने लगा। फिर हिंदू और सिखों को चुन-चुन कर मारा जाने लगा। वह रात बहुत ही भयावह थी। एक-एक पल काटना भारी पड़ रहा था।

मोहल्ले के लोग कई दिनों तक डर के माहौल में रहे, फिर घर-बार छोड़कर रावलपिंडी पहुंचे। कुछ दिन यहां रहने के बाद हम दूसरी जगह चलते बने। और दुख सहते धीरे-धीरे जालंधर आ पाए। जब भी गांव का मंजर याद करते हैं तो दिल दहल उठता है। घर के साथ जीवन भर की सारी कमाई छोड़कर खाली हाथ पाकिस्तान से भारत आए। बहुत मेहनत करके सब खड़ा किया था। वह दर्द आज भी मन को सालता है।

बंटवारे के समय मेरी शादी हो चुकी थी। उस समय हमारी दो लड़की और एक लड़का था। मेरा बड़ा और संपन्न परिवार था, लेकिन बंटवारे ने हम सबको दूर कर दिया। कई साल तक एक जगह से दूसरी जगह भटकते रहे। हर तरीके से संकट था। कई बार जीवन बोझिल लगने लगता था।

आज जब उन दिनों को याद करती हूं तो दिल भारी हो जाता है। हिन्दू और सिख समाज ने बड़ी पीड़ा झेली उस समय। पता नहीं कितनों को मार दिया, काट दिया। कोई हमारी सुनने वाला नहीं था। ■

सतनाम सिंह
दंदियां–सबोके, गुजरांवाला, पाकिस्तान

'पांच दिन पानी में खड़े रहे'

मैं करीब 11 साल का था, छठी कक्षा में पढ़ता था। मुस्लिम लीग की जिद पर 15 अगस्त, 1947 को देश बंट चुका था। ऊहापोह में करीब एक महीना निकल गया, हालात और खराब हो गए।

हमारा घर बहुत बड़ा था। हालात तो कई दिनों से बिगड़ रहे थे, लेकिन जब पड़ोस के गांव वाले हमारे यहां आकर छुपे तब, हमारे परिवार ने भी थोड़ा-बहुत पैसा साथ लेकर निकलने का फैसला किया। घर में दादीजी, माताजी-पिताजी और मेरी छोटी बहन थी। नहर किनारे चलते हुए हमने शाम को रावी से ठीक पहले गांव के बाहर डेरा डाला। काफिले में हजारों लोग इकट्ठे हो चुके थे। अगले दिन रावी पार किया। उससे पहले मुसलमानों के एक जत्थे ने काफिले पर हमला तो किया था, पर हमारे लोगों ने बहादुरी से उनका मुकाबला करके उन्हें भगा दिया। रावी पार कर कुछ लोग तो आगे बढ़ गए, लेकिन हम जैसे बहुत से इस तरफ फंसे रहे। रातभर बारिश के कारण पानी चढ़ गया था। हम जिस टापू जैसी जगह पर टिके थे, वहां भी पानी भर गया। पांच दिन हमने कमर तक पानी में खड़े रह कर काटे। पिताजी ने एक बजरे वाले को हम बच्चों को नदी पार कराने के लिए पैसे दिए।

परिवार की महिलाओं और बच्चों को सामान का एक टीला जैसा बनाकर उस पर बैठा दिया गया। बारिश थमने के बाद एक दिन हवाई जहाज ने खाने का सामान, रोटियां गिराईं। पानी घटने पर नदी पार कर पैदल हम अमृतसर आए। साथ का सब सामान जाता रहा, पैसे भी लगभग खत्म हो चुके थे। अमृतसर में लोगों ने हम जैसों के लिए घर-घर लंगर खोले हुए थे। कुछ दिन बाद लुधियाना के परिचितों ने बुला लिया। कुछ महीने बाद देहरादून चले गए। कुछ साल बाद हम दिल्ली आ गए। ■

चंद्रभान मनचंदा
बलूचिस्तान, पाकिस्तान

'जान बचाने आए हिन्दुस्थान'

बलूचिस्तान में फोर्ट सेंडेमन के छावनी इलाके के एक हिस्से का शहरीकरण करके वहां बस्ती बसाई गई थी, जहां हमारा घर था। वहां 50-60 हिन्दू परिवार ही रहते थे। पिताजी की आटा चक्की थी। हम संपन्न थे और समाज में मान था। मेरा जन्म 15 सितंबर, 1938 को हुआ था। बंटवारे के समय मैं 9 साल का था, सरकारी स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़ता था। मार्च, 1947 में बंटवारे के शोर के बीच डेरा इस्माइल खान में गुरुद्वारा और हिन्दुओं की दुकानों को जलाने की एक बड़ी घटना हुई थी। इससे मेरी मां बहुत घबरा गईं। उन्होंने ही परिवार और रिश्तेदारी में कहना शुरू किया कि माहौल खराब हो रहा है, हमें यहां से निकलना चाहिए। एक दिन मुस्लिम लड़के मुझे मारने के लिए पीछे पड़ गए। जून-जुलाई की बात है। पिताजी का मन नहीं था, पर मां की जिद पर कुछ जरूरी सामान दो ट्रंक में लेकर हम करीब 250 मील दूर डेरा गाजी खान पहुंचे। वहां करीब दो-ढाई महीने रहे। फिर हम 11 परिवार ट्रेन से जालंधर आ गए। उस समय तक उतनी मारकाट शुरू नहीं हुई थी। हम तीन परिवारों ने ग्वालियर बसने का मन बनाया था, पर गुड़गांव स्टेशन पर कुछ परिचित पंजाबी परिवारों के कहने पर गुड़गांव में उतर गए।

गुड़गांव में मेरा स्कूल में दाखिला कराया गया। पिताजी ने परचून, अनाज की दुकान खोली। उससे पहले पैसे की तंगी इतनी थी कि मैं टॉफियां बेचकर कुछ पैसे की मदद करता था। 2006 में मैं लाहौर, रावलपिंडी, पंजा साहिब, करतारपुर आदि पांच गुरुद्वारों के दर्शन के लिए गया था। बड़ा मन था कि डेरा गाजी खान में अपने जन्मस्थान को देखूं, पर वहां हालात सामान्य न होने के कारण सरकार ने जाने की इजाजत नहीं दी। ■

ICFAI UNIVERSITY

The ICFAI University, Dehradun

UGC Approved and NAAC Accredited

ADMISSIONS OPEN - 2022

E-LEAD CERTIFIED
QS I-GAUGE

- B.Tech | B.Tech (LE)
- B.Sc (Hons.)Maths
- B.Sc Data Science
- BCA
- MCA
- M.Tech
- Diploma (Mech./ Civil)
- BBA
- BBA (FIA)
- B.Com (Hons.)
- MBA
- BA (Hons.) Economics
- B.Ed.
- MA (Education)
- BBA-LL.B (Hons.)
- LL.B.
- BA-LL.B (Hons.)
- LL.M.
- Ph.D (Full-time / Part-time)
  (Mgmt. | Sci. & Tech. | Edu. | Law)

Highest Pay Package ₹ 12.4 Lakhs per annum

▸ MERIT SCHOLARSHIPS: Based on performance in Class XII & Semester-wise Performance in respective programs ▸ **Fee Concession** to Domicile Students of Uttarakhand

HIGHLIGHTS

◆ Highly qualified faculty, most of them are Ph.Ds with vast experience ◆ Smart board enabled classes with top of the line live teaching infrastructure ◆ A vast array of extra co-curricular activities such as music, arts, clubs, debating etc. ◆ Beautiful landscaped campus surrounded by hills and jungles ◆ Fully Wi-fi enabled campus ◆ Hi-Tech Innovative Labs ◆ Well stocked Digitalized library

RANKINGS

ICFAI Tech School
- 1st among top Engg. Colleges of Uttarakhand - CSR-GHRDC, 2021
- 'AA+' among Deemed/ Central/ State Pvt. Universities in Uttarakhand - Career 360, 2021

ICFAI Business School
- 1st in Uttarakhand, 17th in North India among the Best B-Schools -IIRF, 2021
- 17th in A++ Category in all India & 7th in North Zone -Silicon India B-School Rankings, 2021
- 13th among top B Schools of Eminence - CSR-GHRDC, 2021

ICFAI Law School
- 1st in Uttarakhand & 13th among Top Law Colleges (Pvt.) in India- IIRF, 2020-21.
- 5th among Top Leading Law Schools of Super Excellence(Govt. & Pvt.Law Schools)- CSR-GHRDC, 2022
- 10th among Top Pvt. Law Colleges of India & Rated AAA+ in Uttarakhand- Career 360, 2022

ICFAI University, Dehradun
- 1st among Private Universities in Uttarakhand - Education World University Rankings, 2022.
- 9th in pursuit of excellence towards 'Best Institute for Campus Life' (A1 Band) - MHW Ranking, 2021.
- 13th in the Private University (Premier Category)- IIRF, 2020-21.
- 36th among India's Best Universities - General (Private) - India Today, 2021

/iudehradun.official

For details & eligibility, please visit: www.iudehradun.edu.in 9007971003 Toll-free: 1-800-120-8727

Campus: Rajawala Road, Central Hope Town, Selaqui, Dehradun.
IUD City Office: # 5, 1st Flr, MID town Tower, Above Patanjali Mega Mart, Opp.HP Petrol Pump, GMS Road, Dehradun

संतराम
गांव – 419, झंग, पाकिस्तान

दादी को कफन तक नहीं मिला

उन दिनों मैं कक्षा छह में पढ़ता था और 13 साल का था। हमारे गांव का नाम था-419। आसपास में 418, 420 और 421 के नाम से गांव थे। उन दिनों उस इलाके में गांवों को ऐसे ही जाना जाता था। हमारा गांव जिला मुख्यालय झंग से करीब 5 किलोमीटर दूर था। गांव में केवल आठ हिंदू परिवार थे, बाकी मुसलमान। पिताजी किराने की दुकान चलाते थे। 400 गज में घर था और परिवार सुखी-संपन्न। मैं अकेला भाई और चार बहनें थीं। सब कुछ ठीक चल रहा था। दिक्कत तब होने लगी जब तय हो गया कि भारत को बांटकर मुसलमानों के लिए पाकिस्तान के नाम से एक अलग मुल्क बनेगा। इसके बाद गांव में ऐसा माहौल बना कि हिंदू परिवार घर में कैद हो गए। पड़ोस के मुसलमानों ने ही हमें लूट लिया। एक पैसा नहीं छोड़ा। जो पहन रखा था, उसी में सभी हिंदू परिवार गांव से निकल गए।

दादी बूढ़ी थीं। उनसे चला नहीं जा रहा था। पिताजी उन्हें कंधे पर लेकर चल रहे थे। जान बचाते हुए हम लाहौर स्टेशन पहुंचे। इस हालत से दादी बहुत दुःखी हुईं। इस दुःख को वे झेल नहीं पाईं और लाहौर स्टेशन पर ही उनकी मौत हो गई। हम लोग उन्हें एक कफन तक नहीं दे पाए। स्टेशन पर गोरखा हिंदू सैनिक तैनात थे। दादी की लाश को देखकर सैनिक कहने लगे कि इन्हें दफना दो, लेकिन पिताजी ने कहा कि हमारे समाज में दफनाया नहीं जाता। फिर सैनिकों ने ही रेलगाड़ी की कुछ सीढ़ियां दे दीं। उससे स्टेशन पर ही दादी का अंतिम संस्कार किया गया। इसका कुछ मुसलमानों ने विरोध भी किया, पर सैनिकों के सामने उनकी एक न चली। जब तक लाश पूरी तरह जली नहीं, हम वहीं बैठे रहे। अंत में अस्थियां चुन कर अमृतसर के लिए ट्रेन पकड़ी। ■

हरवंशलाल पाहवा
सिकंदराबाद, पाकिस्तान

सैनिकों ने दी सांस

उन दिनों मुल्तान जिले की तहसील शूजाबाद में सिकंदराबाद एक छोटी सी जगह थी। पिताजी सब्जी की आढ़त चलाते और लकड़ी का भी कारोबार करते। वहीं मेरा जन्म 1942 में हुआ। एक दिन कुछ बच्चों के साथ खेल रहा था कि अचानक घर में भगदड़ मच गई। घर वालों ने कहा कि अब यहां नहीं रहना है। सब सामान समेटने लगे। फिर एक बैलगाड़ी में हम बच्चों को बैठाया गया और गाड़ीवान से कहा गया कि जितनी तेज चला सकते हो, चलाओ। कुछ घंटों बाद हम शूजाबाद पहुंचे। नहर के किनारे एक शिविर था। हमें वहीं रखा गया। एक रात किसी ने नहर का पानी शिविर की ओर छोड़ दिया। इससे पूरी जमीन गीली हो गई। जो भी थोड़ा-बहुत सामान था, गीला हो गया। दिक्कतों के बावजूद कुछ दिन वहीं रहे।

कुछ दिन बाद हमें शूजाबाद रेलवे स्टेशन ले जाया गया और एक माल गाड़ी में बैठाया गया। वह गाड़ी सिकंदराबाद, मुल्तान के रास्ते आगे बढ़ी। रास्ते में कई बार मुसलमानों ने गाड़ी को रोका, लेकिन गाड़ी में तैनात गोरखा सैनिकों ने उन्हें डरा-धमकाकर भगाया। कभी बल प्रयोग भी किया। फिर भी दो जगह मुसलमानों ने रास्ते में गाड़ी से कुछ लोगों को खींच लिया। उनमें एक मेरे भाई भी थे। हालांकि सैनिकों ने तुरंत कार्रवाई कर उनकी जान बचाई। उस वक्त की स्थिति को देखकर सभी रोने लगते थे। हर कोई अपने इष्ट देव को याद करता था कि हे प्रभु! जान बचा लो। प्रभु की कृपा ही रही कि हमले के बाद भी हमारी गाड़ी के सभी लोग सुरक्षित रहे। तीन दिन बाद हमारी गाड़ी फिरोजपुर (पंजाब) पहुंची। वहां से हमें फिरोजपुर झिरका (हरियाणा) लाया गया। बाद में हम गुड़गांव और उसके बाद दिल्ली आ गए। ■

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आदिजाति विकास विभाग, गुजरात सरकार गांधीनगर

माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेंद्र मोदी जी

माननीय मुख्यमंत्री
श्री भूपेंद्र भाई पटेल जी

माननीय केबिनेट मंत्री
श्री नरेश पटेल जी

माननीय राज्य मंत्री
आदिजाति विकास विभाग
श्रीमति निमिषाबेन मनहरभाई सुथार

वनबंधु कल्याण योजना-1 के अंतर्गत पिछले डेढ़ दशक में 1 लाख करोड़ से भी अधिक राशि के हुए विकासोन्मुखी कार्यः

- प्रतिवर्ष 16 लाख आदिजाति विद्यार्थियों को दी जा रही 600 करोड़ रुपए की छात्रवृति
- 200 करोड़ के खर्च से शुरू किया जाएगा आदिजाति क्षेत्रों की आश्रम शालाओं का नवीनीकरण
- 6 लाख से अधिक आदिजाति लोगों को मिला पक्का घर
- 5 लाख से अधिक आदिवासी परिवारों को मिली नल से जल की सुविधा
- अदिजाति क्षेत्र की और 11 लाख एकड़ भूमि को मिला सिंचाई का लाभ
- आदिवासी क्षेत्रों में बॉर्डर विलेज योजना, न्यू गुजरात पैटर्न, हलपति जाति के लोगों को बुनियादी सुविधा तथा आदिम समूह बुनियादी सुविधा के अंतर्गत प्रतिवर्ष लगभग 600 करोड़ रुपए के खर्च से विकास कार्य
- 111 करोड़ रुपए के खर्च से 500 आदिजाति गांवों को मिलेगी मोबाइल नेटवर्क की सुविधा
- आगामी 5 वर्षों में वनबंधु कल्याण योजना के अंतर्गत 1 लाख करोड़ रुपए का आयोजन

गुजरात के बहुलक आदिजाति विस्तार 14 प्रायोजन विस्तार में विस्तारित हैः

1. पालनपुर-बनासकांठा
2. खेडब्रह्म-साबरकांठा
3. दाहोद-दाहोद
4. गोधरा-पंचमहल
5. छोटा उदयपुर-छोटा उदयपुर
6. राजपीपला-नर्मदा
7. भरुच-भरुच
8. मांडवी-सूरत
9. सोनगढ़-तापी
10. वांसदा-नवसारी
11. वलसाड-वलसाड
12. आहवा-डांग
13. मोडासा-अरवल्ली
14. लुणावाडा-महिसागर

गुजरात में उमरगाम से लेकर अम्बाजी तक पूर्व पट्टी के आदिजाति विस्तार में कुल 53 तालुकाओं का समावेश होता है जिसमें अनुसूचित जनजाति की बस्ती 89.17 लाख है जिसके ऊपर गुजरात सरकार ने आदिजाति के सर्वांगी कल्याण कार्यक्रम वनबधु कल्याण योजना कार्यालयीत है।

- शिक्षण की गुणवता और उच्च अभ्यास पर भार
- आदिजाति विस्तार का आर्थिक विकास तीव्रता से हो
- सभी के लिए आरोग्य
- बिजली की सार्वत्रिक उपलब्धता
- सभी के लिए घर
- पीने के लिए पानी
- सिंचाई
- बारामासी रास्ते
- शहरी विकास

75 वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छक आदिजाति विकास विभाग

गर्भवती महिलाओं को भी मारा

बी.एल.शर्मा 'प्रेम' एवं कृष्णा शर्मा
फिरोजपुर (अब पाकिस्तान में)

बंटवारे की त्रासदी सात दशक बाद भी भूले नहीं भूलती। जब हिन्दू मां-बहनों पर खुलेआम आततायी मुसलमानों द्वारा अत्याचार किया जा रहा था, घर-दुकान, व्यवसाय को तहस-नहस करके परिवार के परिवार मौत के घाट उतार दिए जा रहे थे। यहां तक कि मुसलमानों ने गर्भवती महिलाओं तक को नहीं छोड़ा। उनके गर्भ पर वार करके पेट से बच्चा निकालकर सूली पर टांग कर उसकी हत्या की गई। ऐसी निर्दयता भला जीते-जी कौन भूल सकता है!

1940 में मैं संघ का स्वयंसेवक बन गया था। हमारे इलाके में अफरातफरी का माहौल था। हिन्दू पलायन कर रहे थे। पाकिस्तान के मुसलमान स्वयंसेवकों को लक्षित करके हमले कर रहे थे। हालात को समझकर मैंने अपने क्षेत्र के 15 सौ हिन्दुओं को साथ लेकर भारत जाने का निश्चय किया। रास्ते में भी हम पर हमले हुए। ■

'आते, काटते और चले जाते'

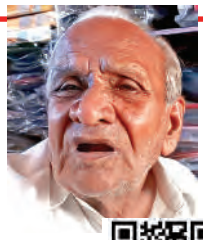

बिहारीलाल सेठी, लालामूसा, पाकिस्तान

उम्र के इस पड़ाव पर थोड़ा ऊंचा भले सुनता हूं, लेकिन मेरे दिमाग में बंटवारे के दिनों की यादें शीशे सी साफ हैं। वे हादसे भुलाए भी नहीं जा सकते। हम लोगों ने जो पीड़ा झेली, उसे शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल है। अचानक बंटवारे का ऐसा शोर मचा कि एक भय का माहौल बनता चला गया। उस समय कत्लेआम, लूटपाट और महिलाओं के साथ बदसुलूकी की घटनाएं सुनकर रूह कांप उठती थी। पता चलता कि फलां गांव में कट्टर मजहबियों के झुंड थे जो हिंदुओं को लूटकर, काटकर चले जाते थे। जब डर का माहौल ज्यादा बढ़ने लगा तो हमारे परिवार के बुजुर्गों ने जान बचाने के लिए हिंदुस्थान की ओर बढ़ना शुरू किया। हम सब रात-दिन भूखे-प्यासे रहते हुए, कहीं लंगर मिला तो पेट में कुछ डालते हुए कई दिन चलने के बाद अमृतसर, अंबाला होते हुए काशीपुर (उत्तराखंड) पहुंचे। ■

शवों के साथ रहे

बोधराज मदान, डेरा गाजीखान

भारत के बंटवारे के वक्त हमारे गांव कोटकसाने और उसके आसपास के मुसलमान हिंदुओं से कहते थे,''अब यह इलाका सिर्फ मुसलमानों का हो गया है। तुम लोग जल्दी से यहां से चले जाओ।'' भारत आने के दौरान भी हमारी गाड़ी पर हमले हुए। हमलों के बीच ही हमारी गाड़ी लाहौर पहुंची। गाड़ी लाहौर रेलवे स्टेशन पर तीन दिन और चार रात तक खड़ी रही।

गाड़ी में न तो खाना बचा था और न ही पानी। इसके बाद भी फौज वाले हम लोगों को बाहर नहीं निकलने दे रहे थे। कई लोगों की मौत तो भूख और दम घुटने से हो गई। लोग अपने रिश्तेदारों के शवों के साथ ही गाड़ी में पड़े रहे। बाहर मुसलमान इस बात पर अड़े थे कि किसी भी सूरत में गाड़ी को आगे नहीं दिया जाएगा। खैर, फौजियों ने समझा-बुझाकर मुसलमानों को मनाया और हमारी गाड़ी चली। ■

'दंगाइयों ने लूटा हमारा घर'

सुभाष मल्होत्रा, मुल्तान, पाकिस्तान

उन दिनों मैं करीब पांच वर्ष का था। हर तरफ अफरातफरी मची थी। भयंकर फसाद होते थे। लूटमार होती थी। एक दिन पता चला कि हमारे घर को भी मुस्लिम लूटने की तैयारी कर रहे हैं। बता दें कि हमारा परिवार इलाके के संपन्न और रसूखदार परिवारों में था। तब हमारे कुछ वफादार मुस्लिम काश्तकारों ने ही कहा कि आप लोग भारत चले जाओ, हालात खराब हैं। तब हमारे परिवार में दादाजी, माताजी-पिताजी, मेरे बड़े भाई और एक छोटी बहन थी। हम लोग दिल्ली आ गए। शुरू में तो खाने की बड़ी तंगी थी, लेकिन धीरे-धीरे पिताजी ने नौकरी करनी शुरू की, पैसे आने लगे तो हालात सुधरने लगे। खैर, मैंने पढ़ाई-लिखाई की। बाद में बड़ा हुआ तो 1962 में 'नवभारत टाइम्स' में नौकरी मिल गई। 1964 में मैं भारत प्रकाशन दिल्ली लि. से जुड़ा और सेवानिवृत्त होने तक इसी में काम किया। ■

'जान की भीख मांगते रहे'

इंद्रसेन ढींगरा, मरदान, पाकिस्तान

हमारा पूरा परिवार विभाजन के बाद अक्तूबर, 1947 तक पाकिस्तान में ही रहा। इलाके के हालात ऐसे थे कि रात होने के बाद यही लगता था कि सुबह तक कोई जिंदा बचेगा या नहीं। मेरे इलाके में सबसे ज्यादा सिखों के साथ ज्यादती हुई। हुआ यह था कि मास्टर तारा सिंह ने लाहौर में जिहादियों को आड़े हाथों लेते हुए एक भाषण दिया था, इससे मुसलमान भड़क गए। हिंदू या सिख जहां मिलते उन्हें वहीं गोली मार दी जाती। इसी डर से हमारे इलाके के हिंदू और सिख सब कुछ छोड़-छाड़कर मरदान पहुंचे। हमें यहां दो महीने शिविर में रहना पड़ा। वहां से निकले तो जान बचाते हुए भारत आए। आज जब उन दिनों को याद करता हूं तो सोच में पड़ जाता हूं कि आखिर हमारी क्या गलती थी? हम हिन्दू-सिखों को सिर्फ इसलिए मार कर भगाया गया कि हम इस्लाम को नहीं मानते थे। ■

मुस्लिम तरेरने लगे थे आंखें

श्रीसंत पाल रावल, साहिवाल, पाकिस्तान

उन दिनों आजादी का जोश था। हर तरफ मेरा रंग दे बसंती चोला...जैसे देशभक्ति के गीतों की धुन सुनाई देती थी। लेकिन धीरे-धीरे माहौल बदलने लगा। अब नारे आने लगे- 'नारा-ए-तकबीर अल्लाह-हू-अकबर', 'लेकर रहेंगे पाकिस्तान।' तब मैं सात साल का था। मेरे पिताजी जमींदार थे। घर-परिवार बहुत समृद्ध था। अचानक घर के पास एक दिन मुनादी होती है कि देश बंट गया है, इसलिए हिन्दू पाकिस्तान से चले जाएं। यह मुनादी होते ही मेरे पड़ोसी मुसलमान, खेतों में काम करने वाले मजदूर जो कल तक हमारी आवभगत करते थे, उनकी नजरें ही बिल्कुल बदल गईं। अब इलाके में एक डर का माहौल बनने लगे लगा था। वही मुसलमान डरा रहे थे। जान का खतरा बन चुका था। मुसलमान समृद्ध परिवारों को निशाना बनाने लगे थे, क्योंकि जिहादियों को पता था कि इनके घरों से काफी माल-पैसा मिल सकता है।

'मकान में लगा दी आग'

जितेंद्र कुमार मल्होत्रा, गुजरांवाला, पाकिस्तान

पाकिस्तान में हमारे पिताजी और दादाजी का बहुत बड़ा कारोबार हुआ करता था। हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इतने बड़े उद्योगपति घराने से संबंध रखने वाले इस परिवार को जान बचाने के लिए अपना सब कुछ छोड़ कर भागना पड़ जाएगा। 1947 में विभाजन के समय हुए कत्लेआम, आगजनी और लूटपाट को मैंने अपनी आंखों से देखा है। हफीजाबाद में मकान आपस में सटे हुए थे। एक दिन मुसलमानों ने हमारे मकान के निचले हिस्से में आग लगा दी। परिवार के सभी लोग छत के रास्ते भाग कर दूसरे मकान में चले गए। वहां हम छत पर ही छिपे रहे। बाद में हालात और बिगड़ते चले गए। दंगे के माहौल में ही हम शिविर में चले गए, लेकिन दादाजी और पिताजी फैक्ट्री में ही छूट गए। उन्मादी मुसलमानों ने फैक्ट्री में लूटपाट की और दोनों को बंदी बना लिया। फिरौती देकर उन्हें छुड़ाया गया। ■

गोलियों की तड़तड़ाहट

लक्ष्मी नारायण जग्गी, रावलपिंडी, पाकिस्तान

बंटवारे के समय मैं 13 साल का था। पिताजी बैंक में नौकरी करते थे। सब कुछ ठीक चल रहा था। लेकिन एक दिन रावलपिंडी के बाजार में हिन्दू-मुसलमानों के बीच झगड़े शुरू हो गए। मुसलमान झुंड में आकर, तलवारें लेकर हमला कर रहे थे। खबरें आ रही थीं कि दंगा होने वाला है और ऐसा ही हुआ। बाजार में जहां भी हिन्दुओं की दुकानें थीं, उन्हें आग लगाई जाने लगी, हिन्दुओं के घरों को लूटा जाने लगा। यानी माहौल अराजक हो चुका था। मुझे याद है कि रात में मैंने छत पर जाकर देखा तो चारों तरफ शोर था। आग की लपटें थीं। धुंआ उठ रहा था। घर के पास एक गोशाला थी, वहां मुसलमानों ने आग लगा दी थी। चारों तरफ अल्लाह-हू-अकबर की आवाजें आ रही थीं। गोलियों की तड़तड़ाहट सुनाई दे रही थी। मेरे पड़ोसी को गोली मार दी गई थी। पिताजी हकीमी करते थे, सो वे उसकी चिकित्सा करने गए थे। ■

एक्सप्रेस-वे से विकास को मिली अभूतपूर्व गति

सरकार पूरे प्रदेश को बेहतर सड़क संपर्क प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। सच है कि कनेक्टिविटी से विकास का सफर तय होता है। प्रदेश सरकार एक्सप्रेस-वे के साथ-साथ विभिन्न विकास परियोजनाओं पर भी काम कर रही है। इस निर्माण से उच्च गुणवत्ता वाली सड़कों के विस्तार ने राज्य की राजधानी के साथ दूर-दराज के क्षेत्रों की कनेक्टिविटी को बेहतर करने का काम किया है। साथ ही, भविष्य के औद्योगिकीकरण और शहरीकरण की भी नींव रखी है

"बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे सिर्फ वाहनों को गति नहीं देगा, बल्कि इस पूरे क्षेत्र की औद्योगिक प्रगति को भी गति देगा। यह एक्सप्रेस-वे इस क्षेत्र के कोने-कोने को विकास, स्वरोजगार और नए अवसरों से जोड़ने वाला है"
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

"यह एक्सप्रेस-वे नए भारत के नए उत्तर प्रदेश में समृद्ध बुंदेलखंड के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की ऐतिहासिक गति का कारक बनेगा"
-योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश

एक्सप्रेस-वे किसी भी राज्य के विकास के केंद्र बिंदु होते हैं। ये विकसित राज्य की जीवन रेखा होते हैं। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य के लिए तो यह बात सौ फीसदी लागू होती है। आज उत्तर प्रदेश की पहचान 13 एक्सप्रेस-वे से होती है, जिनमें से 6 एक्सप्रेस-वे राष्ट्र को समर्पित कर दिए गए हैं, जबकि 7 का निर्माण कार्य प्रगति पर है। प्रदेश के बुनियादी ढांचे की बात करें, तो पिछले पांच वर्षों में योगी आदित्यनाथ सरकार ने इस क्षेत्र में व्यापक व सार्थक परिवर्तन किए हैं। अब यह अर्थव्यवस्था के विकास का रोडमैप प्रदेश को एक ट्रिलियन-डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए पूरी तरह तैयार है।

उद्योग और बुनियादी ढांचा विकास के कैबिनेट मंत्री, नंद गोपाल गुप्ता 'नंदी' ने कहा कि हम उत्तर प्रदेश को 'एक ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर' की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं और पूरी तरह से जानते हैं कि बुनियादी ढांचा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पिछले पांच वर्षों में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कड़ी मेहनत ने यूपी को एक्सप्रेस-वे प्रदेश की पहचान दिलाई है।

एक्सप्रेस-वे किसी स्थान को राज्य के बाकी हिस्सों से जोड़ने का साधन होते हैं, इसी कारण से उत्तर प्रदेश को

औद्योगिक विकास के स्थलों के रूप में भी विकसित किया जा रहा है।

एक ट्रिलियन-डॉलर अर्थव्यवस्था योजना के नोडल अधिकारी व सचिव आलोक कुमार राज्य के दृष्टिकोण पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि कैसे ये एक्सप्रेस-वे प्रदेश के विकास का आधार बनेंगे। सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, विनिर्माण, रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र, कृषि, शिक्षा और कौशल विकास, खाद्य प्रसंस्करण, औद्योगिक बुनियादी ढांचा, बिजली व ऊर्जा और तेजी से शहरीकरण आदि बातें उत्तर प्रदेश में विकास के कारकों के रूप में काम करेंगी।

उत्तर प्रदेश को बुनियादी ढांचे के विकास से सर्वोत्तम प्रदेश बनाने के लिए प्रदेश सरकार लगातार प्रयासरत है। उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के लोकार्पण के साथ प्रदेश में अब देश के कुल एक्सप्रेस-वे का 37.7 प्रतिशत हिस्सा है।

इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट किसी भी अर्थव्यवस्था में व्यापार और विकास के निर्णायक उत्प्रेरकों के रूप में काम करता है। किसी देश का सड़क नेटवर्क उसके समग्र आर्थिक विकास की कहानी कहता है। एक्सप्रेस-वे न केवल राज्य के बाकी हिस्सों के साथ एक जगह हो दूसरी जगह से जोड़ने के साधन बन रहे हैं, बल्कि प्रदेश में इन्हें औद्योगिक विकास के तौर पर भी विकसित किया जा रहा है।

एक्सप्रेस-वे न केवल कनेक्टिविटी को बेहतर करने में अहम भूमिका निभाते हैं, बल्कि ये रोजगार सृजन का भी एक बेहतरीन साधन बनते हैं। इससे स्वास्थ्य और दूसरी तरह की सुविधाएं आसानी से दूर-दराज तक पहुंच पाती हैं। ऐसे में यह कहना सही होगा कि हाल ही में देश को समर्पित बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे क्षेत्र के विकास का प्रमुख आधार बनेगा।

पर्यटन के प्रमुख सचिव मुकेश मेश्राम के अनुसार अच्छी सड़कें राज्य की धमनियों और नसों की तरह होती हैं। जैसे वे मानव शरीर के लिए काम करती हैं, वैसे ही ये धमनियां व नसें पर्यटन की सहायता करती हैं और अर्थव्यवस्था के विकास में मदद करती हैं। ■

बेहतर नेटवर्क ने बदली उत्तर प्रदेश की छवि

बेहतर रोड नेटवर्क किसी भी राज्य के व्यापार में सुगमता, माल लाने व ले जाने में सुलभता और आर्थिक विकास लेकर आता है। साथ ही, रोजगार व मूलभूत सुविधाओं के विस्तार से प्रदेश के निवासियों का जीवन भी आसान बनता है

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व में उत्तर प्रदेश ने हाल के कुछ सालों में तेजी से विकास किया है। चौतरफा विकास ने राज्य में अति महत्वपूर्ण एक्सप्रेस-वे का विशाल नेटवर्क तैयार कर दिया है, जिससे प्रदेश के रोड नेटवर्क को अभूतपूर्व विस्तार मिला है और इसने कनेक्टिविटी के ग्राफ को कई गुना बढ़ा दिया है।

हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 296 किमी लंबे बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का उद्घाटन किया। उत्तर प्रदेश को अब देश में 'एक्सप्रेस-वे प्रदेश' कहा जाने लगा है पूरे देश में उत्तर-प्रदेश अब अकेला ऐसा राज्य बन गया है, जिसके पास कुल 13 एक्सप्रेस-वे हैं। इसमें यमुना एक्सप्रेस-वे, ग्रेटर नोएडा-नोएडा एक्सप्रेस-वे, लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे, दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे उन 6 एक्सप्रेस-वे में शामिल हैं, जिनका संचालन किया जा रहा है और ये प्रदेश के आर्थिक विकास में अपना अहम योगदान देने लगे हैं, जबकि शेष 7 एक्सप्रेस-वे निर्माणधीन हैं।

इन विश्वस्तरीय एक्सप्रेस-वे के विकास के साथ उत्तर प्रदेश के निवासियों की सोच बदल रही है और उन्हें पहले की तुलना में व्यापार करने में आसानी हो रही है। जब हम जीवन जीने में आसानी की बात करते हैं, तो ये विशाल एक्सप्रेस-वे नेटवर्क के बड़े जाल के रुप में बड़े जिलों और शहरों को दूर-दराज इलाकों से जोड़ते हैं। इससे छोटे गांवों और दूर-दराज के लोगों को इसका लाभ मिलना स्वाभाविक है। इससे आवाजाही आसान होगी और समय व ईंधन की बचत होती है। लंबे समय में पर्यावरण पर पड़ने वाले असर और शहरों के बीच ट्रैफिक को कम करने में मदद भी मिलती है, जो ईंधन की खपत को कम करता है और इससे वायु प्रदूषण भी कम होता है। इसके अलावा, इन एक्सप्रेस-वे से सड़क हादसों में कमी आएगी।

यात्रा में लगने वाले समय की बात करें तो उदाहरण के लिए दिल्ली से चित्रकूट जाने में 12 से 14 घंटे लगते थे, क्योंकि दिल्ली और बुंदेलखंड क्षेत्र को सीधा जोड़ने वाला कोई रास्ता नहीं था, लेकिन नए बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे से इन दोनों के बीच सफर की दूरी घटकर 6 से 8 घंटे रह गई है, इस सुविधा से जीवन में ऐसी आसानी आई है, जो पहले कभी महसूस नहीं की गई थी।

पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर गोमती नदी पुल

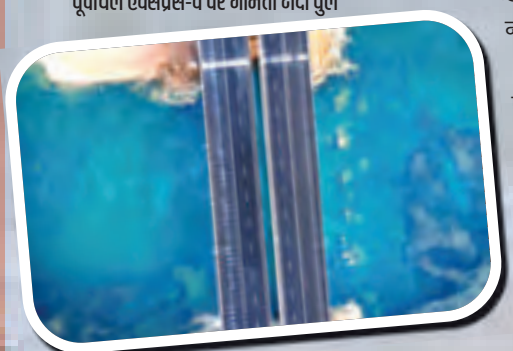

इसी तरह पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे की शुरुआत से दिल्ली और उत्तर प्रदेश के पूर्वी सीमा पर स्थित गाजीपुर जिले के बीच दूरी का समय घटकर अब करीब 10 घंटे हो गया है, जिसमें पहले 18-20 घंटे लग जाते थे। मौजूदा तकनीक, कुशल प्रशासन और पारदर्शी नीतियों के माध्यम से उत्तर प्रदेश सरकार राज्य को देश की 'ईज ऑफ लिविंग' इंडेक्स में और ऊपर ले जाने के लिए प्रयासरत है।

उत्तर प्रदेश में विश्व स्तरीय एक्सप्रेस-वे से जिस दूसरे पहलू को बल मिल रहा है, वह 'ईज ऑफ डूइंग' बिजनेस है।

प्रदेश में बेहतर होते बुनियादी ढांचे से राज्य की तस्वीर तेजी से बदल रही है। रोड हाईवे और एक्सप्रेस-वे का निर्माण विकास में तेजी लाने की अहम भूमिका निभा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में वर्तमान और आगामी एक्सप्रेस-वे परियोजनाओं ने व्यस्त एक्सप्रेस-वे के पास स्थित जगहों पर प्रॉपर्टी के विस्तार को बढ़ाया है। पूर्वांचल और बुंदेलखंड जैसे अत्याधुनिक एक्सप्रेस-वे आने के साथ आवासीय रियल एस्टेट बिल्डर्स, चिकित्सा और वाणिज्यिक परियोजनाओं की स्थापना करने के लिए आस-पास की जगहों पर पैनी नजर जमाए हुए हैं। ऐसी कई परियोजनाएं पहले से ही प्रगति में हैं और इससे राज्य के स्थानीय लोगों के लिए रोजगार सृजन हो रहा है। इसके अलावा, परिवहन व्यवसाय के मालिक और व्यापारी बेहतर कनेक्टिविटी व अच्छी सड़कों के कारण समय और पैसा दोनों बचा सकते हैं।

आवासीय टाउनशिप और वाणिज्यिक परियोजनाओं के साथ कई औद्योगिक प्रशिक्षण शैक्षणिक और चिकित्सा संस्थान एक्सप्रेस-वे की जगहों के पास शुरु किए जाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप इन इलाकों के लोगों के लिए और अधिक संभावनाएं पैदा होगी। इससे प्रदेश में व्यापक स्तर पर सामाजिक-आर्थिक दायरे को विस्तार मिलेगा और पलायन रुकेगा।

उत्तर प्रदेश के इन प्रमुख एक्सप्रेस-वे को आपस में जोड़ने से राज्य की राजधानी लखनऊ के साथ-साथ राष्ट्रीय दिल्ली व उससे आसपास के पिछड़े इलाके जुड़ जाएंगे और बाजारों को बढ़ावा मिलेगा।

नए बने बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे पर अपने विचार साझा करते हुए ट्रांसपोर्ट बिजनेस के मलिक अभिजीत उपाध्याय कहते हैं कि विश्व स्तरीय एक्सप्रेस-वे राज्य के प्रगतिशील विकास के लिए जरूरी है, जो राज्य के विकास का प्रतिनिधित्व लगातार करते रहेंगे। उत्तर प्रदेश में बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के शुरु होने से मेरे व्यवसाय को काफी फायदा होगा, क्योंकि इससे मेरा बहुत समय और ईंधन बचेगा। इन चीजों को ध्यान में रखते हुए मुझे निकट भविष्य में अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को विस्तार मिलने की उम्मीद है।

एक्सप्रेस-वे के आने और रोजगार सृजन के बारे में बात करते हुए बेरोजगार ग्रेजुएट सागर कुमार कहते हैं कि मुझे पता चला है कि उत्तर प्रदेश सरकार हमारे क्षेत्र में औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार कर रही है। यह एक तरह से वरदान साबित होगा, क्योंकि इससे यहां के युवाओं के लिए रोजगार पैदा होगा और उन्हें अपनी आजीविका के लिए दिल्ली जैसे अन्य बड़े शहरों की ओर पलायन नहीं करना पड़ेगा। ■

नवनिर्माण से प्रदेश में रोजगार सृजन होगा अपार

बेहतर नेटवर्क न केवल यात्रा में लगने वाले समय को कम करने में मदद कर रहा है, बल्कि राज्य के दूर-दराज क्षेत्रों को मुख्यधारा वाली वाणिज्यिक जगहों से जोड़ रहा है।

एक्सप्रेस-वे के माध्यम से कनेक्टिविटी में सुधार के नए बुनियादी ढांचे के साथ, उत्तर प्रदेश न केवल यात्रा के समय को कम रहा है, बल्कि रोजगार सृजन और नई वाणिज्यिक गतिविधियों को विस्तार भी दे रहा है। ऐसे में प्रदेश ने प्रगति के माध्यम से भारत की एक्सप्रेस-वे राजधानी के रूप में पहचान बना ली है।

अत्याधुनिक एक्सप्रेस-वे के विशाल नेटवर्क और सबसे लंबे एक्सप्रेस-वे के साथ उत्तर प्रदेश को अब 'एक्सप्रेस-वे प्रदेश' कहा जाने लगा है। बेहतर सड़क संपर्क के विस्तृत नेटवर्क के साथ राज्य गर्व के साथ इन एक्सप्रेस-वे को अपने नक्शे पर प्रदर्शित करता है, जिनका निर्माण पूरा हो चुका है।

- नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे
- दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे
- यमुना एक्सप्रेस-वे
- बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे
- आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे
- पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे
- ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेस-वे

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने उत्तर प्रदेश में सात ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे बनाने की घोषणा की थी, जबकि कानपुर शहर के 364 किलोमीटर लंबे सात राष्ट्रीय राजमार्गों और 14,199 करोड़ रूपए की अन्य परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास लखनऊ से किया था। रोड का बेहतर नेटवर्क दूर-दराज क्षेत्रों को मुख्यधारा के वाणिज्यिक क्षेत्रों से जोड़ रहे हैं। इसके साथ ही प्रदेश में बेहतर निवेश, अधिक रोजगार व आर्थिक और वाणिज्यिक गतिविधियों में वृद्धि इसे लगातार आगे बढ़ा रहे हैं।

संभावनाओं से भरे एक्सप्रेस-वे

यूपीडा के साथ उत्तर प्रदेश सरकार यह तस्वीर पूरी तरह से बदलने का प्रयास कर रही है। शहर के साथ-साथ ग्रामीण इलाकों में भी कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने का काम तेजी से चल रहा है। दूर दराज के हिस्से इन विकास कार्यों के माध्यम से अब सीधे राष्ट्रीय राजधानी से जुड़ गए है और इससे वे प्रदेश की वाणिज्यिक गतिविधियों में हिस्सा ले सकते हैं। कृषि आधारित क्षेत्र, ओडीओपी और एमएसएमई उत्पाद अब न्यूनतम समय में बाजार तक आसानी से पहुंच सकते हैं। इस नेटवर्क के माध्यम से कच्चे माल के उत्पादक, निर्माता, बाजार और निवेशक एक-दूसरे से जुड़ पा रहे हैं। यह कनेक्टिविटी राज्य में अन्य विकास परियोजनाओं के साथ-साथ ग्रीन कॉरिडोर इकॉनोमिक कॉरिडोर और डिफेंस कॉरिडोर जैसी कई अन्य परियोजनाओं को भी बढ़ावा दे रही है।

नए एक्सप्रेस-वे में शामिल है

- लखनऊ- कानपुर एक्सप्रेस-वे
- गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस-वे
- गाजीपुर-बलिया-मांझीघाट एक्सप्रेस-वे
- दिल्ली-सहारनपुर-देहरादून एक्सप्रेस-वे
- गाजियाबाद-कानपुर एक्सप्रेस-वे
- गोरखपुर-सिलीगुड़ी एक्सप्रेस-वे
- गंगा एक्सप्रेस-वे

सभी 13 परियोजनाओं के पूरा होने बाद उत्तर प्रदेश में एक्सप्रेस-वे की कुल लंबाई 3,199 किलोमीटर होगी। अब तक किसी राज्य में विकसित किए जा रहे सबसे विस्तृत एक्सप्रेस-वे नेटवर्क में से यह एक है। ■

बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे

- इस 4 लेन एक्सप्रेस-वे को भविष्य में 6 लेन तक बढ़ाया जा सकता है। इसमें 13 इंटरचेंज पॉइंट हैं जो उत्तर प्रदेश के 7 जिलों को आपस में जोड़ते हैं।
- केंद्र सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के पूरक नोड्स की घोषणा की जा चुकी है।
- इस एक्सप्रेस-वे के निर्माण में विशेष तकनीक की मदद ली गई है। जो गाड़ी चलाने वाले को वाहन फिसलने पर सचेत करेंगे।
- विनिर्माण इकाइयां, विकास केंद्र और कृषि उत्पादक क्षेत्र राष्ट्रीय राजधानी से जुड़ जाएंगे।
- हथकरघा, खाद्य प्रसंस्करण, डेयरी, भंडारण, पारंपरिक मध्यम और लघु-स्तरीय औद्योगिक इकाइयों को यह एक्सप्रेस-वे बढ़ावा देगा।
- बांदा और जालौन जिलों में औद्योगिक कॉरिडोर पर काम शुरु हो गया है।
- संभावित निवेशकों और उद्योगपतियों के लिए पहुंच में सुधार और क्षेत्र की आर्थिक वाणिज्यिक संभावनाओं को विस्तार मिलेगा।
- एक्सप्रेस-वे उत्तर प्रदेश में आगामी डिफेंस कॉरिडोर की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
- यह चित्रकूट और दिल्ली के बीच यात्रा करने में लगने वाले समय को घटाकर लगभग 6 घंटे कर देगा।
- आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे और यमुना एक्सप्रेस-वे के माध्यम से यह बुंदेलखंड को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से जोड़ेगा।

नए बुनियादी ढांचे से यूपी की अर्थव्यवस्था अब नई राह पर

परिवहन, कनेक्टिविटी और अच्छी सड़क के साथ-साथ बुनियादी ढांचा ऐसे बिंदु हैं, जो इन क्षेत्रों में निवेश के साथ-साथ पूरी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने का काम करेंगे। इससे प्रदेश की तस्वीर और सशक्त होगी

बुनियादी सुविधाओं में सड़क, पानी, बिजली और दूरसंचार जैसी चीजें शामिल होती हैं। आज की अर्थव्यवस्था को आधुनिक और कुशल जीवनयापन की जरूरतों के हिसाब से एक विश्वसनीय बुनियादी ढांचे की जरूरत है। एक स्थायी अर्थव्यवस्था में बुनियादी ढांचे के महत्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

बुनियादी ढांचे का विकास

इस बात पर जोर देने की जरूरत है कि अच्छी गुणवत्ता वाला बुनियादी ढांचा न केवल तेज आर्थिक विकास के लिए जरूरी है, बल्कि समावेशी विकास को सुनिश्चित करने के लिए भी यह अहम होता है। समावेशी विकास से देश में गरीबी उन्मूलन और आर्थिक असमानता में कमी आएगी। वर्तमान दौर के आर्थिक परिदृश्य में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था ने जड़ता की स्थिति को पार कर लिया है और वह राष्ट्रीय आंकड़ों की बराबरी करने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहा है। राज्य के बुनियादी ढांचे में निजी क्षेत्र के निवेश और उत्पादकता वृद्धि में आर्थिक रूप से भी योगदान मिल रहा है। अच्छी बात यह है कि वर्तमान सरकार के प्रमुख एजेंडे में बुनियादी विकास को महत्व दिया जा रहा है।

बदल रही राज्य की छवि

जब बुनियादी ढांचे के विकास की बात आती है तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पास उपलब्धि के रूप में बहुत कुछ मौजूद है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपने अब तक के शासनकाल के दौरान वे बुनियादी ढांचे के विकास को अपनी सरकार की प्रमुख उपलब्धियों में से एक के रुप में पेश करते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जेवर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे तक की ऐतिहासिक यात्रा बुनियादी ढांचे के विकास का नया स्वरूप है। यह न केवल बेहतर कनेक्टिविटी की सुविधा का दावा करता है, बल्कि आर्थिक विकास के साथ बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। कनेक्टिविटी और व्यापार करने में आसानी से पूरे राज्य में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। पहले निवेशक उत्तर प्रदेश में निवेश नहीं करना चाहते थे, लेकिन अब प्रदेश अंतरराष्ट्रीय और स्थानीय निवेशकों की पहली पसंद बन गया है। सरकार के प्रयास आर्थिक परिवर्तन और विकास को साकार कर रहे हैं। राज्य, छठे स्थान से छलांग लगाकर देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।

यात्रा के समय को कम करने वाले एक्सप्रेस-वे

अगले 2-3 वर्षों में उत्तर प्रदेश सरकार ने 13 ग्रीन एक्सप्रेस-वे की योजना बनाई है, जिनमें से छह पहले से ही संचालित हैं। इन एक्सप्रेस-वे को राज्य की अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों के रूप में देखा जा रहा है। ये एक्सप्रेस-वे न केवल यात्रा के समय को कम करते हैं, बल्कि अर्थव्यवस्था में भी बड़े पैमाने पर योगदान देते हैं। हालांकि, समय की बचत करना अच्छे सिस्टम की निशानी होती है, लेकिन यहां पर जब बुनियादी ढांचे के रूप में हिसाब का लेखा-जोखा तय किया जाता है, तो लगता है कि इस कदम से राजस्व के कई रास्ते खुल रहे हैं। अपनी लंबाई के साथ यह भविष्य के औद्योगिकीकरण की नींव रखने के लिए उत्प्रेरक के तौर पर काम करते हैं। ये राज्य के दूर-दराज के क्षेत्रों को एक्सप्रेस-वे के नेटवर्क में लाते हैं और क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से बुनियादी ढांचा और सुविधाएं अब बड़े शहरों और चुनिंदा क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं। कम समय में सुविधाएं और उभरती तकनीक सुदूर क्षेत्रों तक फैल गई हैं।

बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे बना उदाहरण

बुंदेलखंड दशकों से राज्य के सबसे गरीब क्षेत्रों में से एक रहा है। यह कृषि संकट, उद्योगों की अनुपस्थिति और बुनियादी ढांचा न होने के कारण पिछड़ा रहा है। 90 प्रतिशत से अधिक आबादी के पास उचित सड़क और रेलवे के बुनियादी ढांचे तक की पहुंच नहीं थी। संतुलित विकास और सामाजिक न्याय को आधार बनाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 29 फरवरी, 2020 को चित्रकूट में बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का शिलान्यास किया, जहां से यह एक्सप्रेस-वे शुरु होता है। विशेष बात यह है कि इस एक्सप्रेस-वे को कोविड-19 के बावजूद रिकार्ड 28 महीने में पूरा किया गया है। यह एक्सप्रेस-वे सात जिलों इटावा, औरेया, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा और चित्रकूट को सीधे राष्ट्रीय और राज्य की राजधानी और उससे आगे के क्षेत्रों को जोड़ता है। इससे दिल्ली आने-जाने का समय घटकर केवल छह घंटे रह जाएगा। दिलचस्प बात यह है कि चार-लेन वाले इस एक्सप्रेस-वे को भविष्य में छह-लेन तक बढ़ाया जा सकता है। एक्सप्रेस-वे बुंदेलखंड में उत्तर प्रदेश डिफेंस कॉरिडोर के साथ, उस क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को बदल देगा और विश्व स्तर पर रक्षा हार्डवेयर निर्यात की सुविधा प्रदान करेगा। इससे निवेश को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। भविष्य में यह एक प्रमुख इन इंडिया हब साबित होगा। ■

रामलाल
कोटली, पाकिस्तान

'हिंदुओं को जिंदा आग में फेंका'

बात 1946 की है। मैं कोटली में रहता था और मेरी उम्र करीब 22 साल थी। उन दिनों उर्दू का अखबार 'प्रताप' में लेख छपते थे कि पुलिस विभाग में अधिकतर मुसलमान हैं। हिंदू युवाओं को भी पुलिस में भर्ती होना चाहिए। दिसंबर 1946 में पुलिस में भर्ती हो गया। प्रशिक्षण के लिए पहले मुल्तान गया और कुछ दिन बाद लाहौर। लाहौर में प्रशिक्षण लेते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि एक रात मुस्लिम-हिंदू पुलिसकर्मियों में झगड़ा हो गया। कुछ हिंदू पुलिसकर्मियों की पिटाई कर दी गई। चूंकि विभाग में मुसलमानों का ही दबदबा था, इसलिए मुसलमान अधिकारियों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। इसके बाद सभी हिंदू पुलिसकर्मियों ने लाहौर में प्रशिक्षण लेने से मना कर दिया। साथ ही हिंदू पुलिसकर्मियों ने बड़े अधिकारियों से प्रशिक्षण के लिए अमृतसर भेजने का आग्रह किया। रायफल साथ रखने की इजाजत मांगी। पर उन्होंने साफ मना कर दिया। अंत में अधिकारियों ने सबको 15 दिन की छुट्टी दे दी। सभी अपने-अपने घर चले गए। मैं भी कोटली आ गया।

कुछ दिन बाद पास के रामपुर कस्बे में एक रात बलवा हो गया। मुसलमानों ने एक जगह आग लगा रखी थी और जो भी हिंदू मिलता था जिंदा या मरा, उसे आग में डाल देते थे। पुलिस हिंदुओं की सुनती ही नहीं थी। इस कारण हिंदू पलायन कर भारत आने लगे। मैंने भी घर के सारे लोगों को भारत भेज दिया। मुझे वर्दी लाहौर में वापस करनी थी इसलिए परिवार के साथ भारत नहीं आया। एक दिन मैं वर्दी लौटाने के लिए लाहौर पुलिस लाइन जा रहा था, तभी पुलिस लाइन का रसोइया मिला। उसने कहा कि अंदर बिल्कुल मत जाना। हिंदू पुलिसकर्मियों को मारा जा रहा है। इसके बाद मैं वर्दी लौटाए बिना वापस हो गया। ■

मोहन लाल कालरा
डेरा इस्माइल खान, पाकिस्तान

वह आगजनी और दहशत

भारत विभाजन के समय मैं 13 साल का था। डेरा इस्माइल खान में जन्मा और वहीं पढ़ाई कर रहा था। पिताजी कारोबार करते थे। लोगों को उम्मीद थी कि शायद विभाजन टल जाए, लेकिन कुछ महीने बाद माहौल हिंदू और मुसलमानों में दूरियां बढ़ने लगीं। हालात ऐसे बने कि 1947 में 13 और 14 अगस्त के आसपास शहर में आगजनी शुरू हो गई। 14 अगस्त को पूरे शहर में हिंदुओं को निशाना बनाया गया। मुसलमानों की भीड़ लूटपाट करती और हिंदुओं के घरों व दुकानों में आग लगा देती। हिंदू जान बचाने के लिए इधर-उधर भागते। वहां से निकलने के लिए रेल के अलावा और कोई साधन नहीं था। रेलगाड़ी भी नियमित नहीं थी। रेलवे स्टेशन पहुंचना बड़ी चुनौती थी। इसलिए करीब महीने भर हम वहीं फंसे रहे। सितंबर 1947 के मध्य में परिवार के लोग तांगे से निकले। घर से रेलवे स्टेशन करीब 14 किलोमीटर दूर था। वहां पहुंचने के लिए एक दरिया पार करना पड़ता। फिर भी आग की लपटों के बीच हम लोग आगे बढ़ते रहे। स्टीमर से नदी को पार किया और रेलवे स्टेशन पहुंचे। करीब 25 लोगों का जत्था था। हम सब रेलगाड़ी में बैठे और लायलपुर मौसी के पास पहुंचे। एक-दो दिन ही हुए थे कि एक रात मुसलमानों ने मौसी के घर पर हमला कर दिया। हम लोग जान बचाने में सफल रहे, पर घर पूरी तरह नष्ट हो गया। हम शिविर में चले गए। वहां कई दिनों तक रहे। यहां खाना तक नहीं मिल रहा था। लोगों को क्रम से भारत भेजा जा रहा था। मेरे एक रिश्तेदार को हवाई जहाज का टिकट मिल रहा था। मैं उनके साथ दिल्ली आ गया, लेकिन परिवार के अन्य लोग लायलपुर शिविर में ही रह गए। बाद में वे लोग माल गाड़ी से भारत आए। ■

रामचंद्र आर्य
चोटी, डेरा गाजीखान, पाकिस्तान

'बलूच सैनिकों ने परेशान किया'

डेरा गाजीखान जिले में कस्बा चोटी एक बाजार के रूप में मशहूर था। 1947 में चोटी में 10 प्रतिशत हिंदू और 90 प्रतिशत मुसलमान थे। जब मुसलमानों को पता चला कि भारत का विभाजन हो गया है, तब उन लोगों ने चोटी में मारकाट शुरू कर दी। मेरी दो दुकानों में आग लगा दी गई। किसी भी हिंदू की दुकान नहीं बची। मारकाट के बीच ही गोरखा सैनिक आ गए। बाद में एक षड्यंत्र के तहत गोरखा सैनिकों को वहां से हटाकर बलूच सेना को लाया गया। उन्होंने हिंदुओं को बहुत परेशान किया। इसलिए सबने चोटी छोड़ने का निर्णय लिया। बलूच सैनिकों ने ही हमें डेरा गाजीखान पहुंचाया। शायद वे लोग यही चाहते थे कि हिंदू चोटी से चले जाएं।

उस समय मैं 22 वर्ष का था। जनवरी 1947 में विवाह हुआ था। डेरा गाजीखान में दो महीने रहने के बाद एक दिन गोरखा सैनिक आए और कहने लगे कि फटाफट चलो। उन्होंने यह नहीं बताया कि कहां चलना है। चूंकि गोरखा सैनिकों पर ही हिंदुओं को भरोसा था, इसलिए सभी उनके कहने पर चल पड़े। गोरखा सैनिकों ने हम लोगों को मुजफ्फरगढ़ पहुंचा दिया। वहां शहर के बाहर एक बहुत बड़े मैदान में शरणार्थियों के लिए शिविर बना था। यहां हम 15 दिन रहे। वहां पर गाड़ी आती थी और भरकर चली जाती थी। एक दिन हमारी भी बारी आई और हम गाड़ी पकड़कर संगरूर पहुंच गए। मेरे ससुराल वाले हिसार के शिविर में थे। हम हिसार आ गए। वहां पत्नी बहुत बीमार हो गई। काफी दिनों तक अस्पताल में भर्ती रही। जब वह ठीक हुई तो हम पलवल आ गए। पलवल से फरीदाबाद और फिर गुड़गांव। कुछ समय बाद हमें मुआवजे में जमीन मिली तो खेती करने लगे। ■

चंद्रकांता गुप्ता
मीरपुर, पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर

तीन महीने तक रहे 'कैद'

उस वक्त मीरपुर (पाक अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर) में करीब 3,000 हिंदू रहते थे। अगस्त 1947 के शुरुआती दिन थे। एक दिन पता चला कि मीरपुर को मुसलमानों ने चारों ओर से घेर लिया है। मैं 17 साल की थी और मेरी गोद में छह महीने का एक बच्चा था। मुसलमान पहाड़ी से हिंदुओं को गोली मार देते। बहुत हिंदू मारे गए। इस तरह की घटनाओं को देखते हुए बाद में दिन-रात कई बार मीरपुर के ऊपर हवाई जहाज चक्कर काटने लगे। जब हवाई जहाज मीरपुर के ऊपर मंडराता, तभी हिंदू अपने घर से निकलते और जरूरी सामान लेकर घर में बंद हो जाते। बाद में मुसलमानों ने पानी की पाइपलाइन काट दी। इस कारण किलोमीटर दूर झेलम नदी से पानी लाना पड़ता, वह भी रात में। उस समय भी मुसलमान हमले करते। इसके बाद झेलम और मीरपुर के रास्ते की निगरानी हवाई जहाज से की जाने लगी। किसी तरह वहां तीन महीने बीते।

एक सुबह फौजी आए और सभी हिंदुओं से कहा, जल्दी-जल्दी यहां से निकलो, जम्मू चलना है। उन्होंने बच्चों और बुजुर्गों को गाड़ी में बैठाया और हम जैसों को पैदल चलने को कहा। मीरपुर से कोटली 120 मील की दूरी तय करने में हमें आठ दिन लगे। जम्मू में रहने की जगह नहीं थी। एक सिनेमा हॉल में रहने की व्यवस्था की गई। हमारे पास तन के कपड़ों के अलावा और कुछ नहीं था। मीरपुर में हमारे पिताजी कपड़े की दुकान चलाते थे। ससुराल वालों का भी अच्छा कारोबार था। अब हम लोग बिल्कुल कंगाल हो गए थे। जम्मू से पठानकोट, अमृतसर, अलीगढ़ होते हुए पुराना किला, दिल्ली पहुंचे। फिर लाजपत नगर में घर मिला। ■

GLA UNIVERSITY
MATHURA
Recognised by UGC Under Section 2(f)

तमसो ज्ञानान्न मुक्तिः

24 Years
EDUCATIONAL EXCELLENCE

Accredited with A Grade by NAAC

12-B Status from UGC

ADMISSIONS OPEN 2022

GLAdiators
CONQUERING THE WORLD

Ranks & Accreditations

- 12B STATUS — 12th Private University in India by University Grants Commission (UGC)
- A GRADE — by NAAC National Assessment and Accreditation Council
- Rank No. 3 in UP* — Amongst Top Engineering Colleges by The Times of India Survey 2022
- 7th University/Institution in India accredited by IACBE International Accreditation Council for Business Education
- ARIIA — ATAL RANKING OF INSTITUTIONS ON INNOVATION ACHIEVEMENTS
- Ranked 69 in Pharmacy by nirf — National Institutional Ranking Framework

THE POWER OF GLA UNIVERSITY

3000+ Placement Offers in 500+ MNC's (Batch 2022) & still counting...

₹44 Lakh P.A. Highest Package offered by amazon

222 Girls Placed in Top IT Companies (Batch 2022)

33000+ Alumni Placed Globally

76% Placement average over the past decade

6000+ GLAians working abroad in the top MNC's

35 GLAians Placed in Microsoft

1000+ Alumni Working in Fortune 500 Companies

UGC Recognised Courses

ENGINEERING | MANAGEMENT | COMMERCE | DIPLOMA | AGRICULTURE
LAW | SCIENCE AND HUMANITIES | PHARMACY | BIOTECHNOLOGY | EDUCATION

Online Courses Also Available — MBA | BBA | B.Com

For Online Courses Apply: : www.glaonline.com : 011-40787100

Apply online at: **www.gla.ac.in** | Phone: **+91 9027068068** | Email : **admission@gla.ac.in**

Campus: 17 km Stone, NH#19, Mathura-Delhi Road, PO: Chaumuhan, Mathura-281 406 (UP), India

भगत राम भसीन
गांव–जंड, जिला–कैमलपुर

अभी भी याद आती है जन्मभूमि

उन दिनों हमारे गांव में बराबर शोर मचता था कि आज पठान आ रहे हैं और वे हिंदुओं को मार देंगे, उनके घरों को लूट लेंगे। इस कारण गांव के हिंदू दहशत में रहने लगे थे। कुछ दिन दहशत में ही गुजरे। फिर गांव के सभी हिंदुओं ने भारत जाने का फैसला लिया। सभी साथ निकले और एक रेलवे स्टेशन (नाम याद नहीं) पर पहुंचे। वहां से ट्रेन से अमृतसर आ गए। रास्ते में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने बड़ी मदद की। अमृतसर से अंबाला, फिर अंबाला से जिला लखीमपुर खीरी के एक गांव में पहुंचे। हमारे गांव के सभी लोगों को उसी गांव में रहने के लिए जगह और खेती के लिए जमीन मिली।

विभाजन के समय चौथी कक्षा में पढ़ता था। आज भी हम अपने गांव को नहीं भूल पाते। जब मैं केवल दो-ढाई साल का था, तभी पिताजी संन्यासी बन गए थे। बड़ा परिवार था। मेरे और मेरे सबसे बड़े भाई की उम्र में बहुत फर्क था। मेरे बड़े भाई बैंक में नौकरी करते थे और उन्हें 10 रु. मासिक वेतन मिलता था। उन्हीं के पैसे से परिवार चलता था। हालांकि खेत और खेती भी थी। एक बड़ा बगीचा भी था। उससे भी कुछ आमदनी हो जाती थी। यानी हमारे परिवार के पास गुजारा करने के लिए सारे साधन थे। पूरा परिवार खुशहाल था।

इसी बीच जब पता चला कि अब घर-द्वार और खेत-खलिहान छोड़कर एक अनिश्चित भविष्य की ओर जाना है, तब बहुत ही बुरा लगा। मैं बहुत छोटा था। मगर उस विभाजन के बारे में कह सकता हूं इसने हजारों-लाखों परिवारों की जिंदगी पटरी से उतार दी। ■

उद्धव वरियानी
तंडू अल्लाह यार खां, सिंध, पाकिस्तान

...भारत में राहत की सांस ली

विभाजन के समय मैं 11 साल का था और छठी कक्षा में पढ़ता था। हम सिंध के तंडू अल्लाह यार खां में रहते थे। हालांकि मेरा जन्म नसरपुर गांव में हुआ था, जो झूलेलाल का जन्म स्थान है। शुरुआती पढ़ाई नसरपुर में ही हुई। तंडू अल्लाह यार खां में दोनों समुदायों की आबादी लगभग 20-20 लाख की थी। हिंदुओं और मुसलमानों के मुहल्ले अलग-अलग थे। मुझे याद है, 14 अगस्त 1947 को जब पाकिस्तान अलग हुआ था, उस दिन स्कूल में मिठाई बांटी गई थी। तब तक वहां का माहौल शांत था। पाकिस्तान बनने के 3 महीने बाद बड़े भाई हमें लेकर भारत आए, क्योंकि तब हालात बिगड़ने लगे थे। पाकिस्तान में हमारी दुकान थी और एक भाई वहीं थे।

पाकिस्तान बनने के 3 महीने बाद बड़े भाई हमें लेकर भारत आए। चूंकि वहां दुकान थी और एक भाई वहीं थे। इसलिए बड़े भाई लौट गए, पर लेकिन कुछ दिन बाद ही दोनों भाई दुकान बेचकर अजमेर आ गए। हम तंडू अल्लाह यार खां से सारा सामान लेकर रेलवे स्टेशन आए थे, लेकिन जिस ट्रेन से हमें जाना था, वह आई ही नहीं। इसलिए सामान के साथ हम स्टेशन पर ही पड़े रहे। ट्रेन दूसरे दिन आई, लेकिन हमें सामान ले जाने की अनुमति नहीं दी गई। इसलिए भारी सामान वहीं छोड़कर केवल कपड़े और खाने-पीने का सामान लेकर ट्रेन में चढ़े। ट्रेन में बैठते ही सारी खिड़कियां व दरवाजे बंद करा दिए गए। फौज के जवानों के सख्त निर्देश थे कि रास्ते में कहीं भी दरवाजे-खिड़कियां न खोलें। जब तक हम भारत की सीमा में प्रवेश नहीं कर गए, भय का माहौल बना रहा। पता चला कि ट्रेन भारत में प्रवेश कर गई है, तब जाकर हमने खिड़कियां खोलीं। ■

सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के

अनवरत 8 वर्ष

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

- **प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी)** में 5 लाख 5 हजार से अधिक पात्र हितग्राहियों को मिला घर। मध्यप्रदेश, देश में दूसरे स्थान पर।
- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि** में 83 लाख 78 हजार किसानों के खातों में 13 हजार 400 करोड़ रुपये से अधिक की राशि अंतरित।
- **प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना** अंतर्गत अब तक 79 लाख 84 हजार महिलाओं के लिए गैस कनेक्शन।
- **प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना** में 28 लाख 99 हजार गर्भवती माताओं को 1261 करोड़ रुपये से अधिक की राशि मजदूरी क्षतिपूर्ति के रूप में। योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश, देश में प्रथम स्थान पर।
- **स्वच्छ भारत मिशन 2021** में प्रदेश के इन्दौर, भोपाल, उज्जैन, देवास, नर्मदापुरम, बड़वाह और पचमढ़ी कैन्ट उत्कृष्ट शहर। 27 शहरों को स्टार रेटिंग।
- **अमृत मिशन** के अंतर्गत अब तक 6 हजार 894 करोड़ रुपये से अधिक लागत की 162 परियोजनाएँ स्वीकृत।
- **जल जीवन मिशन** के अंतर्गत 50 लाख से अधिक परिवारों को घर-घर नल से जल उपलब्ध।
- **प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना** के अंतर्गत 5 लाख 18 हजार से अधिक हितग्राहियों को 563 करोड़ रुपये से अधिक का ब्याज मुक्त ऋण वितरित। योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश देशभर में प्रथम।
- **आयुष्मान भारत पीएम जनआरोग्य मिशन** के अंतर्गत अब तक 7 लाख 72 हजार पात्र हितग्राहियों का निःशुल्क उपचार। 2 करोड़ 70 लाख से अधिक आयुष्मान कार्ड जनरेट कर मध्यप्रदेश, देश में प्रथम।
- **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना** के अंतर्गत प्रदेश के 1 करोड़ 89 लाख से अधिक हितग्राहियों को 96 हजार 500 करोड़ रुपये से अधिक की ऋण राशि स्वीकृत।
- **आयुष्मान भारत हेल्थ एण्ड वेलनेस सेंटर** प्रदेश में 9 हजार 100 से अधिक हेल्थ एण्ड वेलनेस सेन्टर के माध्यम से गरीबों को निःशुल्क स्वास्थ्य परामर्श, जाँचें एवं दवा वितरण।
- **वन नेशन, वन राशन कार्ड** कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य एवं राज्य से बाहर 87.69 लाख परिवारों ने पोर्टेबिलिटी के माध्यम से राशन प्राप्त करने का लाभ उठाया।
- **पोषण अभियान** के प्रभावी क्रियान्वयन के फलस्वरूप प्रदेश के 6 लाख 47 हजार बच्चों को कुपोषण से मुक्त कराया गया।
- **आंगनवाड़ियों में जन-सहभागिता** से बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए "एडॉप्ट एन आंगनवाड़ी" अभियान। जनता के सहयोग से करोड़ों रुपये की सामग्री प्राप्त।
- **प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना** के अंतर्गत 5 करोड़ 44 लाख लोगों को निःशुल्क राशन।

मोदी जी के कुशल नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़ता मध्यप्रदेश

धन्यवाद मोदी जी

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D19237/22

वीरभान खेरा
गदाई, डेरा गाजीखान, पाकिस्तान

'..वो सबसे बुरे दिन थे'

अन्य हिंदुओं की तरह हमारा परिवार भी पाकिस्तान से जान बचाकर भारत आया था। हम पंजाब प्रांत के डेरा गाजीखान जिले के गदाई गांव में रहते थे। विभाजन के समय चारों ओर से यही सुनने को मिलने लगा कि मुसलमानों ने मार-काट शुरू कर दी है। गदाई से कोई हिंदू कहीं जाता तो मुसलमान उसकी हत्या कर देते थे।

एक दिन हमें गांव छोड़ने का आदेश दिया गया। हमें गांव से दो मील दूर डेरा गाजी खान जाना था। हमारे पास गदहा था। पिताजी गदहे पर सामान लाद कर गांवों में बेचने जाते थे। हम बच्चों को गदहे पर बैठा दिया और माता-पिता पीछे-पीछे पैदल चल पड़े। हम डेरा गाजीखान पहुंचे। एक रात वहीं रुके। दूसरे दिन सेना के ट्रक में बैठा दिया गया। सारा सामान वहीं रह गया। डेरा गाजीखान में ही हमें पता चला कि मुसलमानों ने हमारे मौसा की हत्या कर दी। बहरहाल, हम सेना के ट्रक से दरिया सिंध के किनारे पहुंचे तो युवकों को नीचे उतार दिया गया। गाड़ियों में केवल बच्चे और महिलाएं बैठी रहीं।

दरिया बांध दो मील लंबा था। बांध खत्म होने के बाद हमें फिर से ट्रकों में बैठाया गया। हम मुजफ्फरगढ़ पहुंचे। यहां विभिन्न इलाकों से हिंदू शिविरों इकट्ठे हो रहे थे। कुछ दिन हम वहीं रहे। उस वक्त को याद करके आज भी सिहरन होती है। हमने जो समय देखा है, भगवान किसी दुश्मन को भी वह समय न दिखाए। हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। रविवार को मैं दिल्ली में कुतुबमीनार के पास रेहड़ी-पटरी वाले के पास काम करता था व जूठे बर्तन मांजता था। पूरे दिन काम करने की एवज में दो आने मजदूरी मिलती थी। मेरे लिए वो सबसे बुरे दिन थे। ■

सुरेंद्र कुमार मैनी
चकवाल, झेलम, पाकिस्तान

'अंत्येष्टि के लिए अनुमति'

मेरा जन्म 22 अक्तूबर, 1930 को झेलम जिले की चकवाल तहसील में हुआ। पिताजी ठेकेदार थे। चकवाल में कामकाज नहीं था, इसलिए 10वीं की पढ़ाई के बाद हमें सरगोधा जाना पड़ा। 1946 तक वहां सब कुछ ठीक था। लेकिन जनवरी 1947 में पाकिस्तान बनने की सुगबुगाहट होते ही माहौल खराब होने लगा था। चकवाल में तीन स्कूल थे। डीएवी स्कूल जिसमें केवल हिंदू, खालसा स्कूल में सिख और सरकारी स्कूल जिसे इस्लामी स्कूल भी कहा जाता था, उसमें 90 प्रतिशत से अधिक मुसलमान छात्र पढ़ते थे। 1947 की शुरुआत से ही उत्तर-पूर्व से मुसलमानों के उपद्रव की खबरें आने लगी थीं। स्थिति यह हो गई थी कि मुस्लिम बहुल इलाकों में हिंदुओं के शवों की अंत्येष्टि के लिए मुसलमानों से अनुमति तक लेनी पड़ रही थी। कभी-कभी शव दो दिन तक पड़े रहते थे। बाद में तो मुसलमानों ने साफ मना करना शुरू कर दिया। ऐसी स्थिति में हमने जुलाई के दूसरे सप्ताह में जम्मू जाने का फैसला किया। वहां मेरे नाना रहते थे। निकलने से पहले हम चकवाल जाकर सामान भी नहीं ले सके।

किसी तरह हम जुलाई के अंत में ट्रेन से जम्मू पहुंचे। वहां नाना रहते थे। जम्मू से तीन दिन पैदल चलकर हम अमृतसर स्टेशन पहुंचे। उन दिनों बिछड़े परिवारों का पता लगाने का एक ही माध्यम था-ऑल इंडिया रेडियो। उस कठिन समय में रा.स्व.संघ और गुरुद्वारा साहिब की ओर से हमारी बहुत मदद की गई। लोगों को खाने से लेकर उन्हें दूसरे स्थानों तक पहुंचाने में संघ के स्वयंसेवक लगे हुए थे। अमृतसर से हम मालगाड़ी से अंबाला आए और रेडियो पर संदेश भेजना शुरू किया, जिसे सुनकर परिवार के दूसरे लोग भी आ गए। ■

SGT UNIVERSITY

SHREE GURU GOBIND SINGH TRICENTENARY UNIVERSITY

(UGC & AICTE Approved) Gurugram, Delhi-NCR

nirf Ranked Amongst TOP 100 Pharmacy Colleges in India - 2022

acic SGTU

NITI Aayog

AIM ATAL INNOVATION MISSION

QS I-GAUGE INDIAN UNIVERSITY RATING DIAMOND

JAGRAN Josh

Best Private University Haryana by - Jagran Josh

THE TIMES OF INDIA

Top Emerging B-School in India #3 - Times of India

18 YEAR LEGACY IN EDUCATION

75 ACRE POLLUTION FREE, SELF-SUSTAINED CAMPUS

EXPRESSWAY CONNECTIVITY FROM AIRPORT

NURTURING FUTURE LEADERS

1800 102 5661

www.sgtuniversity.ac.in

Budhera, Gurugram-Badli Road, Gurugram (Haryana)-122505

Email : info@sgtuniversity.org

Phone : 0124-2278183-85

UPTO **100%** SCHOLARSHIP

OUR ACADEMIC & RESEARCH PARTNERS

intel IBM iOS ORACLE ASHRAE Laerdal Trimble next-gen NATIONAL UNIVERSITY OF PHYSICAL EDUCATION AND SPORTS, UKRAINE CHRIE jhpiego IET

thebmj AMITY UNIVERSITY Berkeley ABB SMC The Weather Company CIMA CWM NSE JOHNS HOPKINS

रमेश चंद्र कपूर
लाहौर, पाकिस्तान

'सामान के नीचे दबे थे हम बच्चे'

उस समय भारत विभाजन नहीं हुआ था। चारों तरफ से अनहोनी की खबरें आ रही थीं। हालात खराब देखकर हमने दुकानों पर ताला लगाया और विभाजन के 15 दिन पहले यह सोचकर पाकिस्तान से निकल गए कि कुछ दिन में माहौल शांत हो जाएगा तो लौट आएंगे। पर 15 अगस्त, 1947 के बाद हालात बिगड़ते चले गए।

एक दिन मैं स्नान कर रहा था। तभी बाहर शोर सुनाई दिया। बाहर से गोलियों के चलने की आवाजें आ रही थीं। इसके बाद भगदड़ मच गई। मां घबरा गईं। उन्होंने देखा कि मैं घर में नहीं हूं। उन्होंने दरवाजे के बाहर झांका। मैं बाहर था। उन्होंने फटाफट मुझे अंदर खींचा और दरवाजे-खिड़कियां बंद कर दीं। इसी के बाद लोगों ने घरों को छोड़ना शुरू कर दिया। हम लाहौर से ट्रेन से भारत पहुंचे। हालत यह थी कि बच्चों को ट्रेन में सामान की तरह ठूंस दिया गया था। पिताजी ने हमें भी उसी तरह खिड़की से अंदर ठूंस दिया। भीड़ इतनी थी कि आपाधापी में किसी को कुछ भी नहीं सूझ रहा था। सब जान बचाने में लगे हुए थे। ट्रेन में लोग बिना कुछ देखे-सुने सामान अंदर फेंक रहे थे। इसी दौरान हम दो बच्चे सामान के नीचे दब गए। हमारा दम घुट रहा था। हम नीचे से चीख-चिल्ला रहे थे, लेकिन हमारी आवाज किसी को सुनाई नहीं दे रही थी। इतने में इस तरफ किसी की नजर पड़ी तो उसने फटाफट सामान हटाया, तब जाकर जान में जान आई। हम किसी तरह हिमाचल में धर्मशाला होते हुए प्रेमनगर शरणार्थी शिविर पहुंचे। हमसे कहा गया कि जब तक माहौल शांत नहीं होता, तब तक वहीं रहिए। इसलिए हम लोग वहीं रहने लगे। कुछ दिन बाद देश का बंटवारा हो गया। ■

शकुंतला बहल घई
रावलपिंडी, पाकिस्तान

कब क्या हो जाए, कुछ पता नहीं

जब भारत का बंटवारा हुआ, उस समय मैं 14-15 साल की थी। मेरे पिता कर्नल सर्वप्रकाश बहल सेना में डॉक्टर थे। उन्हें रावलपिंडी में काली रोड पर सैन्य छावनी इलाके में ही सरकारी घर मिला हुआ था। परिवार आर्थिक रूप से संपन्न था। जब बंटवारे की बात चली तो पाकिस्तान में माहौल बिगड़ने लगा। मुसलमानों ने उपद्रव और लूटपाट शुरू कर दी। हथियारबंद मुसलमानों ने हिंदू कॉलोनियों को निशाना बनाना शुरू किया। वे बार-बार हिंदू कॉलोनियों पर हमले करते थे। उन्मादी मुसलमान जब भी हमले करते, पिताजी मदद के लिए सेना को बुला लेते थे। हालांकि सेना के आने के बाद दहशतगर्द भाग जाते, लेकिन गोलीबारी की आवाजें आती रहती थीं।

उन दिनों कहीं आग जल रही होती, कहीं चीख-पुकार की आवाजें सुनाई पड़ती थीं। मुसलमान झुंड में सड़कों-गलियों में 'अल्लाह-हू-अकबर' के नारे लगाते हुए घूमते थे। एक दिन अचानक कुछ मुसलमान हमारे घर में घुस आए। मां उनके पैर पकड़ कर गिड़गिड़ाती रहीं, पर वे खाने-पीने का सामान तक लूट कर ले गए। पिताजी आए तो नजारा देखकर सहम गए। इसी बीच, एक दिन शहर का माहौल बिगड़ गया। हमें और दूसरे बच्चों को एक कमरे में बंद कर दिया गया। हम 15 दिन तक उसी कमरे में रहे। कमरा केवल भोजन-पानी देने के लिए खुलता था। हर तरफ इतनी दहशत थी कि पिताजी को पाकिस्तान छोड़ने का फैसला लेना पड़ा। जब हमने पलायन किया तो हम रास्ते भर पुरुष, स्त्रियों और बच्चों की लाशें देखते भारत आए। आज भी उन दिनों को याद करके सिहरन होती है। हम सब कुछ वहीं छोड़कर चल पड़े। सेना ने हमें ट्रेन से अमृतसर भेजा। ■

हरियाणा सरकार

अधिगम

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रधानमंत्री जी के विज़न को साकार करते हुए
नई शिक्षा नीति के तहत हरियाणा सरकार का सार्थक कदम

Personalised & Adaptive Learning (PAL Software) युक्त

टैबलेट वितरित करने वाला

हरियाणा बना देश का पहला राज्य

सरकारी स्कूलों के बच्चों को
5 लाख टैबलेट का वितरण

साथ ही इन बच्चों को
डेटा कनेक्टिविटी
की भी सुविधा

सरकारी एवं निजी स्कूल के
बीच के अंतर को
समाप्त करने की दिशा में प्रभावी कदम

बच्चे अब सुनकर नहीं, करके सीखेंगे!

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

www.prharyana.gov.in | @DiprHaryana

वजीत चंद्र भाटिया
नवाबपुर, मुल्तान, पाकिस्तान

पीने के लिए पानी तक नहीं मिला

मेरा घर मुल्तान के नवाबपुर में था। उस समय मुल्तान में 6 तहसीलें थीं। 1947 की बात है। मैं एक हकीम के क्लीनिक पर काम करता था। एक दिन शाम को पता चला कि मुसलमान कुल्हाड़ियां, चाकू-छुरी और तलवारें मंगवा रहे हैं। उनकी योजना इलाके के हिंदुओं को मार डालने की थी। मुल्तान में एक लाहौरी दरवाजा था, मुसलमानों ने उसमें आग लगा दी।

हमारे गांव में 300 घर थे। एक दिन मुसलमानों ने रात को ही गांव पर हमला कर दिया। आसपास के केवल एक-दो मुसलमान ही बचाने वाले थे, बाकी सब के सब मारने वाले थे। हम सब घर के दरवाजे बंद कर छत पर चले गए। मुसलमानों के हमले होते तो अक्सर हम यही किया करते। साथ ही, अपने बचाव के लिए डिब्बों में मिर्ची पाउडर भरकर रखते थे। इस तरह हमने दहशत भरे दो दिन जैसे-तैसे काटे। तीसरे दिन हमें बचाने वाले मुसलमानों ने कहा कि यहां से जितनी जल्दी हो सके चले जाओ, नहीं तो दंगाई मार डालेंगे। हिंदुओं ने ट्रक का इंतजाम किया और फटाफट बिना कुछ लिए उसमें सवार हो गए। रास्ते में पानी तक नहीं मिलता था। हमारे पास मश्क में जो पानी था, उसी से बूंद-बूंद पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते थे। दो दिन तक हम बिना खाए-पिए यात्रा करते रहे। ट्रेन कहीं रुकती थी हम दौड़कर पानी लेने के लिए भागते थे, पर मुसलमान हमारे बर्तन फेंक देते थे और मार-पीट करते थे।

जब ट्रेन पटियाला पहुंची तो मुसलमानों ने महिलाओं-बेटियों को ट्रेन से उतार लिया। मुसलमानों ने महिलाओं की आबरू लूटी, उन पर अत्याचार किए। जबकि भारत के हिंदुओं ने उन्हें सकुशल जाने दिया। ■

बलदेव कपूर
रावलपिंडी, पाकिस्तान

दहशत का वह मंजर

हम रावलपिंडी में रहते थे। हमारे यहां के लोग गर्मियों में आमतौर पर कुमौली चले जाते थे। 1947 में रावलपिंडी का एक व्यक्ति नैनीताल गया। वहां से चिट्ठी लिखता कि यह बड़ा ही रमणीय स्थान है। चिट्ठी पढ़कर मेरे परिवार के कई लोग नैनीताल आ गए। मैं ही अकेला बचा। ननिहाल में नानी और मामा थे।

गड़बड़ी गर्मियों के दौरान शुरू हुई। मुसलमान गुंडे हिंदुओं को मार रहे थे, उनके घरों में आग लगा रहे थे, बलात्कार कर रहे थे। हमारी कई माताओं और बहनों ने इज्जत बचाने के लिए कुंओं में छलांग लगाकर जान दे दी। हमारे इलाके के पास नाला लाई था। उसके पार आबादी मुसलमान थी। हम लोग अपने मुहल्ले में रात-रात भर पहरेदारी करते। इस तरह हमने बलवाइयों को मुहल्ले में घुसने नहीं दिया। लेकिन हालात बदतर होते चले गए। मुझे मकान छोड़कर ननिहाल जाना पड़ा। अगले दिन लौटा तो घर पर उनका कब्जा हो चुका था। मैं मां के चाचाजी के यहां नया भल्ला चला गया। कुछ दिन वहां रहा।

मैं बिस्तरबंद कंधे पर लिए जा रहा था। एक गार्ड ने बिस्तरबंद में सींक गड़ाया और पूछा, ''काफिर! कहां जाता है।'' किसी तरह बचते-बचाते हम शिविर पहुंचे। मेरी नानी, उनके चाचा, छोटे मामा साथ थे। कोई सुरक्षा नहीं थी। जो मिलता, मुसलमान उसे काट डालते। हिंदुस्थान जाने के लिए कोई वाहन नहीं। चार दिन बीत गए। फिर खबर मिली कि सीमा पर गाड़ी लगी है। वहां पहुंचे तो 'अल्लाह हू अकबर' सुनकर मन घबराने लगा। एक महीने की अफरा-तफरी के बाद एक्सप्रेस ट्रेन लगाई गई तो रास्ते में मुसलमान इंजन काट ले गए। अगस्त के बाद हम विपत्तियां सहते हिंदुस्थान पहुंचे। ■

'भागो कबाइली आ गए'

ओमप्रकाश त्रेहन
मुजफ्फराबाद, पीओजेके

वह तारीख थी 22 अक्तूबर और वर्ष था 1947। नवरात्र की अष्टमी थी और उस दिन हिंदुओं के घरों में कन्या-पूजन हो रहा था। एक घर में पूजा होने के बाद कन्याएं दूसरे घर जाने के लिए निकलीं ही थीं कि हल्ला मचा- भागो, भागो कबाइली आ रहे हैं! हल्ला मचाने वाला एक ट्रक चालक था। मेरा गांव चिनारी मुजफ्फराबाद से 51 किलोमीटर और श्रीनगर से 125 किलोमीटर की दूरी पर है। गांव के पास ही राजमार्ग के किनारे एक ढाबा जैसा था, जहां ट्रक चालक आराम करते रहते थे। उस वक्त एक चालक वहां बैठा था, तभी रावलपिंडी की ओर से आने वाले एक ट्रक चालक ने उसे बताया कि रास्ते में कबाइली हैं और वे चिनारी के हिंदुओं पर हमला करने की योजना बना रहे हैं। चालक पूरी बात समझ गया और हमारे गांव आ गया। उसने हिंदुओं से कहा कि वक्त बहुत ही कम है, जैसे हो, वैसे ही ट्रक पर चढ़ो और यहां से भागो। गांव में हिंदुओं के केवल 16 घर थे, बाकी मुसलमान। हिंदुओं के सभी घर एक ही जगह थे। इसलिए तुरंत सब तक सूचना पहुंच गई और उस समय जो लोग वहां थे, आधे घंटे के अंदर इकट्ठे भी हो गए। पर कुछ लोग छूट गए।

जल्दबाजी में जो जितना सामान ले सका, लिया और ट्रक में बैठ गए। दुर्भाग्य से ट्रक में डीजल बहुत कम था। चालक ने हमसे मिट्टी का तेल मांगा और टंकी में डाल दिया। ट्रक श्रीनगर की ओर बढ़ा, पर करीब 10 किमी बाद ही डीजल खत्म हो गया। इसके बाद हम पैदल ही आगे बढ़ने लगे। करीब 30-35 घंटे पैदल चलने के बाद हम श्रीनगर पहुंचे। रास्ते में पता चला कि हमारे घर लूट लिए गए। जो हिंदू रह गए थे, उन्हें मार दिया गया। श्रीनगर से हम लोग जम्मू और फिर दिल्ली पहुंचे। मैं उस समय दो साल का था। ये बातें मां ने मुझे बताईं। ■

VNSGU
VEER NARMAD SOUTH GUJARAT UNIVERSITY, SURAT
ISO 9001 : 2015
ISO 14001 : 2015
Certified University
'A' Grade University
Re-Accredited by NAAC
POST GRADUATE DEPARTMENTS
Comparative Literature | Economics | English | Gujarati | Sociology
Public Administration | Human Resource Development | Mathematics | Statistics
Library & Information Science | Fine Arts | Law | Chemistry | Physics | Biosciences
Architecture | Interior Design | Journalism & Mass Communication | Commerce
Computer Science | Information and Communication Technology | Education
Business and Industrial Management | Rural Studies | Aquatic Biology
Biotechnology | University Science Instrument Center
FACULTIES AT THE UNIVERSITY
Commerce | Science | Management Studies | Education
Arts | Law | Computer Science & IT | Rural Studies | Architecture
ADMISSION 2022-23
Scan this QR Code to visit the admission page
Visit us at : www.vnsgu.ac.in
DIGITAL HELP LINE
0261 - 23 88 888
Veer Narmad South Gujarat University
Udhna-Magdalla Road, SURAT - 395 007 (Gujarat) India. Tel : 2227141 to 46
SALIENT FEATURES
Scholarship from Digital Gujarat | Training & Placement Cell
Double Entry Admission System | Certificate Courses
Faculty wise Laboratory | Sports & Hygienic Cafeteria
High Speed Internet & Wi-Fi | CCTV Surveillance
Excellent Modern Infrastructure | Modern Library
VNSGU Virtual Tour | Optical Fibre Network
Kiosk Facility | Chat Bot through WhatsApp
Highly Educated and Professional Faculties
Job Fair with Professional Companies

सतीश दुरेजा
नवांशहर, मुल्तान, पाकिस्तान

'संघ स्वयंसेवकों ने बचाई जान'

हम लोग मुल्तान शहर से करीब 2 किलोमीटर दूर नवांशहर की एक बस्ती में रहते थे। नवांशहर में हमारा चार मंजिला मकान हुआ करता था। यहां हर तबके के थोक व्यापारियों का आना–जाना लगा रहता था। मुझे खूब याद है तब मैं करीब 7 साल का था। मुल्तान में भी उन दिनों बंटवारे के खूब चर्चे चला करते थे। फिर आखिरकार बंटवारे का फैसला हुआ।

हमारे चार मंजिला घर में चूंकि जगह बहुत थी तो जब बंटवारे का शोरगुल बढ़ने लगा तब आसपास के करीब 100 घरों के हिन्दू हमारे घर आ गए। महिलाओं और बच्चों को छत पर चढ़ा दिया गया। नौजवान लोग नीचे के तलों पर रहे। शाम होते ही अल्लाह-हो-अकबर के नारे लगाते मजहबी उन्मादी हमारे घर को घेर लेते थे। तब हम छत से पतीलों में गर्म किया पानी, उन पर फेंकते जिससे उन्मादी भाग खड़े होते। जैसे-तैसे हमने कुछ दिन खुद को उन उन्मादियों से बचाए रखा। नवांशहर के सभी हिन्दू मुल्तान के उस किले में इकट्ठे हो गए। वहां सबका पंजीकरण हुआ। फिर खुली, बिना शौचालय वाली मालगाड़ियों से ही हिन्दुओं को भारत भेजा जाने लगा। खाने को कुछ पास नहीं था। रास्ते में एक जगह गाड़ी रुकी तो हमारे डिब्बे से एक आदमी लघुशंका करने को उतरा। मैं डिब्बे की एक दरार से बाहर उसकी तरफ देख रहा था। तभी तलवार लिए दो–तीन मुसलमान आए और मेरी आंखों के सामने उसकी गर्दन उतार दी। मालगाड़ी के चालकों ने शुरू में ही मुल्तान स्टेशन से गाड़ी आगे बढ़ाने को मना कर दिया, तब रा.स्व.संघ के स्वयंसेवकों ने आगे आकर कहा, हम चलाएंगे गाड़ी। इतना ही नहीं, रास्ते भर संघ स्वयंसेवकों ने हमें सुरक्षा प्रदान की। ■

नानकचंद नारंग
झंग, पाकिस्तान

'एक नाले में छिपकर बचाई जान'

बंटवारे के दिनों में मैं करीब साढ़े छह साल का था। पाकिस्तान बनने का शोर सुनाई देने लगा था। हमारे यहां भी हिन्दू–मुसलमान तनाव बढ़ता जा रहा था। मुसलमान आक्रामक होते जा रहे थे। वे चाहते थे कि यहां के सारे हिंदू अपना सब कुछ हमारे हवाले करके हिन्दुस्थान चले जाएं। उन दिनों हम भाई-बहन माताजी के साथ मामाजी की शादी के लिए नानी के घर गए हुए थे, गए तो पिता जी भी थे लेकिन वे शादी के फौरन बाद अपने गांव चले आए थे। हमारी नानी के गांव में गिने–चुने हिन्दू परिवार रहते थे। तो हालात बिगड़ते देख गांव के प्रधान ने एक बस की व्यवस्था करके हिन्दू परिवारों को उसमें बैठाकर सरगोधा भिजवा दिया। वहां हिन्दुओं के लिए एक कैंप लगाया गया था। हम सब उसमें जाकर रहने लगे। तब बीच–बीच में प्रधान जी आकर जरूरत की चीजें दे जाया करते थे, बड़ी मदद की थी उन्होंने। कुछ समय शिविर में बिताने के बाद, हम अपने मामा के साथ, बाकी लोगों के साथ सरगोधा से चंडोर नहर के पास चले गए। दूसरी तरफ हमारे गांव से हमारे पिताजी भी और लोगों के साथ नहर तक आ पहुंचे। फिर हम सब लायलपुर आए। हम लोग तो अपने पिताजी के साथ हिन्दुस्थान के लिए बढ़ गए, लेकिन मामा जी बाद में काफिले के साथ हिन्दुस्थान पहुंचे थे।

खैर, रास्ते में एक जगह दंगा-फसाद देखकर, पिताजी मुझे लेकर एक नाले में छिप गए और महिलाओं को पास के एक घर में छिपा दिया। हमारा सारा सामान लुट गया। पर जान बच गई। अगले दिन हम ट्रेन से अमृतसर आए। वहां घोषणा हुई कि लायलपुर-झंग से आए लोगों के लिए कुरुक्षेत्र में कैंप लगाया गया है, वहां चले जाएं। वहां सबको रहने की जगह मिलेगी। ■

PMFME
सूक्ष्म उद्यमों का संबल

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना

PRADHAN MANTRI FORMALISATION OF MICRO FOOD PROCESSING ENTERPRISES (PMFME) SCHEME

संबल यानी सहयोग सहयोग से बढ़ेगा उद्योग

For private micro food processing industries, credit linked subsidy of 35% of the cost (up to Rs. 10 lakhs) is given to eligible projects per industry.

Grants-in-aid are provided to credit, producer, co-operative and self-help groups at a rate of 35% with credit linked.

Under this scheme, Rs. 40,000 is given to each member of self help groups for purchasing working capital as well as small equipment.

MOFPI
MINISTRY OF FOOD PROCESSING INDUSTRIES
GOVERNMENT OF INDIA

@gaicIofficial www.pmfme.mofpi.gov.in

For More Information Contact : Gujarat Agro Industries Corporation Limited
Gujarat State Civil Supplies Corporation Administrative Complex,
CH - Road, Sector - 10/A, Gandhinagar

Gujarat Agro Industries Corporation

ओमप्रकाश शर्मा
लाहौर, पाकिस्तान

'हिन्दुओ! भाग जाओ'

विभाजन के समय मैं 22 साल का था। हमारा परिवार लाहौर के शाहआलमी दरवाजे के अंदर पुराने शहर में रहता था। हिन्दुओं के दूसरे मुहल्ले भी थे-कृष्णनगर, श्यामनगर आदि। बाद में हम पुराने शहर से कृष्णनगर आ बसे थे। लाहौर में भी यह चर्चा चलने लगी थी कि बंटवारा होगा। उस वक्त उन्मादियों के विरुद्ध हिन्दू एकजुट होने लगे थे। आपस में सलाहें होती थीं। संघ के कार्यकर्ता भी मदद के लिए आते रहते थे। वहां हिन्दुओं के कैंप थे- प्रताप, मिलाप, वीरबहादुर आदि। मैंने खुद संघ का तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण किया हुआ है।

लाहौर में मैं संघ का जिला कार्यवाह रहा था। वहां बंटवारे की ताजा खबरें पता चलती रहती थीं। लाहौर में उन दिनों मुस्लिमों के उग्र प्रदर्शन हुआ करते थे। वे नारे लगाते थे- 'पाकिस्तान जिंदाबाद', 'हिन्दुओ, यहां से चले जाओ'। ऐसे में हिन्दुओं को वहां खतरा पैदा होता दिखाई देने लगा। हालांकि कोई बहुत ज्यादा हिंसा तो वहां नहीं दिखाई देती थी। मेरे पिताजी उन दिनों शक्करगढ़ में थे। हम अपने बड़े भाई के परिवार के साथ रहते थे। हम भी हिन्दुओं के जत्थे बनाकर स्वतंत्रता की लड़ाई में सहयोग देते थे। विभाजन के बाद हमारा परिवार दिल्ली आ गया। और परिवार भी साथ थे। रास्ते में मुसलमानों ने हमारी टोली पर हमला भी बोला, कई लोगों को मार डाला। लेकिन हम किसी तरह बचते-बचाते दिल्ली में एक शरणार्थी शिविर पहुंचे। वहां शिविर का कमांडेंट था टोपनदास। वह एक भला सिंधी आदमी था। मैंने उससे रहने के लिए मकान दिलाने के लिए मदद करने को कहा। उसने फिर पहाड़गंज में एक शरणार्थी कॉलोनी में मकान दिला दिया। मैंने यहां पढ़ाई पूरी की। ■

भगवान दास मेहता
डेरागाजी खान, पाकिस्तान

' हमें बेघर होना पड़ा'

वर्ष 1947 में भारत विभाजन के बाद भी हम लोग तीन महीने पाकिस्तान में रहे। उस समय मैं 12 साल का था। हमारा परिवार डेरा गाजीखान जिले के चारू गांव में रहता था। मुझे खूब याद है कि विभाजन से दो-तीन साल पहले ही मेरे पिताजी ने चार मंजिल का बहुत सुन्दर मकान बनवाया था। सभी सुखपूर्वक रह रहे थे। किसी तरह का अभाव नहीं। दुर्भाग्यवश भारत का बंटवारा हो गया और इसके साथ ही पाकिस्तानी हिस्से में रहने वाले हिंदुओं के दुर्दिन शुरू हो गए। अगस्त का महीना रहा होगा। एक रात हमारे गांव पर मुसलमानों ने हमला कर दिया। इसके बाद हम सभी हिंदू गांव में दिन-रात पहरा देने लगे। इससे भी मुसलमान चिढ़ गए और वे कहने लगे कि तुम लोग गांव से चले जाओ।

उस समय बाहर निकलना खतरे से खाली नहीं था। इसके बाद गांव के सभी हिंदुओं ने बाहर निकलना ही ठीक समझा। एक बस मंगाई गई। कुछ कपड़े और खाने-पीने की चीजों के साथ हम लोग बस में चढ़े। बस ठसाठस भर गई। लोग बस की छत पर भी बैठे। उस वक्त हम सभी रो रहे थे। सभी ने अपने-अपने घरों को प्रणाम किया और भारी मन से बस में बैठ गए।

गांव से हम लोग डेरा गाजीखान आए। वहां एक शिविर लगा था। इसमें डेरा गाजीखान के अनेक गांवों के हिंदू रह रहे थे। हम लोग भी उसी शिविर में रहे। कभी खाना मिलता, तो कभी नहीं। कई-कई दिन बाद नहाने के लिए पानी मिलता। कह सकते हैं कि वह शिविर किसी जेल से कम नहीं था। जेल तो सुरक्षित होती है, पर वहां हम लोग असुरक्षित थे। हमले का डर बना रहता। उसी डर के माहौल में वहां तीन महीने रहे। वे तीन महीने 30 वर्ष से कम नहीं थे। ■

RSPL
EVOLUTION IS CONSTANT

घड़ी डिटर्जेन्ट
भारत का No.1

घड़ी
डिटर्जेन्ट पाउडर

पहले इस्तेमाल करें, फिर विश्वास करें

*As per Nielsen Retail Index data for MAT December 2021. All India (Urban+Rural) market in Washing Powder Category.

मेघराज भाटिया
नई बस्ती, मुल्तान, पाकिस्तान

'टपक रहा था हिंदुओं का खून'

बात सितंबर,1947 की है। उस वक्त मैं नवाबपुर के सरकारी विद्यालय में पढ़ रहा था, तभी पता चला कि मुलतान में आगजनी हुई है। कुछ देर बाद धुआं नवाबपुर के ऊपर भी दिखने लगा। यह देख सभी बच्चे डर गए। अभी कुछ ही देर हुई थी कि स्कूल के बाहर मुसलमान दंगाई पहुंच गए। मैं बहुत मुश्किल से स्कूल से निकला, लेकिन अपने गांव नहीं जा सका। नवाबपुर में ही मेरी नानी रहती थीं। मैं उनके पास चला गया। उधर गांव में मार-काट होने लगी। मुसलमानों की धमकी के बाद सारे लोग अपनी जन्मभूमि छोड़ने के लिए मजबूर हो गए। गांव से हम लोग मुलतान आए। यहां एक शिविर में रहे।

एक दिन लाउडस्पीकर से यह एलान किया गया कि ट्रेन आ गई है और शिविर में रह रहे लोगों को हिंदुस्थान जाना है। वह मालगाड़ी थी और खचाखच भरी हुई थी। गाड़ी का चालक मुसलमान था। वह गाड़ी बहुत धीरे चलाता था। जिहादी तत्व इसका फायदा उठाते। वे लोग गाड़ी पर पत्थर फेंकते। ज्यादातर लोग घायल अवस्था में फाजिल्का पहुंचे। जिस ट्रेन को 8 घंटे में पहुंचना था, वह 36 घंटे में पहुंची।

घंटों फाजिल्का रेलवे स्टेशन पर ही रहे। इस दौरान वहां जितनी भी गाड़ियां पाकिस्तान की ओर से आतीं, उनमें शव ही शव होते। डिब्बों से खून टपक रहा था। मैं उस दृश्य को आज भी कभी-कभार याद कर सुबुकने लगता हूं। फाजिल्का में हम एक सप्ताह रहे। इसके बाद हम भिवानी आए। यहां हम दो महीने रहे। इसके बाद फरवरी, 1948 में किंग्सवे कैंप, दिल्ली आ गए। यहां पिताजी ने बढ़ई का काम किया। उसी से गुजारा होता रहा। ■

विजय कुमार मल्होत्रा
ग्वालमंडी, लाहौर, पाकिस्तान

'विलक्षण वीरता से भरे स्वयंसेवक'

मुझे अभी भी याद है 15 अगस्त,1947 का वह दिन, जब लाहौर सहित पूरे पश्चिम पंजाब और सीमांत क्षेत्रों में रहने वाले हिन्दू-सिखों के घर धू-धू कर जल रहे थे। लोग हजारों के काफिले में सुरक्षित स्थान की तलाश में भारत की ओर भाग रहे थे। स्थान-स्थान पर अपहरण, लूटपाट और हत्याएं की जा रही थीं। रेलगाड़ियां चल तो रही थीं लेकिन भीड़ इतनी ज्यादा थी कि लोग डिब्बों की छतों पर बच्चों समेत बैठने को मजबूर थे। छतों पर बैठे कितने ही लोग पटरियों के पास छिपे पाकिस्तानी मुसलमानों की गोलियों का शिकार हो गए। मैं उस समय लाहौर में था और मैंने लोमहर्षक घटनाएं स्वयं देखी थीं, जो 75 वर्ष बीत जाने के बाद आज भी दिलो-दिमाग को दहला देती हैं। उन्हीं दिनों पंजाब के संघ स्वयंसेवकों के लिए फगवाड़ा में ओटीसी लगी हुई थी। यह शिविर 20 अगस्त को समाप्त होना था, लेकिन पश्चिमी पंजाब व सीमांत क्षेत्रों में हिन्दुओं के साथ भीषण मार-काट, हत्या व बड़ी संख्या में हिन्दू-सिखों के पलायन की खबरें आ रही थीं। इस समय फगवाड़ा में 1900 स्वयंसेवक और अधिकारी मौजूद थे। संघ अधिकारियों ने निर्णय लिया कि शिविर को 20 अगस्त की बजाए 10 अगस्त को ही समाप्त कर दिया जाए। हम लोग 10 अगस्त को ही पहली गाड़ी से लाहौर के लिए चल पड़े। अटारी स्टेशन पार करते ही वातावरण बदला-सा मिला। लाहौर पहुंचते ही स्टेशन पर संघ द्वारा संचालित पंजाब रिलीफ कमेटी का शिविर लगा हुआ था। वहां सेवा कर रहे स्वयंसेवकों ने बताया कि दूसरे प्लेटफार्म पर एक अन्य गाड़ी खड़ी है, जिसे रावलपिंडी से आते समय लूटा गया, और अनेक लोगों की हत्या कर दी गई। ■

Since 1980

गोल्डी® मसाले

की ओर से सभी देशवासियों का

स्वतन्त्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनायें

जहाँ जाए रिश्ते बनाए

मसाले • हींग • अचार • चाय • पापड़ • गुलाब जामुन मिक्स • सेवइयाँ • सॉस • धूपबत्ती आदि

www.goldiee.com | 1800 123 201201 | customercare@goldiee.com

डॉ. ओमप्रकाश पाहुजा
लईया, मुजफ्फरगढ़, पाकिस्तान

'नेहरू ने बुजुर्ग को मारा थप्पड़'

बंटवारे के समय मैं छह साल का था। गांव में एक अज्ञात भय व्याप्त था। शाम होते ही वह दरवाजा बंद कर दिया जाता था। मुझे याद है, हमारे घर की छत पर बड़े- बड़े कड़ाहों में तेल गरम करने की व्यवस्था की गई थी, ताकि मुसलमान अगर घर पर हमला करेंगे तो दरवाजे को तोड़ने में उन्हें काफी समय लगेगा, इतने में यह तेल और तेजाब उनके ऊपर डालकर उनको भगाने का काम करेंगे। मेरे बड़े भाईसाहब संघ की शाखा में जाया करते थे। एक दिन उनके पीछे-पीछे मैं भी संघ स्थान चला गया और शाखा में पूरे समय रहा। आनंद आया तो अगले दिन से यह क्रम जारी रहा। खैर, विभाजन के समय हालात बहुत खराब हो गए तो जैसे- तैसे हम अपने घर का कुछ सामान साथ लेकर वहां से चले। लईया से ट्रेन ली और परिवार के साथ पानीपत आ गए। मैं मंडी से भुट्टे लाता और सड़क किनारे बेचता था, ताकि शाम को कुछ पैसे मिल जाएं। एक घटना याद आती है जब पानीपत के राहत शिविर में जवाहर लाल नेहरू गए थे। उनके साथ इंदिरा गांधी भी थीं। वे लोगों को समझा रहे थे कि शांति बनाएं रखें, समय के साथ सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन जो भी उनके शांति प्रवचन सुन रहा था, उसके हृदय में खून खौल उठता था। इसका जवाब लोगों ने तब दिया जब नेहरू जी शिविर से लौट रहे थे। एक बुजुर्ग ने इंदिरा गांधी का हाथ पकड़कर खींच दिया तो नेहरू ने उसे थप्पड़ मार दिया। तब उसी बुजुर्ग ने कहा कि 'ये बेटी मेरी पोती के बराबर की है। लेकिन मेरा जरा सा हाथ लग गया तो तुम्हारा खून खौल उठा, हम लोगों ने तो अपना सब कुछ खोया है, शर्म नहीं आती हमें शांति का पाठ पढ़ाते हुए।' खैर, समय बीता और मैं दिल्ली आ गया। ■

वेद प्रकाश तुली
रावलपिंडी, पाकिस्तान

'हर स्थिति में डटे रहे स्वयंसेवक'

बंटवारे के समय रावलपिंडी में मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता था। उस समय स्कूल से लेकर घर तक एक ही माहौल था कि हिन्दुओं को पाकिस्तान छोड़ना ही पड़ेगा। मेरे पिताजी नॉर्दन रेलवे में कर्मचारी थे। पिताजी का आए दिन स्थानांतरण होते रहने के कारण हम लोगों के रहने का ठिकाना भी बदलता रहता था। लेकिन दूसरी ओर पाकिस्तान के हालात भी दिन-प्रतिदिन खराब होते जा रहे थे। हिन्दुओं के घरों, दुकानों को निशाना बनाया जाने लगा। कुछ ही दिन में सैकड़ों लोगों का कत्लेआम कर दिया गया।

उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक पूज्य गुरुजी ने पाकिस्तान में रह रहे हिन्दुओं से आह्वान किया कि उन्हें किसी भी परिस्थिति को सहते हुए डटे रहना है लेकिन जब हालात ज्यादा खराब हो गए और ऐसा लगा कि सभी हिन्दुओं को मार दिया जाएगा तो गुरुजी के आदेशानुसार स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर पाकिस्तान से विभिन्न रास्तों से आने वाले हिन्दुओं की हरसंभव मदद की और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। इसी बीच मैं भी परिवार के साथ अमृतसर आ गया, जहां मेरी बुआ जी रहती थीं। लेकिन मेरे पिता जी नौकरी के कारण पाकिस्तान में ही थे। कुछ दिन अमृतसर के पास रहना हुआ।

इसी बीच मेरे चाचा जी भी अमृतसर आ गए। कुछ दिन बाद वे दिल्ली आ गए और एक बिस्कुट फैक्ट्री की शुरुआत की। मैं भी पढ़ाई के साथ बिस्कुट फैक्ट्री का काम देखने लगा। कुछ समय के बाद पिताजी का स्थानांतरण आगरा हुआ तो मैं आगरा चला गया। मेरी पढ़ाई-लिखाई वहीं हुई। ■

HAR GHAR
TIRANGA
13-15 अगस्त 2022
75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव
राजन मुथरेजा
जिला कोषाध्यक्ष, भाजपा फरीदाबाद
RajanMuthreja rajanMuthreja rajanmuthreja

राजकृष्ण
दिपालपुर, मिंटगुमरी, पाकिस्तान

रास्ते में चारों तरफ लाशों का अंबार

एक ऐसा बवंडर उठा कि 1947 में हम जैसे अनगिनत हिंदुओं को अपना घर-बार छोड़ना पड़ा। उस वक्त मैं सातवीं में पढ़ता था। चारों ओर दंगे-फसाद होने लगे। गांव के पास ही नौखड़ा नाम की एक जगह थी। वहीं पर गांव के सारे हिंदू इकट्ठे हो गए। एक शाम हमारे गांव के पीछे के गांवों से हजारों हिंदुओं का काफिला आ रहा था। हम सब भी उसी में शामिल हो गए। दो दिन बाद यह काफिला पैदल ही फाजिल्का (पंजाब) पहुंचा। कभी तेज बारिश, तो कभी तेज धूप होती। बारिश के कारण सारे गड्ढे और तालाब पानी से भर गए थे। उनमें लाशें तैर रही थीं। वे उन हिंदुओं की थीं, जिन्हें गाड़ी रोककर मुसलमानों ने मार दिया था। यह भी पता चला कि जो हिंदू किसी कारणवश किसी काफिले में शामिल नहीं हो पाए, उन्हें मार दिया गया। हमारे परिवार में माता-पिता के अलावा मेरे दो भाई थे। पिताजी वहां पर खेती करते और मेरे बड़े भाई लाहौर में नौकरी करते थे। वहां का घर बहुत बड़ा था। सारी संपत्ति वहीं रह गई। भारत आने के बाद जगह-जगह भटकते रहे। न जाने कितनी रातें खाली पेट सोना पड़ा। एक कमीज और एक पैंट से ही काम चलाना पड़ता। सर्दी के लिए तो कपड़े होते ही नहीं थे।

अपनी जन्मभूमि देखने का आज भी मन करता है, परंतु मजबूरी है कि हम अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकते। कई दफा रात को नींद नहीं आती तो मन से वहीं पर अपनी गलियों में घूम आते हैं। लगता है मां की गोद में बैठे हैं और फिर नींद आ जाती है। भला कोई कैसे अपनी जन्मभूमि को भूल सकता है?

स्वदेश पाल
मीरपुर, पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर

'स्वयंसेवकों ने दिया साथ'

विभाजन के समय मेरी आयु 7 वर्ष थी। मैं मीरपुर में रहता था। 15 अगस्त, 1947 को जब विभाजन के कारण पाकिस्तान से हिन्दू भारत आ रहे थे, उस समय मीरपुर के लोगों को आशा थी कि जम्मू-कश्मीर राज्य के राजा हरि सिंह का क्षेत्र होने के कारण इसका भारत में ही विलय होगा। मुजफ्फराबाद या आस-पास के क्षेत्रों से जो पलायन हो रहा था, मीरपुर के हिन्दुओं ने उन्हें अपने में ही बसा लिया और वे 7-8 हजार लोग इन हिन्दू परिवारों में ही समा गए। इस प्रकार मीरपुर की आबादी जो कि 10-12 हजार थी वह 15-20 हजार के बीच हो गई। लेकिन कुछ ही समय बाद पाकिस्तानी कबाइलियों ने मीरपुर पर स्थानीय मुसलमानों को साथ लेकर आक्रमण किया। मुझे याद है कि कबाइलियों ने 5-6 दिन पूरे इलाके को घेर कर रुक-रुक कर फायरिंग की। इससे समाज में दहशत फैल गई। इस हालत में महाराजा हरि सिंह ने एक अधिकारी के नेतृत्व में एक सैन्य टुकड़ी मीरपुर की सुरक्षा के लिए भेजी। लेकिन कम संख्या के कारण वह ज्यादा समय नहीं रुक सकी। उन दिनों मीरपुर में अच्छी शाखा लगती थी। स्वयंसेवकों ने संगठित होकर सेना के साथ मोर्चा संभाला। लेकिन हमारी संख्या कम थी, इसलिए हमें पीछे हटना पड़ा। यह देख मीरपुर के निवासियों का मनोबल टूट गया। धीरे- धीरे लोग मीरपुर छोड़ने लगे। इस माहौल को देखकर यह तय हुआ कि एक गुरुद्वारे में सभी एकत्र होंगे और आगे क्या करना है, इस पर विचार करेंगे।लेकिन भगदड़ के कारण कम ही लोग वहां पहुंचे, क्योंकि लोग अपनी जान बचाने के लिए जम्मू या अन्य क्षेत्रों की ओर भाग रहे थे। वह बहुत ही बुरा समय था। अब मीरपुर में हिंदू नहीं रहते हैं।

'नहीं भूलते बंटवारे के दिन'

ईश्वर दास महाजन, सकरगढ़, पाकिस्तान

बंटवारे के वक्त नागपुर में संघ का तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था। इस बीच पाकिस्तान से हिन्दुओं के पलायन की खबरें आनी शुरू हुईं। संघ अधिकारियों ने वर्ग को जल्दी समाप्त कर दिया ताकि सीमापार के स्वयंसेवक अपने परिवार की मदद कर सकें। मैंने देखा कि पंजाब से लेकर पाकिस्तान में रहने वाले स्वयंसेवकों ने जान की बाजी लगाकर हिंदुओं की मदद की। अनेक बलिदान भी हुए। लेकिन ना तो स्वयंसेवकों के कदम ठिठके और ना ही डरे।

लोग ट्रेन, नाव, बैलगाड़ियों और पैदल चलकर अमृतसर पहुंच रहे थे। इन सबकी आपबीती थी। किसी का बेटा मारा गया था तो किसी की पत्नी का अपहरण कर लिया गया था तो किसी के पिता को आंखों के सामने गोली से उड़ा दिया था। स्वयंसेवक इन सभी परिवारों की हरसंभव मदद कर रहे थे। ■

जो कुछ हूं, संघ की बदौलत हूं

छत्रपति , डेरा इस्माइलखान, पाकिस्तान

बंटवारे के दौर की रातों को पाकिस्तान से आने वाला कोई भी हिन्दू नहीं भूल सकता। मैं उस समय 8 वर्ष का था। मुझे याद है जब ज्यादा माहौल खराब होने लगा तो हमारे चाचा संघ के स्वयंसेवकों के साथ छत पर पहरा दिया करते थे ताकि हिन्दू मोहल्ले में आततायी हमला न करने पाएं। दिनोंदिन आतंक बढ़ता जा रहा था। लोग पलायन करने पर मजबूर थे। जब हम सभी लोग मोहल्ले से निकल रहे थे तो सैनिकों ने बड़ी मदद की। उनके डर के कारण स्थानीय मुसलमान हमला नहीं कर पाए। लेकिन जो लोग हमसे पहले निकले थे, उन्हें मुसलमानों ने मार-काट दिया। हम सभी बचते हुए किसी तरह अलवर पहुंचे। और फिर दिल्ली। यहां संघ के स्वयंसेवक पाकिस्तान से आने वाले परिवारों की हर संभव मदद कर रहे थे। उनके कारण हमारी भी बहुत जल्दी रहने की व्यवस्था हो गई। चूंकि आर्थिक स्थिति खराब ही थी। तो चांदनी चौक में कंघी तक बेची। ■

'अंतिम संस्कार नहीं हुआ'

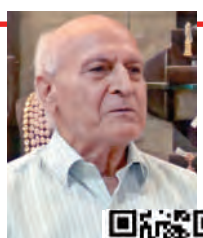

प्रभुदयाल चुटानी
डेरा गाजीखान, पाकिस्तान

विभाजन के समय दो साल का था। मेरे पिताजी जब तक जीवित रहे, वे विभाजन के दौरान होने वाले अत्याचारों को बताते रहे। बंटवारे के समय हमारे कोटछूटा कस्बे में भी लूटपाट-आगजनी हुई। उस वक्त कोटछूटा में एक बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, जिनका नाम था- चौधरी पुन्नू राम। वे हिंदू और मुसलमानों के बीच भी प्रभाव रखते थे। उनके प्रभाव के कारण हिंदुओं को पहले ज्यादा दिक्कत नहीं हुई, लेकिन जब आसपास के इलाकों से हिंदू पलायन कर गए तब कोटछूटा पर हमले अधिक होने लगे। उन्होंने एक दिन कई ट्रक मंगवाए और हिंदुओं से कहा कि इनमें अपना सामान रखो और यहां से निकलो। मेरे दादाजी मंगाराम भी एक ट्रक पर सवार होने लगे, तभी वहां कुछ मुसलमान आए और उन्होंने हमला कर दिया। वे बुरी तरह घायल हो गए। दादाजी के शरीर से इतना खून बहा कि रास्ते में ही उनका निधन हो गया। ■

'महिलाएं रहती थीं निशाने पर'

तिलकराज रावल, गुजरांवाला, पाकिस्तान

उस समय मेरी उम्र लगभग 17 साल थी। हालात खराब होते देख मेरे पिताजी ने परिवार की जितनी भी महिलाएं थीं, उन्हें घर से निकालना शुरू किया। क्योंकि महिलाएं ही मुसलमानों का सबसे आसान शिकार होती थीं। झांगवाला से मेरा परिवार मौसी के घर जम्मू आ गया। जब सारा परिवार और कुछ नाते-रिश्तेदार सकुशल जम्मू आ गए तब पिता मुझे लेकर 12 अगस्त, 1947 को जम्मू पहुंचे। मुझे याद है कि अगले दिन खबर आई कि 13 अगस्त को पाकिस्तान से जो ट्रेन चली थी, उसे मुसलमानों ने पूरी तरह से काटकर भारत भेजा है। लेकिन हम पर भगवान का आशीर्वाद था, इसलिए हम सकुशल बचकर आ गए। निश्चित ही इस तरह के हालात के बारे में कभी किसी ने नहीं सोचा था। रास्ते में हमने अपनी आंखों से देखा कि पटरी की दोनों तरफ लाशें बिखरी पड़ी थीं। खून-खराबा हुआ था। पटरी से बदबू आ रही थी। ■

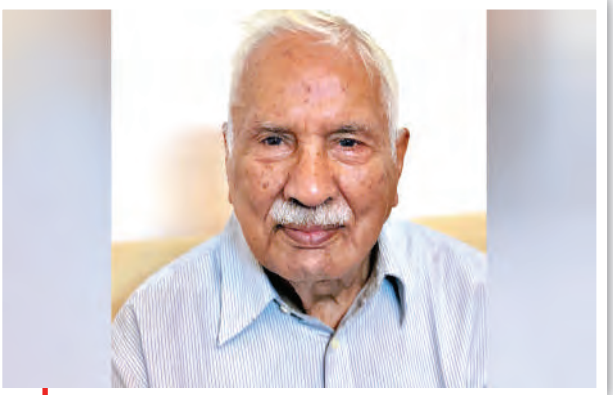

कृष्णलाल कोहली
मुगलपुरा, लाहौर, पाकिस्तान

'आज भी याद हैं भय से भरे चेहरे'

बंटवारे के दिनों को याद कर अब भी विचलित हो जाता हूं। इंसानियत तो कुछ बची ही नहीं थी। उन दिनों मेरा परिवार मुगलपुरा (लाहौर) में रहता था। मुगलपुरा में ही मेरा दफ्तर था। 1947 में मैं रेलवे में लिपिक था और संघ का स्वयंसेवक भी। उन दिनों जींद के एक गुरुद्वारे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रथम वर्ष का प्रशिक्षण शिविर लगा था। शिविर में भाग लेने के लिए मैं जींद गया और उधर मार-काट शुरू हो गई। मेरे मुहल्ले मुगलपुरा में भी हिंदुओं को काटा-मारा गया। शिविर में श्रीगुरुजी भी आए हुए थे। माहौल खराब होने की खबर सुनकर उन्होंने सभी स्वयंसेवकों को कहा कि सभी अपने-अपने घर जाओ और परिवार के साथ-साथ अन्य लोगों की मदद करो। हम लोग जैसे-तैसे लाहौर पहुंचे। चारों तरफ अफरा-तफरी थी। इस कारण उस दिन घर नहीं जा पाया। डी.ए.वी. कॉलेज में शरणार्थी शिविर लगा था। रात में वहीं रहा। शिविर में सैकड़ों हिंदू थे।

सभी दहशत में थे। माहौल खराब होने के कारण कहीं से खाना नहीं आ पाया और सभी लोग भूखे ही बैठे रहे। सुबह एक तांगे वाले ने मुझे घर छोड़ दिया। कुछ देर बाद एक सरदार जी, जो सेना में काम करते थे, आए और कहने लगे कि जल्दी करो, अमृतसर से एक ट्रक आया है, उसी से हम सभी अमृतसर चले चलते हैं। मैंने अपनी पत्नी और बच्चों को उसी ट्रक से अमृतसर भेज दिया और खुद डी.ए.वी. कॉलेज चला गया। वहां से हिंदुओं को भारत भेजने का काम करने लगा। साथ में कुछ और स्वयंसेवक थे। कुछ दिन बाद मैं भी अमृतसर आ गया। वहां से मुजफ्फरनगर अपने साले के घर आ गया। इसके बाद फिरोजपुर गया, जहां मेरे बड़े भाई रेलवे में नौकरी करते थे। ■

भूषणलाल पाराशर
शूजाबाद, मुल्तान, पाकिस्तान

'...और बदल गया माहौल'

देश विभाजन के समय मैं लगभग 10 साल का था। मेरा परिवार मुल्तान जिले की तहसील शूजाबाद में रहता था। मैंने कई ऐसी हृदय-विदारक घटनाएं देखीं, जो आज भी मुझे डरा देती हैं। शूजाबाद नगर के चारों ओर पक्की दीवारें थीं और आने-जाने के लिए चार दरवाजे। हिंदू परिवार नगर के अंदर रहते थे और मुस्लिम परिवार नगर से बाहर गांवों में। विभाजन से पूर्व बड़ों से ऐसा सुनने में आता था कि पाकिस्तान कभी नहीं बनेगा, विभाजन असंभव है तथा हम सभी यहीं रहेंगे। यानी लोगों को भरोसा था कि हम यह देश, शहर, घर आदि छोड़कर कहीं जाने वाले नहीं हैं। लेकिन 1947 प्रारंभ होते ही मार-काट और हिंसा प्रारंभ हो गई। नगर के बाहर से मारने-काटने के समाचार आने लगे। मरे हुए लोगों की लाशों के घरों में आते ही कोहराम मच जाता था। किसी की गर्दन कटी होती थी, किसी के हाथ-पैर कटे हुए होते थे। उन्हीं दिनों एक ऐसी घटना घटी, जिसने हिंदुओं को झकझोर कर रख दिया। शूजाबाद से एक बारात जलालाबाद गई थी। वहां विवाह संपन्न होने के बाद बारातियों की बस वापस शूजाबाद लौट रही थी। रास्ते में मुसलमानों ने उस बस को रोककर सभी लोगों को उतार लिया। उनमें महिलाएं भी थीं। महिलाओं को तो वे लोग अपने साथ ले गए और पुरुषों को बहुत ही बेदर्दी के साथ मार दिया। इसके बाद एक शरारती सोच के साथ चालक को खाली बस लेकर शूजाबाद भेजा गया। संयोग से उस बस में एक व्यक्ति छिपा रह गया। उन दोनों ने घटना की जानकारी शूजाबाद के लोगों को दी। कोई सुनने या सहायता करने वाला नहीं था। उन्हीं दिनों रेडियो से घोषणा हुई कि भारत का विभाजन होगा। इसके बाद तो वातावरण एकदम बदल गया। ■

भारतस्वरूप आहूजा
डेराइस्माइल खान, पाकिस्तान

महीनों बाद मिलीं मां

भारत विभाजन के समय मैं लायलपुर जिले के कमालिया स्थित एक गुरुकुल में पांचवीं में पढ़ता था। मेरा परिवार डेरा इस्माइलखान में रहता था। गुरुकुल में जानकारी मिली कि भारत का विभाजन हो गया है और अब यहां से हिंदुओं को भारत जाना होगा। फिर कुछ ही दिन में हालात ऐसे बन गए कि गुरुकुल के संचालक ही हम लोगों को तुलंबा के पास एक रेलवे स्टेशन पर ले गए और वहां से रेलगाड़ी से लाहौर पहुंचे। लाहौर स्टेशन पर काफी हंगामा हो रहा था। चारों ओर 'अल्लाह हू अकबर' के नारे लग रहे थे। अंत में सेना ने रास्ता साफ करवाया और हमारी गाड़ी आगे बढ़ी। पहले जालंधर और फिर अमृतसर पहुंचे। मेरे एक चचेरे भाई करनाल में डॉक्टर थे। मैं एक दिन करनाल पहुंचा, लेकिन उनका पता नहीं चला। मेरे एक परिचित दिल्ली के कुतुब रोड पर रहते थे। इसलिए दिल्ली आ गया। पूछते-पूछते कुतुब रोड गया, लेकिन तब तक अंधेरा हो गया। कई लोगों से उनके बारे में पूछा, लेकिन उनकी जानकारी नहीं मिली। अब समस्या हुई कि रात में कहां रहें? इसलिए स्टेशन की ओर लौटने लगे। रास्ते में एक व्यक्ति मिला। पूछा अंधेरे में अकेले कहां जा रहे हो? मैंने उन्हें सारी बात बता दी, तो वे हमें अपने घर ले गए। वही दूसरे दिन मुझे किंग्जवे कैंप छोड़ आए। साथ ही कहा कि दिल्ली आने वाले अधिकतर शरणार्थी यहीं आते हैं। यहां रहोगे तो हो सकता है कि तुम्हें एक दिन अपना परिवार मिल जाएगा। उस समय मेरे परिवार में माताजी, बहन और भाई थे। पिताजी गुजर चुके थे। कुछ दिन बाद उसी कैंप में मां और भाई मिले। मां मुझे बहुत देर तक सीने से लगाए खड़ी रही। ■

चंद्रभान
, पाकिस्तान

'कुरान की कसम और कत्ल'

भारत विभाजन के दौरान हमारे साथ जो हुआ, वह बहुत ही डरावना है। बंटवारे के वक्त मेरी उम्र 16 साल थी। चारों ओर मार-काट हो रही थी। हमारे गांव से करीब छह मील दूर तरेगने नाम से एक गांव है। वहां एक दिन मुसलमानों ने हिंदुओं पर हमला कर दिया। सभी हिंदू छत पर चढ़ गए और वहां से ईंट-पत्थर चलाकर मुसलमानों का मुकाबला करने लगे। जब हिंदू भारी पड़ने लगे तो कुछ मुसलमान सिर पर कुरान रखकर सामने आए और बोले, 'कसम कुरान की अब तक जो हुआ सो हुआ, आगे कुछ नहीं होगा। नीचे उतरो बातचीत करके मसला हल कर लेते हैं।' जैसे ही कुछ लोग नीचे आए वैसे ही मुसलमानों ने कुरान को रखकर तलवार से उनकी गर्दन काट दी।

एक दूसरी घटना रामपुर में हुई। वह भी मेरे गांव के पास ही है। वहां डॉ. रूगनाथ जावा बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनका बड़ा घर था और घर के एक हिस्से में बहुत बड़ा हवन कुंड था। उसमें प्रतिदिन हवन होता था और उसमें गांव के लोग भी भाग लेते थे। एक सुबह उनके घर में हवन हो रहा था, तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया। वे हवन छोड़कर दरवाजे पर आए तो देखा कि कुछ मुसलमान कुरान के साथ खड़े हैं। उन मुसलमानों ने कहा, 'देखो हाथ में कुरान है, इसलिए घबराने की जरूरत नहीं है। दरवाजा खोलो आपस में बैठकर बात करेंगे।' उन्होंने जैसे ही दरवाजा खोला तो उनका सिर तन से अलग कर दिया गया। हवन के कारण घर में 20-25 पुरुष थे। कुछ उनका मुकाबला करने लगे और कुछ ने फटाफट दरवाजा बंद कर दिया। महिलाओं और लड़कियों ने हवन कुंड में कूद कर जान दे दी।■

मदनलाल मुखी
नौसारा, डेरा गाजीखान, पाकिस्तान

'संघ के ऋणी हैं जिंदा बचे लोग'

उन दिनों बदलते माहौल को लेकर हिंदू दहशत में रहते थे। इससे मुक्ति कैसे मिले, इस पर विचार करने के लिए 1947 के उस दिन मेरे गांव (नौसारा, डेरा गाजीखान) के आर्य समाज मंदिर में एक बैठक चल रही थी। मेरे पिताजी गांव के मुखिया थे। वही बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। मैं भी उनके साथ था। बैठक के दौरान ही एक युवक आया। उसने कहा कि मैं संघ का स्वयंसेवक हूं, एक विशेष सूचना देने के लिए आया हूं। फिर उसने कहा कि सूत्रों से पता चला है कि आज रात मुसलमान इस गांव पर हमला करने वाले हैं। इसलिए आप लोग जितनी जल्दी हो, यहां से और कहीं चले जाएं। इसके बाद बैठक समाप्त कर दी गई और सभी लोग गांव के अन्य लोगों को यह सूचना देने के साथ-साथ पलायन की तैयारी करने लगे। जो जिस कपड़े में था, उसी में निकल पड़ा। लगभग डेढ़ मील दूर दाजल कस्बा था। हम सभी वहां पहुंचे। सच में रात में हमारे गांव पर मुसलमानों ने हमला किया। उन्होंने सभी घरों को लूटा और बाद में आग लगा दी। हमारे गांव के जितने भी लोग अब जिंदा हैं और कहीं भी रह रहे हैं, संघ और उस स्वयंसेवक के आज तक ऋणी हैं। इधर दाजल में भी हमले की आशंका दिख रही थी। इसलिए दाजल के हिंदुओं के साथ हम सभी ने अपनी रक्षा की तैयारी की। हम सभी कई गुटों में बंट गए और रात में मोर्चा संभाल लिया। कढ़ाही में तेल गर्म करके ऐसी जगह रखा गया कि जरूरत पड़ने पर उसे हमलावरों पर फेंका जा सके। आगे की पंक्तियों में बड़ों को रखा गया। फिर नौजवानों की टोल तैनात की गई। सबसे पीछे महिलाओं को रखा गया। संयोग से देर रात सेना की एक टुकड़ी आ गई और हम पर हमला नहीं हुआ। ■

चोखाराम
गदाई, पाकिस्तान

'स्वयंसेवकों से मिला संबल'

मेरा गांव गदाई, डेरा गाजी खान से दो मील दूर था। गदाई में 1942 में संघ की शाखा शुरू हुई थी। नोनीत राय जी हमारे मुख्य शिक्षक थे। वे डेरा गाजीखान से रोजाना आते और शाखा लगाते। वे हम स्वयंसेवकों को जगाते भी थे। उनकी मेहनत और संघ के प्रति निष्ठा देखकर अनेक लोग स्वयंसेवक बने। उनमें मैं भी एक था। जब हम लोग शाखा लगाते तो उस समय मुसलमानों की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। बाद में कई बार यही भीड़ हिंसा पर उतारू हो गई। इसके बावजूद शाखा चलती रही। शाखा से गांव के हिंदुओं को एक नई ऊर्जा मिलती थी और वही ऊर्जा उन्हें बंटवारे के बाद भी गांव में टिकाए रही। लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियां विकट होने लगीं। 1947 में पाकिस्तान बनने के बाद हमें धमकियां मिलनी शुरू हो गईं। मुसलमान कहने लगे, यहां से बाहर निकलो, नहीं तो मार दिए जाओगे। इस माहौल में वहां कब तक रहते। आखिर में हिंदुओं ने गांव छोड़ दिया। सभी पैदल ही डेरा गाजीखान पहुंचे। मेरे पास एक साइकिल और एक गधा था। हम लोग गधे पर सामान लादकर निकल पड़े। एक पड़ोसी की माता जी बीमारी की वजह से चल नहीं पा रही थीं। उन्होंने मेरी साइकिल पर माताजी को बैठा लिया और खुद चलाने लगे। रास्ते में हमले का भी डर था।

खैर, भगवान का नाम लेकर हम लोग डेरा गाजीखान पहुंचे। उस वक्त वहां धारा 144 लगी हुई थी। उस समय डेरा गाजीखान में 'महावीर दल' का अच्छा प्रभाव था। हम लोगों के आने की खबर महावीर दल तक पहुंची तो उसके कार्यकर्ता हम लोगों की मदद के लिए आ गए। उनकी मदद से ही हम लोग सुरक्षित जगह पहुंचे। ■

ANAND AGRICULTURAL UNIVERSITY
ANAND - 388 110

Email : registrar@aau.in • Website : www.aau.in • Ph : 02692-261310

Dr. K. B. Kathiria (Vice Chancellor)

"We are committed to make our country agriculturally prosperous"

University Highlights

- Anand Agricultural University was carved out from the erstwhile Gujarat Agricultural University in the year 2004.
- Rich heritage envisioned by the great Sardar Patel and Shri K.M. Munshi, enriched over the years with modern infrastructure facilities and library.
- Government funded University offering UG, PG and Ph.D. Programmes in various disciplines of Agriculture & allied sciences through 8 colleges.
- Offering Diploma Programmes in Agriculture, Horticulture, Agricultural Engineering, And Food Technology & Nutrition.
- Jurisdiction of the University is 9 districts of the central Gujarat.
- 43 Research stations (23 on campus, 25 off campus) working for Agricultural research and Development.
- 19 Technology transfer centers for extension activities benefiting farmers and 2 training centers for extension workers.
- 23 well equipped hostels for Boys, Girls and International Students.

VISION

Agriculturally Prosperous Gujarat and India

Mission

• Search of new frontiers of Agricultural Science •
Development of excellence in human resources and innovative technologies
• Service to farming community

Research Highlights

Technologies recommended

1. For farming community/entrepreneurs: 926
2. For Scientific community: 547

Technologies Commercialized

- Liquid Biofertilizer Technology
- Date Palm Tissue Culture Technology
- Area Specific Mineral Mixture for Animals
- Probiotic Culture *Lactobacillus helveticus* for Dairy Modules

Varieties/Hybrids Released (80)

Rice (8), Maize (6), Chili (5), Brinjal (4), Tomato (4), Bidi Tobacco (4), Desi Cotton (4), Pigeon pea (3), Forage Sorghum (3), Forage Bajra (2), Bottle gourd (2), Guinea Grass (2), Dill seed (2), Garlic (2), Kodo millet (2), Castor (2), Cucumber (1), Muskmelon (1), Lucerne (1), Cowpea (1), Kalmegh (1), Safed Musli (1), Marvel grass (1), Pumpkin (1), Ridge gourd (1), Napier hybrid grass (1), Okra (1), Anjan grass (1), Senna (1), Onion (1), Ashwagandha (1), Duram Wheat (1), Kuwarpathu (1), Soybean (1), Groundnut (1), Potato (1), Clusterbean (1), Oat

Name of College	Year of Establishment	Degree Imparted	Intake Capacity (UG)
B. A. College of Agriculture, Anand	1947	B.Sc.(Hons.) Agriculture	159
Internatioal Agri Business Management	2008	MBA (Agri-Business Management)	*
College of Agricultural Engineering & Technology, Godhra	2008	B.Tech. Agril. Engg. & Technology	71
College of Food Processing Technology & Bio Energy, Anand	2009	B.Tech. (Food Technology)	71
College of Agricultural Information Technology, Anand	2009	B.Tech. (Agricultural Information Technology)	66
College of Agriculture, Vaso	2012	B.Sc.(Hons.) in Agriculture	72
College of Horticulture, Anand	2012	B.Sc.(Hons.) in Horticulture	77
College of Agriculture, Jabugam	2013	B.Sc.(Hons.) in Agriculture	67

*** PG intake is based on availability of Major advisors.**

'खड़ा हुआ कष्टों का पहाड़'

चुन्नीलाल मदान, डेरा गाजीखान

भारत विभाजन से पहले मेरे पिताजी बलूचिस्तान में सरकारी नौकरी करते थे। एक बार वे आए तो माताजी और मुझे साथ ले गए। अभी बलूचिस्तान गए कुछ ही दिन हुए थे कि पिताजी कहने लगे कि बेवजह घर से मत निकलना, बाहर सब कुछ ठीक नहीं चल रहा। जब वहां का माहौल बिगड़ गया तो पिताजी मुझे और मां को लेकर गांव आ गए। फिर कभी बलूचिस्तान नहीं लौट पाए। गांव आने के बाद देखा कि मुसलमान हिंदुओं के घरों को लूट रहे थे, उनके साथ मार-पीट कर रहे थे। हालात ऐसे बने कि एक दिन हमें गांव, घर और जमीन-जायदाद छोड़कर पलायन करना पड़ा। रास्ते में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने हिंदुओं की मदद की। भारत में उन दिनों बहुत मुश्किल से समय बीता। सरकार ने रहने के लिए तंबू की व्यवस्था की थी। बाद में लोगों ने अपनी व्यवस्था कर ली। ■

'चौदह लड़कियों की ले ली जान'

जगदीशराज बाली,जीराबाद, पाकिस्तान

बंटवारे के दिनों की पीड़ा मुझे आज भी दुख के गहरे सागर में डुबो देती है। आज भी मेरी आंखें भर आती हैं। हम एक साधन-संपन्न परिवार में जन्मे थे। 1947 में मैं अपनी मां के साथ मनावर में था कि अचानक एक दिन हमें फौरन वापस गांव भेज दिया गया। लड़ाई-झगड़े शुरू हुए तो गांव के हम सब लोगों को जुकालिया शिविर में भेज दिया गया। हम दो महीने तक वहीं रहे। हमारे परिवार के सभी लोग डर के साये में एक काफिले में चलते हुए भूखे-प्यासे भारत की सीमा तक पहुंचे। हमारे करीबी रिश्तेदार बख्शी मंगत राम ने मुसलमानों के डर से अपने परिवार की 14 लड़कियों को खुद ही जान से मार दिया, ताकि वे मुसलमानों के हाथ न लग सकें। पिताजी की एक फैक्ट्री थी। फैक्ट्री के मुसलमान नौकरों ने ही पिताजी को बंदी बना लिया। **20,000 रु. देने पर उन्होंने पिताजी को छोड़ा।** ■

'मेरे चचेरे भाई को मार डाला'

मुलखराज गुलाटी,बन्नू, पाकिस्तान

भारत का बंटवारा ऐसा दर्दनाक पल था कि जिसकी याद भुलाए नहीं भूल सकती। हमने न सिर्फ अपनी पुरखों की मिट्टी को छोड़ा, बल्कि अपनी मौत को बहुत नजदीक से अनुभव किया। मेरे कितने ही अपने इस खौफनाक घटना की भेंट चढ़ गए। हमारे खेतों में जो फसल हुआ करती थी, उसे हमारे पिताजी पख्तून के बन्नू शहर बेचने जाते थे। गांव और शहर, दोनों जगह हमारे आलीशान मकान थे। मेरे चचेरे भाई कालू राम को दंगाइयों ने मार डाला। उन्मादी हमारी बहन की ननद को खींच कर अपने साथ ले गए। जब उपद्रव बढ़ने लगा तो हमारा परिवार जान बचाने की खातिर एक दिन वहां से निकल गया। सफर में रात भर भूखे-प्यासे रहे, क्योंकि हमने सुन रखा था कि मुसलमानों ने तालाबों, कुंओं में जहर डाल दिया था। अगले दिन सुबह हम अटारी पहुंचे। उस दौरान रास्ते में जो देखा, उसे याद करके आज भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ■

'जल्लाद हो गए थे मुसलमान'

सूरजप्रकाश गुलाटी,बन्नू, पाकिस्तान

उन दिनों बंटवारे का खौफ था, लूटमार, आगजनी के रोजाना के किस्से हमारे घर के बुजुर्गों को डरा देते थे। ऐसे माहौल में घर के बुजुर्गों ने जान बचाने के लिए धीरे-धीरे परिवार के सदस्यों को भारत भेजना शुरू कर दिया। हमारे पिताजी भी परिवार के साथ भारत आने को मजबूर हो गए। हम ही नहीं, हमारे बाकी सब नाते-रिश्तेदार अपनी जान बचाकर भारत में अंबाला होते हुए कुरुक्षेत्र कैंप तक आए। वहां से हम सब बरेली गए और बाद में रुद्रपुर आकर बस गए। मुझे आज भी याद है हमारे इलाके को कट्टर मुसलमानों ने ऐसा खौफनाक बना दिया था कि हम जैसा कोई वहां कितने दिन जिंदा रह पाता! जो हुआ, बहुत गलत हुआ। कई बार तो स्थानीय मुस्लिम ऐसे जल्लाद हो जाते थे कि मौका मिलते ही गला काट दें। हमारे परिवारों की बहू-बेटियों का तो राह में निकलना तक मुश्किल हो चुका था। ■

'आज भी लगता है डर'

जवाहरलाल तनेजा, मुजफ्फरगढ़, पाकिस्तान

भारत के बंटवारे से पहले हम गांव महमूद दी बस्ती, तहसील अलीपुर में रहते थे। मेरे पिताजी जासुराम जी की प्रतिष्ठित परचून और किराने की दुकान थी। उसके ठीक बराबर में उनके ताऊजी घनश्याम दास तनेजा की कपड़े की दुकान थी। उनके चाचा उद्धव दास तनेजा की पंसारी की दुकान थी। वे वैद्य भी थे। बंटवारे के दिनों में जब दंगे होने शुरू हुए, तो हमारे पिता अपनी दुकान और घर अपने कर्मचारियों के हवाले करके हमारे परिवार और मामा जी के परिवार को साथ लेकर हिन्दुस्थान की ओर चल दिए। हम सब रास्ते भर भूखे-प्यासे रहे। बस एक ही चिंता थी कि कैसे भी हम भारत की सीमा तक पहुंच जाएं। हमारे चाचाजी और ताऊजी साथ नहीं आए थे, वे दोनों वहीं रुक गए। भारत आकर सबसे पहले हम लोग कुरुक्षेत्र में लगे कैंप में गए। उन दिनों को याद करके आज भी कपकंपी छूट जाती है।

'काफिले पर हमले'

रामप्रकाश बाठला, लायलपुर, पाकिस्तान

हमने बंटवारे के समय यह सोचा भी नहीं था कि अपने खेत-खलिहानों को छोड़कर जाना होगा और ऐसे शिविरों में रहना पड़ेगा। धीरे-धीरे माहौल बदलता गया। आसपास के गांवों के लोग गांव छोड़कर जाने लगे। एक दिन हमारे गांव के कुछ लोग आठ बसों में सवार होकर निकले। रास्ते में उन सबको मार दिया गया। हमने अगले दिन काफिले के साथ पैदल चलने का फैसला किया। उस भयानक दौर में कट्टर मुसलमानों के भय से हम गांव के सभी लोग एक काफिला बनाकर हिंदुस्थान की ओर चल पड़े। करीब दस मील लंबा होगा हमारा काफिला। हमारे काफिले पर भी कई स्थानों पर मुसलमानों ने आक्रमण किए, लेकिन काफिले के लोग उनका कड़ा मुकाबला करते थे। हम सुरक्षित अमृतसर पहुंच गए, लेकिन रास्ते में जो भयंकर मंजर देखे, वे शब्दों में बताए नहीं जा सकते। लाशों के अंबार लगे थे। जमकर मार-काट हुई थी।

'हिन्दू होने का मिला दंड'

धर्मचंद खन्ना, डेरा गाजीखान, पाकिस्तान

एकाएक पड़ोसी मुसलमानों ने यह संदेशा दिया कि जितनी जल्दी हो, यहां से सभी लोग निकल जाओ, क्योंकि बहुत जल्दी आपके घर हमला होने वाला है और बाहरी लोग आप सबको मार डालेंगे। माहौल बिगड़ना शुरू हुआ तो डर के चलते मोहल्ले के सभी लोग एक जगह एकत्र हो गए और फिर सबने गांव छोड़ने का निर्णय लिया। हम गाड़ी में जानवरों जैसे भरे हुए थे। न पीने को पानी था और न ही खाने को खाना। बस चुपचाप बैठे हुए थे डरे-सहमे। किसी तरह हम हरियाणा के कैथल पहुंचे, जहां हम सभी को एक सराय में ठहराया गया।

आज जब उस मंजर की याद आती है तो एक ही ख्याल आता है कि हम हिंदू थे, इसलिए हम सभी को अपनी जमीन और घर से बेदखल होना पड़ा, भागने को मजबूर किया गया, मारा गया, बद से बदतर हालात बना दिए गए। ■

गांव को घेरकर करते थे हमला

सरदार हरबख्श सिंह बक्शी, पाकिस्तान

बंटवारे की पीड़ा को कभी भूल ही नहीं सकता। मुझे आज भी अपनी माटी की सुंगध आती है। उसे चूमने का मन करता है। वह घर, गलियारा, खेत ऐसा लगता है कि बुलाते हैं। लेकिन...

विभाजन के समय मैं नौ साल था। मेरे पिताजी सेना में थे। मैं वहीं के बब्बर खालसा स्कूल में पढ़ता था। तब माहौल खराब हो चुका था। जगह-जगह से मार-काट की खबरें आती थीं। परिवार के लोग जब बाहर से आते थे तो घर में इसी सबकी चर्चा होती थी कि फलां जगह मुसलमानों ने हमला किया, उस गांव में आग लगाई, वहां से लोग पलायन करके हिन्दुस्थान जा रहे हैं, आदि, आदि। इसी दरम्यान एक दिन मुसलमानों ने हमारे गांव पर भी धावा बोल दिया। गांव के लोग भी पहले से तैयार थे। मुसलमानों ने माहौल भांपा और बिना कुछ किए लौट गए। लेकिन लोगों में डर भर चुका था। पलायन शुरू हो गया, लोग घरों को छोड़कर चले गए। ■

मनोहर लाल धवन
काकीनौ, झंग, पाकिस्तान

'रास्ते में दोनों ओर बिछी थीं लाशें'

बंटवारे के दिनों के बारे में जब भी सोचता हूं तो एक अजीब-सी उलझन होने लगती है। अचानक एक दिन हमारे मुहल्ले में भी हालात खराब हो गए। फिर एक दिन ऐसा आया कि मुहल्ले के लोगों को पलायन करने पर मजबूर होना पड़ा। मुझे याद है कि गांव वालों ने तय किया कि सभी लोग पाकिस्तान छोड़कर अमृतसर चलेंगे। छोटे बच्चों और महिलाओं को बैलगाड़ी में बैठाया गया और घर के बड़े- बुजुर्ग और नौजवान बैलगाड़ियों को घेर कर चल रहे थे। एक कारवां जैसा था। जैसे ही कोई हमला होता तो सभी गाड़ियां रुक जातीं और नौजवानों के पास जो अस्त्र-शस्त्र होते, वे उन्हें लेकर तैयार हो जाते। हालात इस कदर खराब थे कि मेरी बैलगाड़ी जिस रास्ते से गुजर रही थी, उस रास्ते में दोनों ओर लाशें बिछी हुई थीं। कई बार हमारे कारवां पर भी हमला हुआ।

गांव के कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। किसी को यह नहीं पता था कि वह बच पाएगा या नहीं। इसे देख सभी डरे हुए थे। खैर, अनेक कष्टों को सहते हुए अमृतसर पहुंचे तो सेना एवं संघ के स्वयंसेवकों ने हम सभी की काफी मदद की। मेरे साथ जो भी बड़े-बुजुर्ग थे, वे बताते हैं कि उस परिस्थिति में संघ के स्वयंसेवक ही हर प्रकार की मदद के लिए प्राणपण से जुटे थे। इसके बाद हम सभी कुरुक्षेत्र के एक शिविर में रहे। कुछ समय यहां गुजारने के बाद मैं रोहतक के वंशी गांव में रहने लगा। यहां रहकर ही हमारी शिक्षा-दीक्षा हुई। उस समय काफी कठिन परिस्थिति थी, लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने प्रत्येक स्थान पर पाकिस्तान से आए हुए हिन्दुओं की हर संभव मदद की। ■

हरभगवान विरमानी
लायलपुर, गुजरांवाला, पाकिस्तान

'पहरे से बचे प्राण'

मुझे वह दिन भुलाए नहीं भूलता जब स्थानीय मुसलमान झुंड में आकर हिन्दुओं के घरों पर टूट पड़ रहे थे, आग लगा रहे थे, उन्हें लूट रहे थे, बहन-बेटियों की इज्जत को तार-तार कर रहे थे। इसे देखकर इलाके का हर हिन्दू सहमा, अपने घरों में दुबका हुआ था। दूर-दूर तक कोई मदद को नहीं आ रहा था।

चूंकि मेरा पूरा परिवार संघमय था, इसलिए मैं भी बचपन से स्वयंसेवक बन गया। हिन्दुत्व में रचे-बसे होने के कारण मेरे परिवार से जुड़े लोग आस-पास के हिन्दुओं की हरसंभव मदद कर रहे थे। खतरा इतना अधिक था कि आस-पास के सभी हिन्दू लगभग एक ही मुहल्ले में आकर रहने लगे। रात को सभी पहरा देते थे और कोई हमला करे तो उसका प्रतिकार कैसे करना है, इसकी रणनीति भी बनाते थे। हम पांच भाई और एक बहन थे। बंटवारे के समय मेरी उम्र 16 वर्ष थी। मेरे पिताजी की एक छोटी-सी दुकान थी, जिससे घर का खर्चा चलता था। लेकिन हालात खराब होने के कारण सब बिखरता जा रहा था। सभी हिन्दू परिवारों के साथ ऐसा हो रहा था। संयोग से एक दिन पास के बाजार में भारत की ओर से एक ट्रक आया, जिसके चालक से मेरे पिता जी ने बात की। वह कुछ लोगों को ले जाने को राजी हो गया। मैं अपने भाई के साथ लाहौर होते हुए सुरक्षित अमृतसर आ गया।

लेकिन मेरे पिता और परिवार के अन्य सदस्य अभी वहीं फंसे हुए थे। मेरे चचेरे भाई अमृतसर के पास नौकरी करते थे। हम उनके घर रुके। उन्होंने मेरा ख्याल रखा। तीन महीने बाद पूरा परिवार यहीं आ गया। कुछ समय बीता तो परिवार लुधियाना आ गया। ■

RPS GROUP OF INSTITUTIONS

RPS GOI MAHENDERGARH

Approved by AICTE/DGHE (Govt. of India) & Affiliated to IGU Rewari/HSBTE, Panchkula

ENGINEERING | POLYTECHNIC | MANAGEMENT | DEGREE COLLEGE | VETERINARY COLLEGE

OUR GLORIOUS RESULTS

PRIYA

AIR 05th (MATHEMATICS)

TOTAL QUALIFIERS 45

JYOTI MANGLA

AIR 78th (MATHEMATICS)

TOTAL QUALIFIERS 15

JYOTI MANGLA
1ST Rank
M.Sc. (MATHEMATICS)

IN TOP 10 05

DEEPIKA
1ST Rank
M.Sc. (GEOGRAPHY)

IN TOP 10 04

ADMISSION OPEN

For Session 2022-23

B.V.Sc. & A.H. | VLDD

COURSES OFFERED

B.TECH. (CSE | ECE | Mech. | Civil | Electrical)
M.TECH. (CSE | ECE | Mech.) **POLYTECHNIC** (Civil | Mech.)
B.Sc. (Med./N.Med.) **B.Sc.** (Honors- Physics, Chemistry, Maths, Botany* & Zoology*) **M.Sc.** (Physics, Chemistry, Maths, Geography, Botany, Zoology) **B.A. | B.Com.| MBA | BBA | BCA | M.Com.**

Scholarship FOR MERITORIOUS STUDENTS

ENGINEERING COLLEGE
PH. 8222888338

DEGREE COLLEGE (UG)
PH. 8222999153

PG DEGREE COLLEGE
PH. 8222888337

VETERINARY COLLEGE
PH. 9466275566

8th Milestone, Delhi Bikaner State Highway No. 22
Balana, Satnali Road, **Mahendergarh** Hr. (NCR)

www.rpsintitutions.org
www.rpsdegreecollege.org

01285-241431/32, 08222888338,
08222999153, 08053117441

SUPER Achievements of RPS GROUP OF SCHOOLS

- 65 STUDENTS — NTSE Stage-2
- 70 STUDENTS — NTSE Stage-1
- 507 STUDENTS — NEET
- 441 STUDENTS — IIT-JEE Main
- 80 STUDENTS — IIT-JEE Advanced
- 15 STUDENTS — KVPY
- 17 STUDENTS — CLAT
- 62 STUDENTS — Securing 600 marks & Above in NEET
- 110 STUDENTS — NDA
- 39 STUDENTS — CA Foundation

ADMISSIONS OPEN

For Pre-Nur-IX & XI
(FOR THE SESSION 2023-24)

Mahendergarh Ph.:01285-222645, 9416150201 | **Rewari** Ph.:8222000359 | **Rewari City** Ph.:9053555526 | **Dharuhera** Ph.:9467064534 | **Kosli** Ph.:9255148141 | **Behror** Ph.:9529678004 | **Narnaul** Ph.:01282-248014, 8198976666 | **Hansi** Ph.:9813196969, 9896100407 | **Gurugram Sec- 50** Ph.:8409989898, 7827466258 | **Gurugram Sec- 89** Ph.:8222999182| | **Hisar** Ph.:8307760465 | **Karnal** Ph.:8398000304/06 | **New Campus Dharuhera Campus -2** Ph.: 9467064534

Top-Notch **Hostel Accommodation** for **Boys and Girls** in M/GARH, BEHROR, KOSLI & HANSI CAMPUSES

हम दिन चार रहें न रहें

केरल वर्मा

1790–92 में पूरा मालाबार ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ चला गया। अंग्रेजों ने मालगुजारी बढ़ा दी। कोट्टायम के राजा केरल वर्मा थे। उन्हें 'केरल सिंहम' यानी केरल का शेर भी कहा जाता था। उन्होंने 1796 में अंग्रेजों का विरोध किया और असंतुष्ट सामंतों की सेना संगठित कर अंग्रेजी सेना को पराजित किया। वर्ष 1805 में केरल वर्मा अंग्रेजों से लड़ते हुए ही बलिदान हुए।

स्वराज के सोपान

आज भी भारत के स्वतंत्रता संग्राम का उल्लेख होता है, तो इसकी तहों में उतरते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस बात से अंतर नहीं पड़ता कि कितनी पीढ़ियां गुजरीं, अंतर इससे पड़ता है कि जिसे हम स्वतंत्रता कहते हैं और 1947 से जिसकी गिनती करते हैं, वह वास्तव में 'स्व' की लड़ाई थी और जितनी दिखती है उससे कहीं ज्यादा पुरानी थी।

इतिहासकार और राजनीतिक व्याख्या के लिए प्रतिबद्ध रहे लोगों, भारतीय अस्मिता से षड्यंत्र करने वालों ने 1855 से 1857 की जिस घटना को सिर्फ विद्रोह कहा, वह स्वतंत्रता का पहला व्यापक युद्ध है। उसमें समाज के बड़े भाग का सहभाग है। टाइम्स के बुलावे पर आए विलियम हार्वर्ड रसेल की पुस्तक 'माई डायरी इन इंडिया' के विषय में ध्यान देने वाली बात है कि पुस्तक का शीर्षक 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को विद्रोह नहीं बताता। बाद में मिशेल एडवर्ड ने पुस्तक का शीर्षक बदल कर 'माई इंडियन म्यूटिनी डायरी' कर दिया। रसेल को समझ आ गया था कि 1857 का संघर्ष विद्रोह नहीं है, राष्ट्रव्यापी आंदोलन है। 2 फरवरी, 1858 को उसकी स्वीकारोक्ति है कि अगर हमें इससे निबटना है तो उस राष्ट्रीय एकता से निबटना पड़ेगा जो 1857 में स्थापित हो गई है।

एक 1526 से पहले की स्थिति है। बाद में 1757 में यूरोपीय शक्तियां आती हैं। ईस्ट इंडिया कंपनी की शोषणकारी प्रवृत्ति कैसी थी, इस पर बहुत सारे शोध हुए हैं। किन्तु 1857 में सारे समाज को झकझोरने, बहुमत की एकता स्थापित होने के कारणों पर पर्याप्त शोध नहीं हुआ। यह बात अकादमिक अध्ययनों का विषय ही नहीं बनी कि व्यापक विनाश के अध्यायों के पीछे पहले इस्लाम और फिर चर्च रहा जिनके कारण समाज की अस्मिता को गहरा धक्का लगा था और इस साझा अपमान ने भारतीय समाज को विविधताएं होते हुए भी संघर्ष के समय एक साथ ला खड़ा किया।

गहरे और पुराने घाव-चोटें ज्यादा टीसती हैं। स्वतंत्रता के लिए भारतीय समाज के लोमहर्षक बलिदान बताते हैं कि आक्रमणों-आघातों से उपजी छटपटाहट बहुत गहरी थी।

पहले आक्रांताओं के विरुद्ध और फिर औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के विरुद्ध। ये एक ऐसा लंबा दुर्धर्ष संघर्ष था जिसमें दुनिया की प्राचीनतम सभ्यता अपनी अस्मिता पर, अपनी पहचान पर हुए हमले के विरुद्ध उठ खड़ी हुई थी। गुरुनानक जी द्वारा आक्रांताओं की आहट भांपना। सिख गुरुओं का शौर्य और बलिदान। भक्ति आंदोलन का युग - अष्टछाप की अलख और किसानों का रौद्र रूप। संत-संन्यासी, किसान-जवान, जनजातीय समाज, महिला, बच्चे, बूढ़े .. समाज के सभी वर्ग, जातियाँ कई सामजिक चेतना और सुधार आंदोलन (ब्रह्म समाज, आर्य समाज, सत्यशोधक समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, प्रार्थना समाज, हिन्दू मेला, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इत्यादि) इसमें आहुतियां देते हैं। माँ भारती के लिए लाखों सपूतों का जीवन होम हो जाता है।

स्वराज - यह शब्द नहीं है, स्वतंत्रता - यह शब्द नहीं है।

स्वराज और स्वतंत्रता में गूंजता 'स्व' भारतीय संस्कृति के अंतस में पड़ा बीज है। सदियों के सांस्कृतिक संघर्ष को समेटने के लिए यह आयोजन एक गवाक्ष है आपको यह झरोखा कैसा लगा... बताइयेगा!

छटपटाहट सांस्कृतिक, संघर्ष 'स्व' का

स्वराज और स्वतंत्रता की लड़ाई 1857 से बहुत पहले शुरू हुई थी। अलग-अलग कालखंडों में देश के विभिन्न हिस्सों में ये संघर्ष औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध थे। हालांकि आंचलिक मोर्चे पर लड़ी गई लड़ाइयां 1857 की क्रांति की तरह संगठित नहीं थीं। स्वराज के लिए हर कोई अपने सामर्थ्य के अनुसार लड़ा

■ चंद्रप्रकाश

जब हम कहते हैं कि 15 अगस्त, 1947 को देश स्वतंत्र हुआ था, तो समझना चाहिए कि यह दिन सदियों के संघर्ष और बलिदानों का परिणाम था। सैकड़ों वर्षों के संघर्ष और राष्ट्र की अंतरात्मा अर्थात 'स्व' के पुनर्जागरण का परिणाम। सहस्त्रों बलिदानों का फल मिला और भारतमाता के पैरों में बंधी बेड़ियां टूट गईं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि यह वह स्वतंत्रता नहीं थी, जिसकी कल्पना देश के लिए बलिदान देने वाले वीरों ने की थी। देश तीन टुकड़ों में टूट चुका था। जो बचा हुआ भारत मिला, वह भी कितना संप्रभु और स्वाधीन था, इस पर आज भी बहस जारी है। फिर भी यह एक सकारात्मक आरंभ था। भारत उन कुछ देशों में है, जिसने सबसे पहले ब्रिटिश दासता से मुक्ति पाई। भारत का स्वतंत्रता आंदोलन अन्य उपनिवेशों के लिए भी प्रेरणा बना।

भारत की स्वतंत्रता के बाद से ही इतिहासकारों के एक वर्ग ने इसका सारा श्रेय वर्ष 1885 में स्थापित कांग्रेस पार्टी को देना शुरू कर दिया। कुछ बहुत उदार हुए तो उन्होंने स्वतंत्रता के संघर्ष को वर्ष 1857 की क्रांति से आरंभ हुआ माना। लेकिन ये दोनों ही विचार असत्य और अन्यायपूर्ण हैं। स्वतंत्रता का संघर्ष इससे कहीं अधिक पुराना और व्यापक था। लेकिन आज भी अधिकांश लोग इस सत्य से अनजान हैं। वामपंथियों द्वारा लिखी स्कूली पुस्तकों में तो प्रयासपूर्ण ढंग से उन वीरों की कथाएं दबाई या हटाई गईं, जिन्होंने उस चिंगारी को जलाए रखा, जो बाद में क्रांति की ज्वाला बनी।

1857 स्वतंत्रता का पहला युद्ध नहीं

वर्ष 1857 के युद्ध को अंग्रेजों ने कभी स्वतंत्रता का संघर्ष माना ही नहीं। वे इसे हमेशा सिपाही विद्रोह ही बताने का प्रयास करते रहे। वीर सावरकर पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने इसे स्वतंत्रता का युद्ध कहा और इस विषय पर एक प्रामाणिक पुस्तक भी लिखी। स्वाधीन भारत की सरकारों को भी इस सत्य को स्वीकार करने में बहुत समय लगा। किसी तरह स्कूली पुस्तकों में इसे 'पहला' स्वतंत्रता का संग्राम कहा गया, जबकि स्वयं वीर सावरकर ने भी 1857 के संघर्ष को पहला कहने पर बहुत जोर नहीं दिया है। क्योंकि स्वराज और स्वतंत्रता की लड़ाई इससे बहुत पहले ही शुरू हो चुकी थी। देश के सभी भागों में ऐसे संघर्षों की कहानियां मिल जाती हैं। यह संघर्ष अंग्रेजों ही नहीं, उस कालखंड में भारत के अलग-अलग भागों में पैर जमा रही सभी औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध था। स्वराज के लिए हर कोई अपने सामर्थ्य के अनुसार लड़ रहा था। हालांकि वे संघर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम जितने संगठित और पूर्वनियोजित नहीं थे।

गोवा में पुर्तगाली अत्याचारों से संघर्ष

मुगलों से स्वतंत्रता का संघर्ष अभी चल ही रहा था कि भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में यूरोप की विस्तारवादी शक्तियों के कदम पड़ने लगे थे। सबसे पहले 15वीं शताब्दी के अंत में पुर्तगाली आए। आरंभ में लोगों ने उन्हें सामान्य विदेशी व्यापारी समझा। लेकिन बहुत शीघ्र ही उन्होंने केरल के कुछ हिस्सों में अपना प्रभुत्व जमाना आरंभ कर दिया। पुर्तगालियों ने बाद में गोवा को अपना केंद्र बनाया। वहां हिंदुओं को ईसाई बनने को कहा गया। जिन्होंने उनकी बात नहीं मानी उन पर अमानवीय अत्याचार किए गए। इसे गोवा इनक्विजिशन के नाम से जाना जाता है। विश्व के इतिहास में किसी धार्मिक समुदाय पर संगठित ईसाई अत्याचार की यह सबसे भयानक घटनाओं में से एक है। लेकिन आज हमारे देश में कितने लोग इसके बारे में जानते हैं? यह गोवा के लोगों की आध्यात्मिक शक्ति ही थी कि पुर्तगाली वहां की मूल हिंदू संस्कृति को पूरी तरह नष्ट नहीं कर पाए। यह भी एक तरह का संघर्ष था, जिसमें भारतीय धर्म और संस्कृति विजयी हुई।

केरल में राजा मार्तंड वर्मा की विजय

पुर्तगालियों के बाद डच आक्रमणकारी केरल के रास्ते भारत पहुंचे। उन दिनों डच नौसेना को बहुत शक्तिशाली माना

यह ऐसी जंग नहीं है जो जीहुजूर और ताबेदार लड़ रहे हैं।
हमारा सामना एक विकट और संलिष्ट जंग से है।
जो रिलीजन के विरुद्ध है, नस्ल के खिलाफ है।
ये प्रतिशोध की,आशा और अपेक्षा की जंग है।

–विलियम हार्वर्ड रसेल, युद्ध संवाददाता
(माई डायरी इन इंडिया)

हम दिन चार
संन्यासी आंदोलन
रहें न रहें

1757 के प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों की हार के बाद ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध पनपा विरोध 1763 में संन्यासी क्रांति के रूप में सामने आया। 1763–1800 तक चली इस क्रांति का ज्यादा असर बंगाल, बिहार और असम में था। इसमें साधु–संन्यासी, किसान व काश्तकार और सेना के बेरोजगार सिपाही शामिल थे। संन्यासियों ने 1763 में ढाका में ईस्ट इंडिया कंपनी की कोठी पर कब्जा किया और अंग्रेजों का धन लूटकर कैप्टन बेनेट को गिरफ्तार कर लिया, जो बाद में पटना में क्रांतिकारियों के हाथ मारा गया। 1766 में रामानंद गोसाईं के नेतृत्व में कूचबिहार में क्रातिकारियों का ब्रिटिश फौज से कड़ा संघर्ष हुआ। क्रांतिकारियों ने छापामार युद्ध में कैप्टन मॉरिसन व उसकी सेना को हरा दिया। बंगाल में संन्यासी आंदोलन, स्वदेशी आन्दोलन, चुआर विद्रोह , बिहार/ झारखण्ड में मुंडा विद्रोह, भूमिज विद्रोह, पहाड़िया आन्दोलन, नील आन्दोलन, ताना भगत आन्दोलन, चेरो विद्रोह, कोल आन्दोलन, ओडिशा में कंध विद्रोह भी अंग्रेजी हुकूमत की चूलें हिला गए थे।

वेलू थम्पी

धर्म-संस्कृति की रक्षा के लिए बलिदान

त्रावणकोर और कोचीन की आजादी के लिए 1808-09 तक वेलू थम्पी अंग्रेजों से लड़े। यह लड़ाई धर्म, संस्कृति और गरिमा की रक्षा के लिए थी। वेलू थम्पी समृद्ध राज्य त्रावणकोर के दीवान थे। अंग्रेजों की हड़प नीति के विरुद्ध उन्होंने मोर्चा खोला और कोचीन के साथ फ्रांसीसियों को एकजुट किया। उन्होंने अमेरिका से भी संपर्क साधा। 28 दिसंबर, 1808 की रात वेलू थम्पी ने अपने सहयोगियों के साथ रेजीडेंट कर्नल मैकाले के घर पर धावा बोला, पर वह भाग गया। उन्होंने पहला हमला क्वीलन में अंग्रेजी छावनियों पर किया, फिर अलेप्पी, कोचीन आदि कई स्थानों पर हमले किए। अंग्रेजों को अतिरिक्त सेना बुलानी पड़ी। यहां तक की सीलोन से भी विशेष रेजीमेंट बुलाई। तब अंग्रेजी सेना त्रावणकोर में घुसी, पर वेलू थम्पी को जिंदा पकड़ नहीं सकी। उन्होंने आत्महत्या कर ली। अंग्रेजों को उनका शव जंगल में मिला। शव को त्रिवेंद्रम लाया गया, फिर जनता में खौफ पैदा करने के लिए उनके शव को कई दिनों तक फांसी पर लटकाए रखा।

जाता था। दो बड़े युद्धों में वे अंग्रेजों को पराजित कर चुके थे। ऐसे समय में जब डच सेनाएं तेजी से भारत को अपनी चपेट में ले रही थीं, तब त्रावणकोर साम्राज्य के राजा मार्तंड वर्मा ने उन्हें चुनौती दी। वर्ष 1741 में त्रावणकोर की सेना ने डच सेना को बुरी तरह से पराजित कर दिया। इसे कोलाचेल युद्ध के नाम से जाना जाता है। किसी यूरोपीय शक्ति पर किसी एशियाई सेना की यह पहली विजय थी। डच सेना के 28 सबसे बड़े अधिकारियों ने राजा मार्तंड वर्मा के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। इनमें उनका कमांडर एडमिरल डेलनॉय भी था। इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि डच सेना ने हमेशा के लिए भारत से अपने पैर वापस खींच लिए।

पूरे देश में स्वराज्य की चिंगारी भड़की

दक्षिण और पश्चिम के समुद्र से लगे क्षेत्र ही नहीं, 18वीं शताब्दी के आरंभ से शेष भारत में भी स्वराज के ढेरों संघर्ष आरंभ हो चुके थे। इन सबका लिखित इतिहास भी उपलब्ध है, लेकिन कभी इनके पीछे के विशाल चित्र को देखने का प्रयास ही नहीं किया गया। मुगल साम्राज्य तेजी से सिकुड़ रहा था और मराठा साम्राज्य भारत के मानचित्र पर फैल रहा था। दिल्ली के दक्षिण से लेकर भारत के पश्चिमी क्षेत्रों तक बड़े भू-भाग को राजपूतों ने स्वतंत्र करा लिया था। दिल्ली से लेकर मथुरा, आगरा और गंगा के मैदानों तक बड़ा क्षेत्र राजा सूरजमल के नेतृत्व में जाटों के अधिकार में आ चुका था। पंजाब में बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों का आधिपत्य

आंचलिक मोर्चे

पहले ही चुआर क्रांति से अंग्रेज पस्त

मुगल शासन के खात्मे के बाद बंगाल के मेदिनीपुर जिले में अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्र जमींदारों के नेतृत्व में 1766 में पहली चुआर क्रांति हुई। चुआर जमींदारों के सिपाही थे। जंगलमहाल क्षेत्र से शुरू विरोध की आग आसपास के क्षेत्रों में फैल गई। अंग्रेजों की ताकतवर सेना के आगे अधिकांश जमींदारों ने घुटने टेक दिए। पर घाटशिला के जमींदार का विरोध जारी रहा।

जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने घाटशिला के राजा जगन्नाथ धल की जगह नीमू धल को राजा बना दिया तो 1769 में जगन्नाथ ने चुआरों की बड़ी सेना की सहायता से नीमू धल पर हमला किया। 1773-74 तक जगन्नाथ के नेतृत्व में चुआर सैनिक ब्रितानी सेना से भिड़ते रहे। उन्हें आसपास के सभी गांवों व पहाड़ी अंचल के लोगों का साथ मिला। अंग्रेजों को काफी नुकसान हुआ और 1777 में उन्हें हार माननी पड़ी। उन्हें जगन्नाथ धल को फिर से घाटशिला का राजा बनाना पड़ा।

यशवंत राव होलकर

मालवा का 'नेपोलियन'

यशवंतराव होलकर एक ऐसे वीर योद्धा का नाम है, जिनकी तुलना विख्यात इतिहासशास्त्री एन. एस. इनामदार ने 'नेपोलियन' से की है। वे मध्य प्रदेश की मालवा रियासत के महाराज थे। उन्होंने अकेले दम पर ही अंग्रेजों को भारत से खदेड़ने की ठानी। 8 जून, 1808 को उन्होंने पहली बार अंग्रेजी सेना को पराजित किया, फिर 8 जुलाई 1804 में कोटा से अंग्रेजों को खदेड़ा। इसके बाद तो उनको जीतने की जैसे आदत पड़ गई। 11 सितम्बर,1804 को अंग्रेज जनरल वेलेस ने लॉर्ड ल्यूक को पत्र लिखा, 'यदि यशवंत राव पर जल्दी काबू नहीं पाया गया तो वे अन्य शासकों के साथ मिलकर अंग्रेजों को भारत से खदेड़ देंगे।' महाराजा यशवंत राव भारत में एकमात्र ऐसे राजा के थे, जिनसे अंग्रेजों ने समान शर्तों पर शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए संपर्क किया था। अंग्रेजों को इस बात का डर था कि यशवंत राव होलकर भारतीय राजाओं को उसके विरुद्ध एकजुट कर सकते हैं।

स्थापित होता जा रहा था। दक्षिण में मैसूर का वाडियार राजवंश तेजी से अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ा रहा था। केरल और तमिलनाडु के एक बड़े क्षेत्र पर त्रावणकोर साम्राज्य का ध्वज फहराने लगा था। 18वीं शताब्दी के आरंभ का भारत का मानचित्र देखें तो भारत को मुगलों और अन्य आक्रमणकारी शक्तियों से लगभग स्वतंत्र कराया चुका था। यह लगभग 100 वर्ष का कालखंड था, जब लगभग पूरे भारत पर भारतीय राजाओं के ध्वज लहरा रहे थे। मुगल साम्राज्य मात्र दिल्ली के लालकिले तक सिमट कर रह गया था। लेकिन यही समय था, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी अपनी औपनिवेशिक चालें चलना शुरू कर चुकी थी।

अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े थे साधु-संत

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के कई हिस्सों में शक्तिशाली हो चुकी थी। अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का पहला बिगुल फूंकने का काम किसी राजा-रजवाड़े ने नहीं, बल्कि साधु-संतों ने किया था। इसे संन्यासी विद्रोह के नाम से जाना जाता है। इनका केंद्र बंगाल और बिहार में था। साधु-संत अपने गांव-शहर से तीर्थ स्थानों तक आते-जाते रहते थे और गांवों में रहने वाले किसानों और कारीगरों में जागरूकता पैदा करने का काम करते थे। अंग्रेज इस खतरे को भांप गए और उन्होंने संन्यासियों को लुटेरा घोषित करके उनके कहीं भी आने-जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। इससे भड़के साधु-संतों ने अंग्रेजी ठिकानों पर हमले करने शुरू कर दिए। यह विद्रोह वर्ष 1763 से 1800 के बाद लगभग चार दशक तक चला। इसे कुचलने में अंग्रेजों को लगभग 50 वर्ष का समय लगा। वर्ष 1882 में बंकिम चंद्र चटर्जी ने संन्यासी विद्रोह पर आधारित उपन्यास आनंदमठ लिखा और इस तरह से इसी आंदोलन से राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' का जन्म हुआ।

ईसाई मिशनरियों से जनजातियों का युद्ध

जिस तरह से पूर्वी भारत में संन्यासी लड़ रहे थे, उसी तरह पश्चिम में भील आदिवासियों ने अंग्रेजों को चुनौती दे रखी थी। गुजरात से लेकर राजस्थान तक बड़े क्षेत्र में भीलों ने अंग्रेजों और उनके साथ आए ईसाई मिशनरियों को खदेड़कर रखा। भील और गोंड आदिवासियों की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने कभी किसी आक्रमणकारी का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया। महाराणा प्रताप के समय से लेकर अंग्रेजों के कालखंड तक इस जनजातीय

सिख गुरु

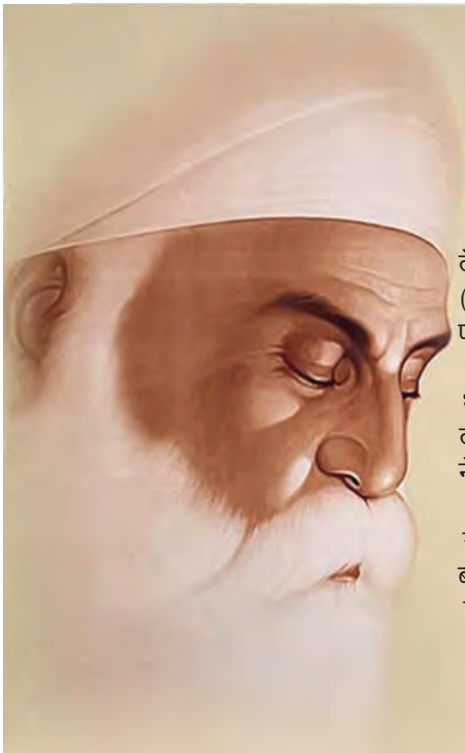

स्वधर्म और संस्कृति की अलख

भारतीय दशगुरु परम्परा का संपूर्ण इतिहास, गुरु नानक देव से लेकर गुरु गोबिंद सिंह तक विदेशी मुगल आक्रांताओं (बाबर से लेकर औरंगजेब तक) से संघर्ष का रहा है। भारत पर बाबर के आक्रमण के समय गुरु नानक देव ने इसे केवल पंजाब पर नहीं अपितु पूरे भारत पर हमला बताते हुए कहा था- खुरासान खसमाना किआ हिंदुसतानु डराइआ।। आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ।। (अर्थात् बाबर ने हमला करके पूरे हिन्दुस्थान को डराया है और मुगल मृत्यु का दूत बनकर यहां आए हैं।) सन् 1675 में लालकिले के सामने देश और धर्म की रक्षा के लिए हिंद दी चादर गुरु तेग बहादुर ने अपना बलिदान दिया। मुगल आक्रांता औरंगजेब ने इस्लाम कबूल न करने पर गुरु तेग बहादुर को जिस स्थान पर कत्ल करवा दिया था, वहां आज श्री शीशगंज गुरुद्वारा है। बिहार के पटना में जन्मे दशमगुरु गोबिंद सिंह ने धर्म और देश की रक्षा के लिए 1699 में बैसाखी के दिन श्री आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की नींव रखी। उस समय गुरु गोबिंद सिंह के आह्वान पर पूरे देश के हर कोने से अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले लोग खालसा सेना का हिस्सा बनने आनन्दपुर आए थे। गुरु गोबिंद सिंह के आह्वान पर देश और धर्म के लिए बलिदान देने वाले पहले पंज प्यारे दया राम, धर्म चन्द, हिम्मत राय, मोहकम चन्द एवं साहिब चन्द, लाहौर, हस्तिनापुर (मेरठ), जगन्नाथपुरी (ओडिशा), द्वारिका (गुजरात) और बीदर (कर्नाटक) के रहने वाले थे। यदि लड़ाई पंजाब की या किसी अन्य धर्म की होती तो गुरु गोबिंद सिंह पूरे देश से लोगों को न बुलाते और पहले पंज प्यारे भारत की सभी दिशाओं से न होते।

समुदाय ने हमेशा क्रांति की मशाल जलाए रखी। लेकिन स्वतंत्रता के बाद स्कूली इतिहास की वामपंथी पुस्तकों में उनके इस संघर्ष को कितना स्थान या सम्मान दिया गया, यह किसी से छिपा नहीं है।

विदेशी आक्रमणकारियों से स्वतंत्रता के लिए यह तड़प देशव्यापी थी। कर्नाटक में कित्तूर के संगोल्ली रायन्ना ने वर्ष 1824 में कंपनी से विद्रोह किया। वर्ष 1831 में अपनी मृत्यु पर्यंत उन्होंने इस युद्ध का नेतृत्व किया। इसके कुछ समय बाद ही वर्ष 1855 में सिदो-कान्हू के नेतृत्व में संथाल विद्रोह भड़क उठा। इसे दबाने के लिए अंग्रेजों ने 30 हजार से अधिक संथालियों को निर्ममता के साथ मार डाला। स्वराज के लिए विद्रोह की ये कहानियां कुछ उदाहरण मात्र हैं। देश के कोने-कोने में ऐसी ढेरों क्रांतियां हुईं, जिनकी परिणति वर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के रूप में हुई और परिणाम 1947 में अंग्रेजों की विदाई के रूप में सामने आया। ये घटनाएं बताती हैं कि भारतीय समाज ने कभी दासता को स्वीकार नहीं किया। न पहले मुगलों की, न बाद में पुर्तगालियों, डच, फ्रांसीसियों अथवा अंग्रेजों की। स्वराज के ये संघर्ष भले ही सीमित क्षेत्रों तक रहे हों, लेकिन सभी में एक राष्ट्रीय मूल भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ये कहानियां आज की पीढ़ी को पता होनी चाहिए, ताकि कोई भ्रम न रहे कि भारत हमेशा से एक दीन-हीन सभ्यता थी और किसी एक संगठन या नेता ने आकर देश को स्वतंत्रता दिला दी। ■

ABM
ABM KNOWLEDGEWARE LTD
E-Government that Works

- E-Governance & ERP
- SAP Services
- Digital Project Management
- SIEMENS Centre of Excellence
- UPYOG Implementation

Best Tech Brands:
Economic Times

Consistent Unique distinction of most state wide projects in e-Municipality in India

PAN India 10-foId increase in Citizen engagement in 10 years

Founder - MD Listed in 'Most Promising Business Leaders of Asia': Economic Times

SKOCH CEOs Choice Recognition for 'Contribution to Digital Municipalities' in Digital India Mission

Follow us on

- @abmknowledgewareltd
- @ABMindia1998
- @abmindia
- @abmknowledgeware
- @ABMKnowledgewareLtd

ABM Knowledgeware Ltd.

ABM House, Plot No. 268, Linking Road,
Bandra (West), Mumbai, Pin- 400050
www.abmindia.com
egovernance@abmindia.com
Tel: 022-42909700

ABM
ABM KNOWLEDGEWARE LTD

SEI CMMI Level 5 I ISO 20000-1:2018 I ISO 9001:2015 I ISO 27001:2013 Compliant Software & Services Company

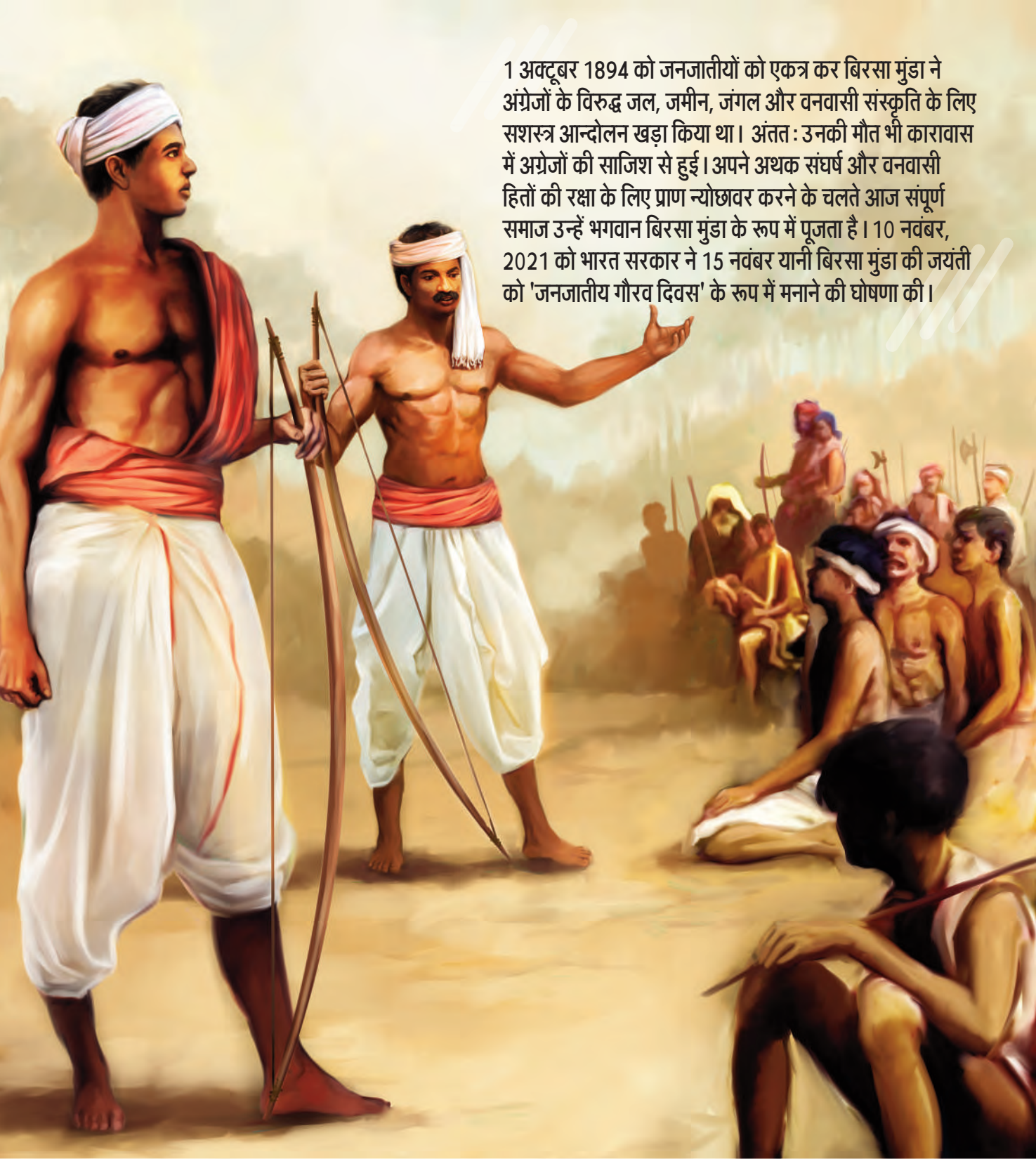

1 अक्टूबर 1894 को जनजातीयों को एकत्र कर बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के विरुद्ध जल, जमीन, जंगल और वनवासी संस्कृति के लिए सशस्त्र आन्दोलन खड़ा किया था। अंतत: उनकी मौत भी कारावास में अग्रेजों की साजिश से हुई। अपने अथक संघर्ष और वनवासी हितों की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने के चलते आज संपूर्ण समाज उन्हें भगवान बिरसा मुंडा के रूप में पूजता है। 10 नवंबर, 2021 को भारत सरकार ने 15 नवंबर यानी बिरसा मुंडा की जयंती को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की।

हम दिन चार रहें न रहें

संथाल विद्रोह

वर्ष 1855 में बंगाल के मुर्शिदाबाद तथा बिहार के भागलपुर जिलों में अंग्रेजों के अत्याचार की शिकार पहाड़िया जनता ने एकजुट होकर उनके विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँक दिया था। इसे पहाड़िया विद्रोह या पहाड़िया जगड़ा या संथाल हूल कहते हैं। पहाड़िया भाषा में 'जगड़ा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– 'विद्रोह'। यह अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम सशस्त्र जनसंग्राम था।

स्वातंत्र्य समर और स्वदेशी विज्ञान

■ जयंत सहस्रबुद्धे

विहम जानते हैं कि देश में आधुनिक विज्ञान अंग्रेजों के द्वारा अवतरित हुआ। अन्य आक्रमणकर्ताओं और अंग्रेजों के आक्रमण में एक मौलिक अंतर यह था कि अंग्रेजों के पूर्व जितने आक्रमणकर्ता थे, उनके पास विज्ञान नहीं था लेकिन अंग्रेजों के पास विज्ञान था। अंग्रेज मूलरूप से व्यापारी के रूप में भारत आये। आगे चलकर उनकी भूख बढ़ गयी और उन्होंने भारत में राज स्थापित किया।

भारत पर नियंत्रण की चाल: अंग्रेजों की जीत का प्रारंभ जून 1757 की प्लासी की लड़ाई से माना जाता है। 1818 में पुणे में पेशवा को पराजित कर अंग्रेजों ने आज के भारतवर्ष पर नियंत्रण स्थापित किया। इस दौरान अंग्रेजों ने भारतीयों की पहचान को तोड़कर उनको अंग्रेजी पहचान देना शुरू किया। उन्होंने यह कहना शुरू किया, 'आपका देश तो अंधकार में डूबा हुआ है। लोग तो अंधविश्वास के आधार पर ही जीते हैं। तर्क क्या होता है, भारत वालों को नहीं पता।' वे इस प्रकार की बातें सतत अपने देश के लोगों को बताते रहे। अपनी श्रेष्ठता को स्थापित करने और भारत के लोगों को नीचा दिखाने के लिए उन्हें सबसे प्रभावी साधन लगा उनके यहां की औद्योगिक क्रांति, यानी उनके द्वारा निर्मित तंत्र ज्ञान। रेल लाइन, टेलीग्राफ, पोस्ट ऑफिस, चार पहिए की गाड़ी आदि। अंग्रेज पश्चिम का चिकित्सा तंत्र लाये। इन सब के कारण भारतीय काफी प्रभावित हुए। उनको लगने लगा कि पश्चिमी सभ्यता ही सबसे श्रेष्ठ सभ्यता है। हम तो पिछड़े हैं। अंधकार में डूबे हुए हैं। अंग्रेजों ने आधुनिक विज्ञान को भारत में सिखाना प्रारंभ किया। किंतु यह नीति थी कि सैद्धांतिक रूप से थोड़ा-थोड़ा सिखाएंगे, लेकिन प्रयोग नहीं करने देंगे। प्रयोगशाला स्थापित नहीं करने देंगे। अपने देश में इसके विरोध में राष्ट्रीय भाव से पहली बार विज्ञान के क्षेत्र में स्वदेशी भाव का प्रकटीकरण हुआ। डॉ. महेन्द्र लाल स्वास्थ्य विभाग के बड़े डॉक्टर थे। बंकिम चंद चटर्जी, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस जैसे लोग डॉ. महेन्द्र लाल के प्रशंसक थे। भारत में उस समय होमियोपैथी जर्मन लोगों के द्वारा आ गयी थी। जर्मनी इंग्लैंड का एक बहुत बड़ा शत्रु देश था। इसलिए जर्मनों का यहां पर जो कुछ होता था अंग्रेज लोग उसका विरोध करते थे। एक जर्मन पादरी के द्वारा होमियोपैथी अपने देश में आयी। आज जैसे इंडियन मेडिकल एसोसिएशन आयुर्वेद का

आंचलिक मोर्चे

चाकमा के आगे झुके अंग्रेज

चटगांव (बंगाल) के पहाड़ी क्षेत्र में कपास उत्पादक चाकमा जनजाति ने 1776-89 तक अंग्रेजों को बेबस कर दिया था। 1760 में अंग्रेज सौदागरों ने बंगाल के नवाब मीर कासिम से चटगांव से कर वसूली का अधिकार ले लिया। अंग्रेजों के इजारेदार तय से कई गुना अधिक कर (कपास के रूप में) वसूलते थे और शेष कपास भी चाकमाओं से मनमाने दर पर खरीद लेते थे। इससे चाकमा दबते गए और इजारेदार मालामाल होते गए। 1776 में शेर दौलत खान एवं रामू खान के नेतृत्व में चाकमा कर देना बंद कर इजारेदारों के कपास गोदामों को लूटने लगे। इजारेदारों की मदद के लिए अंग्रेजी सेना आई तो चाकमा उनके आगे टिक नहीं सके। 1782 में शेर दौलत खान के पुत्र जां बख्श खान के नेतृत्व में चाकमा फिर संगठित हुए। आलम यह था कि इजारेदार चाकमा अंचल में घुसने की हिम्मत नहीं करते थे। 1789 में चाकमा ने हथियार तभी डाले, जब अंग्रेजों ने इजारेदारी प्रथा खत्म की।

आंचलिक मोर्चे

अधिकार के लिए विजयनगरम् का संघर्ष

तीसरे कर्नाटक युद्ध (1756-63) के शुरू में उत्तरी सरकार क्षेत्र पर फ्रांसीसियों का प्रभाव था। 1766 में निजाम से संधि के बाद राजामुंदरी, चिकाकोल, कोंडापल्ली के साथ विजयनगरम् अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। कंपनी ने विजयनगरम् पर सालाना तीन लाख रुपये का कर थोपा। यहां के राजा विजयराम राजे नाबालिग थे। 1790 में कंपनी ने राजस्व बढ़ाकर सालाना नौ लाख रुपये कर दिया। 1794 में विजयराम से रियासत छीन कर उन्हें 1200 रुपये मासिक पेंशन पर मुसलीपट्टम में जाने को कहा। पर विजयराम ने आदेश को ठुकरा दिया। वे विमलीपट्टम पहुंचे व अपने शुभचिंतकों को एकत्रित किया। जुलाई 1794 में पद्मनाभन के पास विजयराम के करीब 5,000 सैनिकों का सामना कंपनी की सेना से हुआ। युद्ध में विजयराम व उनके सैनिक मारे गए। उनके पुत्र नारायण राजे अंग्रेजों से लोहा लेते रहे। अंतत: अंग्रेजों के साथ संधि के बाद उन्होंने सालाना छह लाख रुपये कर पर उनका संरक्षण स्वीकार कर लिया।

मार्तंड वर्मा

डच पराजय का अनकहा इतिहास

डच भारत में सबसे पहले आने वाले यूरोपीय थे। कालीकट (वर्तमान केरल) नीदरलैंड (डच) आक्रांताओं के निशाने पर आया। बाद में उनका पाला मार्तंड वर्मा से पड़ा। मार्तंड वर्मा ने आखिरी लड़ाई के लिए मानसून का वक्त चुना ताकि डच सेना फंस जाए और उन्हें श्रीलंका या कोच्चि से कोई मदद न मिले। उन्होंने नायर जलसेना का नेतृत्व किया और डच सेना को कन्याकुमारी के पास कोलाचेल के समुद्र में घेर लिया। डच सेना पर जबरदस्त हमला किया और उसके हथियार गोदाम को उड़ा दिया। कई दिनों के भीषण समुद्री संग्राम के बाद 31 जुलाई, 1741 को मार्तंड वर्मा की जीत हुई। युद्ध में 11,000 डच सैनिक बंदी बनाये गए और हजारों मारे गये। डच कमांडर दी लेननोय और उप कमांडर डोनादी सहित डच जलसेना की 24 टुकड़ियों के कप्तानों को बंदी बना लिया और मार्तंड वर्मा के सामने पेश किया। उन्हें राजाज्ञा से उदयगिरि किले में बंदी बनाकर रखा गया। किसी यूरोपीय शक्ति पर किसी एशियाई देश की यह पहली विजय थी।

विरोध करती है उसी प्रकार उस समय ब्रिटिश मेडिकल एसोशिएशन होमियोपैथी का विरोध करती थी। डॉक्टर महेन्द्र लाल सरकार भी होमियोपैथी का अपमान करने वालों में अग्रणी थे।

स्वदेशी विज्ञान संस्था : एक बार एक रोगी डॉ. महेन्द्र लाल सरकार के उपचार से ठीक नहीं हो पाया और होमियोपैथी की दवाओं से ठीक हो गया। डॉ. सरकार के अहंकार को इससे बड़ा धक्का लगा। लेकिन वे जिज्ञासु थे, इसलिए उन्होंने होमियोपैथी के बारे में अध्ययन शुरू किया। उनके ध्यान में आया कि अंग्रेज जो बता रहे हैं कि होमियोपैथी तर्क के आधार पर विकसित विज्ञान नहीं है, लेकिन यह तो तर्क के आधार पर बना विज्ञान है। एक वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति है। तब उन्होंने ब्रिटिश मेडिसिन एसोसिएशन की एक सभा में होमियोपैथी की अभ्यासपूर्ण प्रस्तुति की। इसके बाद अंग्रेजों को इतना गुस्सा आया कि डॉ. सरकार को ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन से बहिष्कृत कर दिया गया। उनके साथ जो व्यवहार हुआ, उससे उन्हें यह सीख मिली कि अंग्रेज हमें विज्ञान का अच्छी प्रकार से ज्ञान नहीं होने देंगे। वे कुछ बातें अपने हाथ में ही रखेंगे। तब डॉ. सरकार ने एक संकल्प किया कि 'मैं भारत में भारतीय लोगों के द्वारा निर्मित भारतीय लोगों को विज्ञान में आगे बढ़ाने वाली विज्ञान संस्था का निर्माण करूंगा'। 1868 में उन्होंने इस प्रकार का संकल्प लिया। 1876 में यह संस्था प्रारंभ हुई जो अपने देश की पहली राष्ट्रीय विज्ञान संस्था है, नाम है 'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस'। यह संस्था कोलकाता में स्थापित हुई। भारत की विज्ञान क्षेत्र की पहली पीढ़ी जगदीश चंद्र बसु, प्रफुल्ल चंद्र राय, आशुतोष मुखर्जी आदि ये सारे विज्ञान क्षेत्र के अग्रणी लोग इसी संस्था से विज्ञान पढ़कर निकले। जगदीश चंद्र बसु 1884 में इंग्लैंड से भौतिक विज्ञान की उच्च शिक्षा लेकर भारत लौटे थे। उस समय यहां विज्ञान के क्षेत्र में पढ़ाना ही एकमात्र काम होता था। लेकिन अंग्रेजों ने उनका भौतिक विज्ञान के अध्यापक का

आंचलिक मोर्चे

दक्षिण का सिपाही आंदोलन

1801 में कर्नाटक पर ईस्ट इंडिया कंपनी के कब्जे के तत्काल बाद चंद्रगिरि व चित्तूर के किलेदारों ने सिर उठाया, जिन्हें दबाना अंग्रेजों के लिए असंभव था। 1803 में चित्तूर में अंग्रेजों की बड़ी सेना क्रांतिकारियों से भिड़ी, पर उसे सफलता नहीं मिली। 1805 में किलेदारों की सेना ने पेड्डानाइडी किले पर कब्जा कर लिया। कंपनी की सेना में बड़ी संख्या में हिंदुस्तानी सैनिक थे, जिनके साथ भेदभाव होता था। उनका वेतन कम था और युद्ध में मारे जाने पर उनके परिवारों को भी कुछ नहीं मिलता था। उनकी जगह ऊंचे ओहदों पर गोरों को रखा जाने लगा। देसी सैनिकों की वर्दी, केश कर्तन आदि भी अंग्रेज अधिकारी तय करने लगे। परेड के दौरान कोई सैनिक तिलक नहीं लगा सकता था। इससे उन्हें लगा कि अंग्रेज उनका धर्म बिगाड़ कर उन्हें ईसाई बना रहे हैं। इस कारण वेल्लोर, मैसूर के नंदी दुर्ग व पल्लमकोटा और हैदराबाद सहित कई जगहों पर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ बिगुल फूंक दिया।

दीवान जगबंधु

ईस्ट इंडिया कंपनी को दी मात

1751 में ओडिशा पर कब्जे के बाद मराठों ने स्थानीय राजाओं के सैनिकों को पुलिस का काम दिया और उन्हें सेवाओं के बदले जमीन दीं, जिस पर कर नहीं लगता था। लेकिन कटक पर कब्जे के बाद कंपनी ने इन सिपाहियों की नौकरियां खत्म कर उनकी जमीनें कलकत्ता के अपने वफादार जमींदारों को बेच दीं। इससे 1816 तक 6,000 से अधिक सिपाहियों के परिवार सड़क पर आ गए। अंग्रेजों ने 1805 में खुर्दा के राजा मुकुंद देव से जागीर छीन कर भारी कर थोपा तो उनके दीवान जगबंधु ने असंतुष्ट सिपाहियों और जागीरदारों को एकत्र किया। उन्होंने मार्च 1817 में बानपुर के थाने व सरकारी ठिकानों पर हमला कर कंपनी के सौ से अधिक सैनिकों को मार कर बड़ा खजाना लूटा। खुर्दा व पुरी में कंपनी की सेना को हराया। पर पुरी में बड़े फौजी दस्ते और तोपों की भीषण गोलाबारी से क्रांतिकारियों को हटना पड़ा। जगबंधु के लगातार हमलों से परेशान होकर 1821 में कंपनी ने बकाया कर वसूली व जागीरों की बिक्री बंद कर दी।

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

इफको नैनो यूरिया (तरल)

विश्व का पहला नैनो उर्वरक

फसल उपज बढ़ाए

किसान की लागत करे कम

पर्यावरण प्रदूषण रोकने में सहायक

मृदा की पोषण गुणवत्ता बढ़ाए

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

जब से यह दुनिया बनी, किसी भी जगह पर, किसी भी साल में, किसी भी नस्ल में या किसी भी कौम में इतनी ताकत और हिम्मत नहीं रही कि अंग्रेजों को इतनी कड़ी टक्कर मिली हो जितनी यहां दी गई। ऐसा लोहा कही नहीं बजा जितना 1857 में भारत में बजा है।

–विलियम हार्वर्ड रसेल, युद्ध संवाददाता

(माई डायरी इन इंडिया)

वारेन हेस्टिंग्स भयभीत होकर 21 अगस्त को जनाना वेष में पालकी में छुपकर चुनार भाग गया। और पूरे बनारस में जनता बोल उठी–

घोड़े पर हौदा, हाथी पर जीन
दुम दबाकर भागा वारेन हेस्टिंग।

बनारस क्रांति के समय अंग्रेज इतने भयभीत हो चुके थे कि हेस्टिंग की पत्नी इसके बारे में सुनकर बीमार पड़ गई।

हम दिन चार रहें न रहें

सैनिक क्रांति

ब्रिटिश सरकार ने 10 मई, 1857 को मेरठ मे हुई क्रान्तिकारी घटनाओं में पुलिस की भूमिका की जांच के लिए मेजर विलियम्स की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की। गवाहियों के विवेचन से पता चलता है कि 10 मई, 1857 को मेरठ में जो हुआ वह अचानक हुआ विद्रोह नहीं अपितु स्वतंत्रता संघर्ष की पटकथा का भाग था। मेरठ के कमिश्नर एफ0 विलियम द्वारा नॉर्थ–वैस्टर्न प्रान्त (आधुनिक उत्तर प्रदेश) सरकार के सचिव को भेजी गई रिपोर्ट के अनुसार मेरठ सैनिक छावनी में 'चर्बी वाले कारतूस और हड्डियों के चूर्ण वाले आटे की बात' बड़ी सावधानी पूर्वक फैलाई गई थी। रिपोर्ट में अयोध्या से आये एक साधु की संदिग्ध भूमिका की ओर भी इशारा था। विद्रोही सैनिक, मेरठ पुलिस तथा जनता और आस–पास के ग्रामीण इस साधु के सम्पर्क में थे। मेरठ के आर्य समाजी, इतिहासज्ञ एवं स्वतन्त्रता सेनानी आचार्य दीपांकर के अनुसार यह साधु स्वयं दयानन्द जी थे।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

JINDAL STEEL & POWER

TOUGHEST TERRAINS
DESERVE THE TOUGHEST PLATES

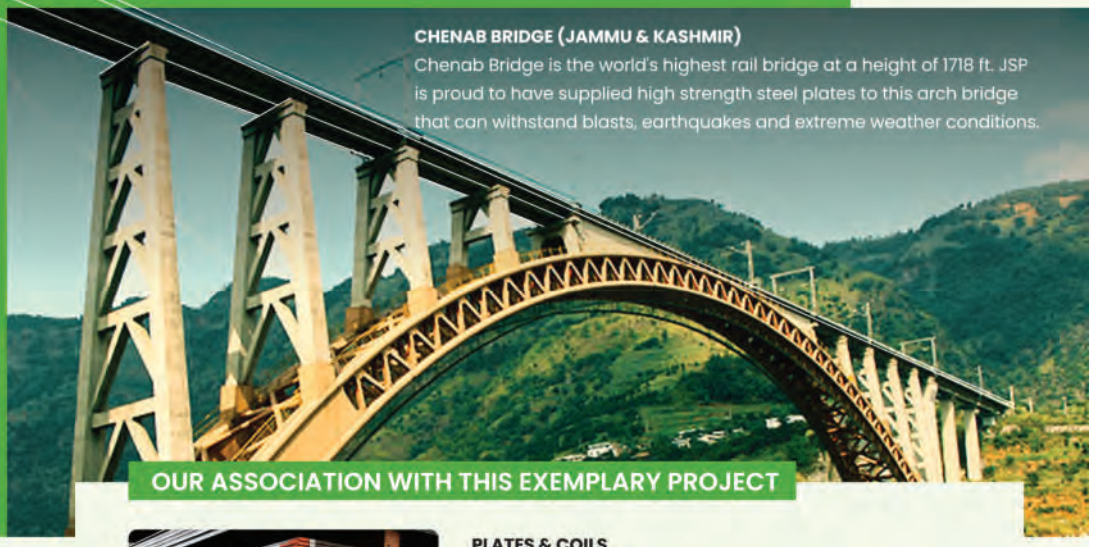

CHENAB BRIDGE (JAMMU & KASHMIR)

Chenab Bridge is the world's highest rail bridge at a height of 1718 ft. JSP is proud to have supplied high strength steel plates to this arch bridge that can withstand blasts, earthquakes and extreme weather conditions.

OUR ASSOCIATION WITH THIS EXEMPLARY PROJECT

THICKNESS 5MM - 150MM, UP TO 5 METRES WIDE

PLATES & COILS

JSP's high strength E410 CuC plates have been extensively used in the construction of Chenab Bridge and similar bridges in extreme terrains. These are high tensile plates that offer corrosion resistance.

SPECIALITY OF OUR PLATES & COILS

- HIGHER STRENGTH
- HIGH CORROSION RESISTANCE
- CUSTOMIZED AND CONTROLLED CHEMISTRY
- SUPERIOR WELDABILITY
- WIDE PRODUCT RANGE

INNOVATIVE AND SUPERLATIVE PRODUCTS FROM JSP ARE REVOLUTIONIZING BRIDGE INFRASTRUCTURE.

A PRODUCT OF JINDAL STEEL & POWER | info@jindalsteel.com | www.jindalsteelpower.com | Toll Free Number - 1800 208 2008

आंचलिक मोर्चे

आक्रोशित भीलों का गुस्सा फूटा

भील उत्तर भारत में विंध्याचल से लेकर मध्य भारत और दक्षिण में सह्याद्रि अंचल तक फैले हुए थे। शोषण से आक्रोशित भीलों ने 1817 में खानदेश में क्रांति शुरू की। 1818 में तीसरे मराठा युद्ध में हार के बाद जब खानदेश पर अंग्रेजों का कब्जा हुआ तो भीलों का गुस्सा उन पर फूट पड़ा। अंग्रेजों ने इनका दमन करने के साथ उन्हें पुलिस में भर्ती करने का लालच दिया। कुछ हद तक वे सफल भी रहे, पर अधिकांश भील नहीं माने। 1819 में उनका आंदोलन तेज हुआ, जो बढ़ता गया। इस दौरान जो भील पकड़ा जाता, उसे फांसी पर चढ़ा दिया जाता। इस तरह अनगिनत भील क्रांतिकारी बलिदान हुए। उनकी क्रांति 1831 तक चली, जिसमें अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों से गुस्साए आम लोगों ने भी उनका साथ दिया। बाद के वर्षों में टंट्या भील (टंट्या मामा) 1878-1889 के बीच सक्रिय वनवासी जननायक हुए। उन्हें भारतीय 'रॉबिन हुड' भी कहा जाता है।

आवेदन स्वीकृत नहीं किया कहा गया, भारत के लोगों में तर्कपूर्ण विचार की क्षमता नहीं है। बसु इस अन्याय के विरोध में खड़े हुए। उन्होंने भौतिक विज्ञान पढ़ाना शुरू किया। उनका यह सत्याग्रह 3 साल तक चला। उन्होंने 3 साल बिना वेतन भौतिक विज्ञान पढ़ाया। अंग्रेजों ने भारत में शोध कार्य को दबा कर रखा था। जगदीश चंद्र बसु ने विचार किया कि मैं देश में अनुसंधान विज्ञान प्रारंभ करूंगा। संसाधन नहीं थे, परंतु एक संकल्प था। उन्होंने 1894 में प्रयोगशाला स्थापित की। सूक्ष्म तरंगों का निर्माण, उसकी निर्मिति प्रयोग के द्वारा की। जो यूरोप का व्यक्ति नहीं कर सका, जो एक पिछड़ा हुआ, तर्कपूर्ण विचार नहीं कर सका, ऐसा एक भारतीय व्यक्ति कर पाया। 1895 में उन्होंने अंग्रेजों को चुनौती दी और सिद्ध कर दिखाया कि ये मैं कर सकता हूं। यह एक लड़ाई ही थी। केवल रास्ते पर उतर कर इंकलाब जिंदाबाद का नारा देते हुए गोली खाना, लाठी खाना और कारावास जाना ही संघर्ष नहीं होता।

रसायन औषधि क्षेत्र में कदम : इसके साथ ही उनके बाद आए प्रफुल्ल चंद्र राय। वे भी इंग्लैंड से रसायन विज्ञान में डॉक्टरेट करके आये। आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय ने स्वदेशी उद्योग प्रारंभ किया। उन्होंने बंगाल फार्मास्यूटिकल नाम से देश का पहला रसायन औषधि निर्माण उद्योग शुरू किया। साथ ही उन्होंने 1902 में 'द हिस्ट्री ऑफ हिन्दू केमिस्ट्री' नामक ग्रंथ लिखा। यह विश्व के लिए एक बहुत बड़ी प्रस्तुति थी। इससे विश्व की आंखें खुल गयीं कि भारत में इतने प्राचीन काल से विज्ञान स्थापित है। 'नेचर' नाम की विज्ञान की विश्व की प्रतिष्ठित पत्रिका ने 'द हिस्ट्री ऑफ हिन्दू केमिस्ट्री' के अध्याय पत्रिका में प्रकाशित किये। वे रसायन विज्ञान का उपयोग क्रांतिकारियों के लिए शस्त्र बनाने, बम बनाने इत्यादि का प्रशिक्षण देने के लिए करते थे। आगे चलकर आशुतोष मुखर्जी

सावरकर बंधु

सृजनशील स्वतंत्रता सेनानी

सावरकर बंधु तीन भाई थे- गणेश दामोदर सावरकर, विनायक दामोदर सावरकर और नारायण दामोदर सावरकर। ये 'अभिनव भारत' संगठन चलाते थे, जिसकी स्थापना बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर ने की थी। अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध भारत की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले विनायक दामोदर सावरकर 'वीर सावरकर' के नाम से विख्यात थे। वे न केवल एक क्रांतिकारी, बल्कि भाषाविद्, कवि, दृढ़, राजनेता, समर्पित समाज सुधारक, दार्शनिक, द्रष्टा, कवि, इतिहासकार और ओजस्वी वक्ता भी थे। वीर सावरकर पहले कवि थे, जिसने कलम-कागज के बिना जेल की दीवारों पर पत्थर के टुकड़ों से कवितायें लिखीं। उन्होंने दस हजार से भी अधिक पंक्तियों को प्राचीन वैदिक साधना के अनुरूप वर्षों स्मृति में सुरक्षित रखा, जब तक वह किसी न किसी तरह देशवासियों तक नहीं पहुच गई। उन्होंने ही सबसे पहले 1857 के संघर्ष को स्वतंत्रता का युद्ध कहा और इस पर प्रामाणिक पुस्तक भी लिखी।

चाफेकर बंधु

अपमान का बदला

चाफेकर बन्धु के रूप में 'दामोदर हरि चाफेकर', 'बालकृष्ण चाफेकर' और 'वासुदेव चाफेकर' भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध विभूति हैं। तीनों भाई बाल गंगाधर तिलक से बहुत प्रभावित थे। बालकृष्ण तथा दामोदर चाफेकर ने जून 1897 में महारानी विक्टोरिया के 'हीरक जयन्ती' समारोह के अवसर पर दो ब्रिटिश अधिकारियों चार्ल्स रैंड और ले. एम्हर्स्ट की हत्या कर दी थी। रैंड को गोली मारने के बाद दामोदर को पुणे की यरवदा जेल भेजा गया। रैंड ने पुणे के कई परिवारों को अपमानित किया था। जेल में दामोदर की मुलाकात तिलक से हुई। तीसरे भाई वासुदेव चाफेकर ने गणेश शंकर द्रविड़ की हत्या की थी, जिसने दामोदर और बालकृष्ण को गिरफ्तार कराया था। दामोदर को 18 अप्रैल, 1899, बालकृष्ण को 12 मई, 1899, जबकि वासुदेव हरि चाफेकर को 8 मई, 1899 को फांसी दी गई। तीनों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया और सदा के लिए अमर हो गये।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

75 वें स्वतंत्रता दिवस

पर आप सभी देश वासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं

विजय लक्ष्मी पालीवाल

समाज सुधार में किये गए प्रयास

1. महिला सशक्तिकरण व आत्म निर्भर बनाने के लिए राजस्थान, मध्यप्रदेश, उतर प्रदेश, हरियाणा इत्यादि राज्यों में सामाजिक कुरितियों जैसे पर्दा प्रथा, यौन हिंसा, भ्रूण हत्या, महिला के प्रति धरेलू हिंसा, महिला अशिक्षा, बाल विवाह हटाने के लिए जागरूकता अभियान।
2. मेवात क्षेत्र में प्राचिन व एतिहासिक मंदिरों व धर्म स्थलों की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करने हेतु विश्व हिंदू परिषद् व बजरंग दल के तत्वाधान में दो वर्षों से मेवात दर्शन यात्रा का भव्य आयोजन।
3. गौ संर्वधन व रक्षा हेतू विभिन्न गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने की योजनाओं पर कार्य।
4. पर्यावरण व मानव शरीर के स्वास्थ के लिए उपयोगी वृक्षों के प्रति जागरूकता लाना व प्राकृतिक चिकित्सा अभियान।
5. गरीब व मध्यमवर्गी छात्राओं को खेल प्रशिक्षण व स्वरोजगार से स्वाबलंबी बनाने के लिए जागरूकता लाना।

विजय लक्ष्मी पालीवाल, समाज सुधारक, पानीपत, हरियाणा

आंचलिक मोर्चे

असम में वनवासी क्रांति

असम के जयंतिया पहाड़ी क्षेत्र में सितांग वनवासियों पर अंग्रेजों ने गृह कर थोप दिया था, जबकि वे खुद को स्वतंत्र मानते थे। समुदाय के विरोध के बाद अंग्रेजों ने उन पर दूसरे कर भी थोप दिए। जनवरी 1862 में इस समुदाय ने मुख्य थाने पर हमला कर उसे जला दिया और ब्रिटिश सेना को घेर लिया। उनके शिविर उखाड़ दिए। उनके आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने बड़ी सेना भेजी, पर सफलता नहीं मिली। इसके बाद सरकार ने गृह कर तो नहीं हटाया, पर समुदाय को दूसरी कई सुविधाएं देनी पड़ीं। उधर, असम के नौगांव क्षेत्र के फूलागुड़ी वनवासियों को अफीम की खेती मुनाफा देखकर अंग्रेजों ने इसे हथियाना चाहा। किसानों को अफीम की खेती करने से रोका, उन्हें डराया-धमकाया और केवल अंग्रेजों के लिए खेती करने को कहा। इसके खिलाफ फूलागुड़ी किसान संगठित हुए। अंग्रेजों ने पुलिस और सेना भेजकर निहत्थे किसानों के आंदोलन को कुचल दिया। 1890 के के आसपास असम घाटी में भूमि राजस्व बहुत बढ़ा दिया गया। इसके विरोध में कामरूप, पाथरूघाट आदि के किसानों ने भी आंदोलन किया, लेकिन अंग्रेजों ने इसे भी दबा दिया।

ने विज्ञान क्षेत्र में विश्व में एक बहुत बड़ा कीर्तिमान स्थापित किया। उस समय कोलकाता में ही कार्यरत एक भारतीय वैज्ञानिक थे, चंद्रशेखर वेंकटरमन। वे कोलकाता में ब्रिटिश शासन में नौकरी करते थे लेकिन भौतिकी में रुचि थी। आशुतोष मुखर्जी उन्हें 'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस' में लाए। इसी संस्था के एक सदस्य, रमन ने भारत का एकमात्र विज्ञान का नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।

'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस' वह उर्वरा भूमि थी जहां से देशभक्त वैज्ञानिक तैयार हुए। प्रमथनाथ बोस ऐसे ही भूगर्भ विज्ञानी थे। उन्होंने जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया में बहुत अच्छा काम किया लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें इस संस्था का कभी भी प्रमुख नहीं बनाया। इसके विरोध में प्रमथनाथ बोस ने वहां से त्यागपत्र दे दिया। अपने देश में इस्पात उद्योग खड़ा करने वाले जमशेदजी टाटा के नाम से जहां आज जमशेदपुर या टाटानगर है, वह स्थान भी प्रमथनाथ बोस ने ही बताया था। 1907 में वहां देश का पहला इस्पात उद्योग खड़ा किया गया था। इस प्रकार से अपने देश में स्वदेशी ज्ञान, स्वदेशी विज्ञान, स्वदेशी उद्योग आदि को साधन बनाकर अंग्रेजों को चुनौती देना, प्रत्याघात करना, यह सब विज्ञान जगत के लोगों ने किया। 1916 में जब पंडित मदनमोहन मालवीय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रारंभ किया तब उसके उद्घाटन के निमित्त उन्होंने आचार्य जगदीश चंद्र बसु को आमंत्रित किया। स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव वर्ष के निमित्त अपने देश के स्वातंत्र्य योद्धाओं का स्मरण करते वक्त इन वैज्ञानिकों का भी स्मरण करना हम सभी का दायित्व है। (लेखक विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री हैं)

आंचलिक मोर्चे

अन्याय के विरुद्ध 19 साल संघर्ष

मद्रास प्रेसीडेंसी में गोदावरी के पहाड़ी अंचल रम्पा के राजा ने अपनी रियासत सरदारों (मुट्ठादार) में बांट रखी थी, जो क्षेत्र का लगान वसूलते थे। 1835 में राजा की मृत्यु के बाद उसकी बेटी ने मनसब की जिम्मेदारी संभाली। राजा का एक जारज पुत्र भी था, जिसने सारे अधिकार प्राप्त कर लिए। रम्पा के मुट्टेदारों ने इसका विरोध किया। वे चारों तरफ से पिस रहे थे। अदालती चक्कर में उनकी जमीन-जायदाद भी हथियाई जा रही थी। इससे उनका गुस्सा भड़का और मार्च 1879 को चौड़ावरम में पुलिस छावनियों पर सशस्त्र हमला कर उन्हें घेर लिया। सेना आई, पर लेकिन वे सीधे मुकाबला न कर छापामार युद्ध लड़ते रहे। अंत में क्रांतिकारियों के नेता जंगम सम्बया को पकड़ लिए गए, पर क्रांति जारी रही। 1879 के अंत तक अधिकांश क्रांतिकारी गिरफ्तार कर लिए गए। फरवरी 1880 में मुख्य नेता चंद्रैय्या के बलिदान के बाद क्रांति मंद पड़ गई। इस तरह रम्पा क्रांति 1861 से 1880 तक चली।

आंचलिक मोर्चे

उत्तर-पूर्वी राज्यों का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को खड़ा करने में पूर्वी तथा पूर्वोत्तर राज्यों के वनवासियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। समुदाय द्वारा चलाई गई सामाजिक स्वतंत्रता की लड़ाई ने गुलाम भारत में राजनैतिक स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरित किया। स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष एक जन संघर्ष था जिसमें पूर्वोत्तर के जन सामान्य की भागीदारी भी अहम थी। मनिराम देवान जिन्हें 1857 के संग्राम के दौरान अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध साजिश रचने के आरोप में फांसी दे दी गई थी। ऐसे ही थे किआंग नंगबाह, जिन्हें 30 दिसंबर, 1862 को पश्चिम जयंतिया हिल्स जिले स्थित गॉलवे शहर में इवामुसियांग में सार्वजनिक रूप से ब्रिटिश सरकार ने फांसी दी। रानी मां गाईदिन्ल्यु का योगदान भला कौन भूल सकता है। उन्होंने ना केवल अग्रेजों के विरुद्ध बल्कि ईसाई मिशनरियों के हर प्रपंच को ध्वस्त किया। उन्होंने नागा प्रदेश में जनजातीय समाज को संगठित करके उसे एक स्वर प्रदान किया। रानी मां को नागालैंड की रानी लक्ष्मीबाई के रूप में जाना जाता है।

पर्यटन एवं आतिथ्य में सर्वाधिक विश्वसनीय तथा भरोसेमंद ब्रांड

आज़ादी का अमृत महोत्सव

होटल व खानपान | कांफ्रेंस व सम्मेलन | शुल्क मुक्त खरीदारी
एयर टिकटिंग | यात्रा व परिवाहन | कार्गो हैंडलिंग
आतिथ्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण | समारोह प्रबंधन | प्रचार एवं परामर्श
पर्यटन अवसंरचना परियोजनाएं | ध्वनि व प्रकाश प्रदर्शन | प्रिंट प्रोडक्शन

भारत पर्यटन विकास निगम लि.
India Tourism Development Corporation Ltd.

(फास्टेस्ट ग्रोइंग मिनी-रत्ना पीएसयू 2015 - डीएसआईजे)

पंजीकृत कार्यालय : स्कोप कॉम्प्लेक्स, कोर 8, छठा तल, 7 लोदी रोड, नई दिल्ली–110003 भारत
दूरभाष : +91-11-24360303 फैक्स : +91-11-24360233 ई–मेल : sales@itdc.co.in वेबसाइट : www.itdc.co.in

हमारी मोबाइल ऐप, प्ले स्टोर (एंड्रॉयड) अथवा ऐप स्टोर (आईओएस) से डाउनलोड करें

आर.एन.आई. पंजीकृत संख्या 32543/1977
DL (DS)-34/MP/2022-23-24
15-21 अगस्त, 2022 (13 अगस्त को प्रकाशित, पृष्ठ-100)
पाञ्चजन्य साप्ताहिक
दिल्ली पोस्टल क्र.डी.एल.(सी.)-01/1102/2021-23 एल.पी.सी. दिल्ली आर.एम.एस. दिल्ली-06
लाइसेंस क्र.यू. (सी.)-87/2021-23 अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति 13/15-8-2022